

❀ श्रीवीतरागाय नम ❀

श्रीछत्तीसबोल संग्रह

द्वितीय भाग

संग्रह कर्त्ता—

धर्मचन्दजी तत्पुत्र भैरोदान
तत्पुत्र जेठमल सेठिया,

मोहल्ला मरोटियोंकी गवाड़,
बीकानेर, राजपुताना (देश मारवाड) ।

Bhairodan Sethia,
MOHALLA MAROTIAN
Bikaner Rajputana
MARWAR J, B RY

कीमत अमोल (अमूल्य)
प्रथमावृत्ति १००० प्रत

वीर संवत् २४४८
विक्रम संवत् १९७९
ई० १९२२

PRINTED AT THE
"CHITRAGUPTA PRESS,"
BY RAMSAHAI VARMA
147, Cotton Street, Calcutta

॥ अनुक्रमणिका ॥

पृष्ठ (पन्ना)

पृष्ठ (पत्र)

पृष्ठ (पन्ना)



॥ पाठन्तर ॥

॥ अनुक्रमणिका ॥



जहा स्याई लिख्यो छै सो अशुद्ध है वहा स्याई कहना पाने ९६, ९७, अम्बाडी सहित हाथी ढकीज जावे जितनी स्याई (स्यॉही) कहीजे

पत्र ९६, पक्ती १६-१७, पत्र ९७, पक्ती २४,

असमाधीया २० दोष—असमाधि करणने कहाजे जैसे आदमीने वारं वार मांदगी आयासु वसके शरीरका, बल पराक्रमको नाश करे इण

पथ्या पथ्यके विषय किताबके शेषके पन्ना में ।



॥ श्री ॥

॥ शुद्धिपत्र ॥

हेडींग छोड़कर पंक्ति (ओली) गिणीजैं।



कीतनेक भूल उपयोगमें आई सो
अनुक्रमणिकामे जणायदि है सो
शुद्धिपत्रमे नहीं लिखी है ।



पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
झ	१५	ढफके	डंफके
ट	१	उपना	उतना
थ	४	मुंझावे	मुर्झावे
ल	१	सुघना	सूंघना
व	६	काणोंसे	कानोंसे
श	३	मिश्च	मिश्र

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
ज्ञ	१३	सभ्यक्त	सम्यक्त
ज्ञा	१७	च्यूं	ज्यु (ज्युं)
ड्डे	७	घणो	घणो
ड्डै	७ बाद हेडींगमें	छतीसा	छतीसी
ड्डो	११	जाणो	जाण
धे	३	मास	मांस
ने	४	आगे	आगो
फे	२	पानीमें	पाणीमें
बे	२	बीज	बीज
ह्वे	१५	उपाड़ाने	उपाडीने
त्रे	१२	(विसोहीकरणेणं)	(विसोहीकरणेणं)
जु	४	मडिक्कमामि	पडिक्कमामि
ड्डु	११	मांटे	माटे
ड्ढु	१५	नामधयं	नामधेय
मु	३	गोचरादिकमे	गोचारादिकमें
८	७	बोले	दूजे बोले

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२	३	कोध	क्रोध
१३	५	उछम	उद्यम
१४	४	१०८	१०६
१५	६	दीजै	कीजै
१६	६	दशमा	१२ में
१६	७	वारमा देवलोक	नव नवग्रीवेक
१६	६	मुक्ति	५ अनुतर विमाण
२३	५	लीलड़में	लीलाड़में
२३	७	पराय	पराये
२४	१६	नोचो	नीचो
४०	१६-१७	कुंड	कांड
५४	७	मव्य जीवने,	भव्य जीवने
५८	१२	दुसरेने वेंदावा,	दुसरो वेचावा (वेंदावां) समर्थ नही
६०	६	जाने	जाणे
६३	८	धम	धर्म

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६	७	त्त्रीने	वाणीयेरे (वैश्यरे)
८	१	जवारी	जुवारी
६६	४	वीसरो	विपरो
७३	५	नारेलरो	नाचते भोपेरो
७३	१३	घर्म	धर्म
७५	२	ठवा	ठाव
७७	८	विध्न	विघ्न
७७	११	उठा भी	उठाय
७६	१६	धातर्क	धातकी
८०	३	पुष्करार्थ	पुष्करार्द्ध
८०	५	"	"
८०	१०	शिष्यनी	नये दिच्तिरी
८२	८	दांनवंत	दानवंत
८७	११	पुत्रक	पुत्रका
६०	५	अंधक विश्नु	अंधक विष्णु
६०	८	गजसूकुमारजी	

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९६	१६–१७	स्पाई	स्याई (स्याही)
९७	१, २, ४	”	”
१०२	४	पुरखारो	पुरषारो
१०२	५	गधामें	वृषभ (वलदमें)
१०२	८	५००	२०००
१०२	९	दश	दश लाख
११३	१२	तमोगुण	सतोगुण
११६	२	नडी	नाडी
११६	१७	माठरे	माठेरे
१२२	१६	उत्तति	उत्पत्ति
१२७	५	संभोग	संमोग
१३७	११	वतलावो	वतलायो
१३८	१३	अच्युल	अच्युत
१३९	२	द्वोष	द्वेप
१४१	५	रत्नावनी	रत्नावली
१४३	१	श्रीनन्दजी	श्रीनन्दीजी

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४७	७	र्थासा	पर्यासा
१४८	७	जीवने	जीवमें
१४६	८	सम्पक्त	सम्यक्त
१५२	५	उधम	उद्यम
१५२	१३	वक्तना	वक्ता
१५८	३	गुणगणा	गुणठाणा
१५६	१७	संसर	संसार
१६२	२	छडे	छेड़े
१६२	८	देशनें	देशसे
१६५	७	सम्पक्त	सम्यक्त
१६६	१३	सम्पक्ति	सम्यक्ति
१६७	३	प्रमाद्यिो	प्रमादि
१७६	१३	संनिग्थ	सनिग्ध
१७६	१४	हले चले	हाले चालें
१७७	१४	विन्यवंन	विनयवंत
१८३	११	शुश्रना	शुश्रपा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८६	५	प्रशिंनिय	प्रशंसनिय
१८८	१	सम्यत्वी	सम्यकत्वी (समकति)
१८६	१०	सचेत	सचित
१६१	५	निरसइ	निस्सरइ
१६३	१५	सोगनल	सोगमल
१६३	८	अक्रोस	आक्रोश
१६४	१३	समाले	संभाले
१६६	१२	मल	जलमैल
१६६	१५	निषेध	निसीया
२०३	१३	सत्त	सत्त्व
२०४	४	सत्य	सत्त्व
२०४	५	पृथ्वीपांणी तेईसगी आगतमें २३	पृथ्वीपाणीरी आगतमें २३
२०४	७	द्रव्यथकी	द्रव्यमें
२०४	८	क्षेत्रथकी	क्षेत्रमे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०४	१०	कालथकी	कालमें
२०४	११	भावथकी	भावमें
२०४	११	पुनः द्रव्यथकी,	द्रव्यथकी
२०६	१४	यर्थात्	अर्थात्
२०७	६	विनयवानका	विनयवानकी
२०८	११	आवो	आवे
२१६	६	अदना दान थी	अदत्तादान थी
२१६	८	चक्षुधेनिद्रय	चक्षुइन्द्रिय
२१७	४	भरण	मरण
२१७	१२	मनसमाधेणिया	मनसमाधारणीया
२१७	१४	कायसमाधरणिया	कायसमाधारणिया
२१८	१६	चितावना	चिंतवना
२२०	६	असाभ्कई	असभ्काई
२२०	१७	सपन्न	संपन्न
२२१	१४	चरित्रयुक्त	चारित्रयुक्त
२२८	८	प्रमाणसे	प्रणामसे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२६	१	वांघे	वांधे
२३०	१४	गीलाणकी	गीलाणीकी
२३५	४	हणो	हणे
२३५	८	धणा	घणा
२४६	५	हीते	होते
२४८	१६	शत्र	शत्रु
२५२	३	साघु	साधु
२५२	६	लकड	लक्कड
२५३	१	झोझ	जहाज (Steamer)
२५४	१	वीजने	बिजेने
२५४	७	कुणनी	कुलनी
२५५	११	भरण	मरण
२५५	१४	लीघु	लीधुं
२५६	१३	चड़ते	चढ़ते
२५८	७	राखे	राखकर
२५९	११	कपटपणो	कपटपणे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६२	३	जगृत	जागृत
२७०	४	चलीय	चलीये
२८२	५	वड	वडे
२८५	५	प्रघान	प्रधान
३१०		स्वोटा	खोटा
३१२	हेडींग	चाल	वोल
३७८	११	गुणआशि	गुणयाशिये



॥ श्रीगौतमाय नमः ॥

सूचना ।

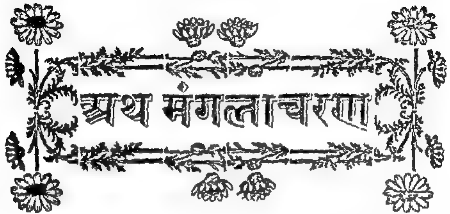
यह पुस्तक यत्नसे रक्खे । शुद्धिपत्रसे अशुद्धि निकालकर आदिसे अन्त तकवाचे।

इसका प्रथम भाग छपाहुवा वंटगया है, त्यार नहीं है, कितनेक बोल प्रथम भागका इसमें छपा है ।

उघाड़े मूख तथा चिरागके चानणेमें नहीं वाचै ; पद, अत्तर, ओछो, अधिको, आगो, पाछो, तथा कानो, मात, मिंडी, ह्रस्व, दीर्घ, अशुद्ध, टूटी-भाषामें लिख्यो हुयो विद्वान कृपाकर शुधार लेवे संग्रह-कर्ताकी यही नम्र विनती है ।

॥ श्री ॥

॥ श्रीवीतरागाय नम ॥



नाभेया जितवासुपूज्य सुविधिश्रेयांसपद्म-
प्रभात् श्री शांतिशशी संभवार सुमती
न्नेमिनमिशीतलं धर्मपार्श्वसुपार्श्व वीर विमला-
नतांस्तथासुव्रतं कुंथुमल्लयभिनंदनौनुत जिना-
नेतांश्चतुर्विंशतिं ।

॥ दोहा ॥

आदि देव अरिहंतजी, भवभंजन भगवन्त ।
केवल कमला धारजे, पायो भवजल अन्त ॥१॥

तास चरणमें शिर धरी, प्रणमुं पर्म उल्लास ।
गुरु गिरवा ज्ञान निधि,सफल करो मम आस ॥२॥
कई ग्रंथ कई नीति में, कई सूत्र अर्थमें जोय ।
कई सज्जनसे धारिया, बोल छत्तीस होय ॥३॥
स्थिर चित्त विवेकसे, वांचे तो फल होय ।
नहीं पूर्णता यहां की, दोष न दीजो कोय ॥४॥

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

॥अथ मतीज्ञानके २८ भेद लिखते हैं॥



(१) उत्पातीया बुद्धि—तत्काल बात उपजे (२) विनया बुद्धि—विनयसे आवे (३) कम्मया बुद्धि—काम करते २ सुधरे (४) प्रणामिया बुद्धि—वय प्रमाणे बुद्धि होवे यह चार बुद्धि— और श्रोतेन्द्रीकी अवग्रह सो शब्दको ग्रहण करना, श्रोतेन्द्रीकी इहा सो सुणे हुये शब्दका ‸ , श्रोतेन्द्रीकी अवाय सो सुणे शब्दका

निश्चय करना, श्रोतेन्द्रीकी धारणा सो वहुतकाल तक धार याद रखना जैसे १ श्रोतेन्द्री पर ४ वोल कहें ऐसे ही २ चक्षुइन्द्रीसे देखनेका, ३ घ्राणेन्द्रीसे सूंघनेका, ४ रसेन्द्रीसे स्वाद लेनेका, ५ स्पर्श इन्द्रीसे स्पर्शका, ६ मनसे विचारका यों ६ पर चार २ वोल कहनेसे ६×४=२४ वोल हुवे, और ४ बुद्धि मिलकर मतीज्ञानके अठावीस भेद हुवे, यह २८ मतिज्ञानके भेद है। इनमेंसे ऐकेक के बारे २ भेद होते हैं, जैसे—अनेक जीव अनेक वाजितरोंके शब्द सुनते है, उनमें मतिज्ञानकी क्षयोपशमतासे १ कोई एक वख्तमें वहुत शब्दोंको ग्रहण करते हैं सो वहु, २ कोई थोड़े शब्द ग्रहण करते हैं सो अवहु, ३ कोई भेद भाव सहित ग्रहण करे सो वहुविध, ४ कोई भेद भाव नहीं समझे या थोड़ा समझे सो अवहुविध, ५ कोई शीघ्र समझ जाय सो क्षिप्र, ६ कोई विलंब (देर) से समझे सो अक्षिप्र, ७

कोई अनुमानसे समझे सो सलिंग, ८ कोई विना अनुमान से समझे सो अलिंग, ९ कोई शंकायुक्त अड्डे सो संदिग्ध, १० कोई शंका-रहित अड्डे सो असंदिग्ध, ११ कोई एकही वस्तमे सब समझ जाय सो ध्रुव और १२ कोई वारंवार जाणनेसे समझे सो अध्रुव; इन १२ भेदोंसे पूर्वोक्त २८ भेदोंको गुणा करनेसे २८×१२=३३६ मतिज्ञानके भेद होते हैं।

॥ श्रुतज्ञानके १४ भेद ॥



१ अक्षर श्रुत—क, ख प्रमुख अक्षर तथा संस्कृत, प्राकृत, हिंदी, इंग्लिश, फारसी आदिक से जाणे सो, २ अनक्षर श्रुत—अक्षर उच्चार विना खांसी, छींक प्रमुखसे ज्ञान होवे सो, ३ सन्नीश्रुत—विचारना, निर्णय करणा, समुचय अर्थ करना, विशेष अर्थ करना, चिंतवना और निश्चय करना यह छत्र बोल सन्नीमें मिलते हैं।

इन छव बोलसे सूत्रधार रचे सो सन्नीश्रुत, ४ असन्नीश्रुत—यह छव बोल रहित होवे तथा भावार्थशून्य, उपयोगशून्य, पूर्वापर आलोच्च निर्णय रहित पढे, पढावे. सुणे सो अशन्नीश्रुत, ५ सम्यक्त्श्रुत, अरिहंतदेवके परुपे, गणधर-देवके गूंथे तथा कम तो दश पूर्वधारीके फरमाये सूत्र सो सम्यक्तश्रुत, दश पूर्वसे कमीज्ञान-वालेका निश्चय नहीं उनके रचे ग्रंथ सम० श्रुत भी होवे और मिथ्याश्रुत भी होवे इसलिये दश पूर्वधारीके कीये हुये ग्रंथ ही सम्यक्तश्रुत है, ६ मिथ्याश्रुत अपनी इच्छासे कल्पित रचे हुये ग्रंथ जिसमे हिंसादिक पंचाश्रवका उपदेश होवे, वेदिक, ज्योतिष, कामशास्त्र इत्यादि मिथ्या-श्रुत, ७ सादिश्रुत—आदिसहित, ८ अनादि-श्रुत—आदिरहित, ९ सपजवश्रुत अन्तसहित, १० अपजवश्रुत—अन्तरहित, १ सआदि, २ अनादि, ३ सपज्जव, ४ अपजव, इन ४ का

खुलाशा द्रव्यसे एक जीवआश्री आदि अन्त सहित पढने बैठा सो पूराकरे, वहुत जीवआश्री आदि अन्त रहित बहुत पढे है और पढेंगे, २ क्षेत्रसे भरत ऐरवर्त आदि—अन्त सहित और महाविदेह आश्री आदि अन्तरहित, ३ कालसे उत्सर्पिणी उवसर्पिणी आश्री आदि अन्त सहित और नोउत्सर्पिणी उवसर्पिणी आश्री आदिअन्त रहित, ४ भावसे तीर्थंकर भाव प्रकाशे सो, आदि अन्त सहित और क्षयोपशम भाव आश्री आदि अन्त रहित, ११ गमिक श्रुत दृष्टिवाद १२ मां अंग, १२ अगमिक श्रुत आचारांगादिक कालिक सूत्र, १३ अंगप्रविठ सूत्र जिनभाषित द्वादशांगीवाणी, १४ अंगवाहिर वारे अंगके वाहिरके सूत्रके दो भेद—१ आवश्यक सामायिकादि छे और २ आवश्यक वितिरिक्त सो कालिक उत्कालिका-

जानना, यह मतीश्रुत ज्ञानका आपशमें

खीरनीर जैसा संयोग है, इन दोनों ज्ञान विना कोई जीव नहीं है, सम्यक दृष्टिके ज्ञानको ज्ञान कहते हैं और मिथ्यादृष्टिके ज्ञानको अ-ज्ञान कहते हैं, उत्कृष्ट मतीश्रुत ज्ञानवाले केवलीकी तरह सर्व द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावकी वात जान सकते हैं, इसलिये श्रुतकेवली कहे हैं। जातिस्मरण ज्ञान भी श्रुत ज्ञानके पेटमें है जातिस्मरणसे ९०० भव पिछले किये हुये जान सकते हैं। जो लगोलग सन्नीके किये हुये तो नर्कके जीव जातिस्मरण ज्ञानसे पूर्वभवकी वात जान सकते है; परंतु देख सकते नहीं हैं; क्योंकि यह परोक्ष ज्ञान है। महावेदनाके अनु-भवसे और परमाधामियोंके कहनेसे जाति-स्मरण ज्ञान हो जाता है।

॥ अवधिज्ञानके ८ भेद ॥



१ भेद—दो तरह अवधी ज्ञान होते हैं, १

भव जन्मसे सो नारकी, देवता और तीर्थंकरको होवे, २ क्षयोपशम करणी करनेसे सो मनुष्य तिर्यंचको होवे, २ विषय सातमी नरकवाले जघन्य आधा कोस उत्कृष्ट एक कोस, छठीवाले जघन्य एक कोस उत्कृष्ट १॥ कोस, पंचमीवाले जघन्य देढ कोस उत्कृष्ट दो कोस, चोथीवाले जघन्य दो कोस उत्कृष्ट २॥ कोस, तीसरीवाले जघन्य २॥ कोस उत्कृष्ट तीन कोस, दूसरीवाले जघन्य ३ कोस उत्कृष्ट ३॥ कोस, और पहली-वाले जघन्य ३॥ कोस, उत्कृष्ट ४ कोस अवधी ज्ञानसे देखते हैं। असुरकुमारदेव जघन्य २५ योजन उत्कृष्ट असंख्याते द्वीप समुद्र, बाकीके नवनीकायदेव और वाणव्यंतरदेव जघन्य २५ योजन उत्कृष्ट संख्याते द्वीप समुद्र, ज्योतिषीदेव जघन्य उत्कृष्ट संख्याते द्वीप समुद्र, ऊपरके सव-देव ऊंचा अपने २ देवलोककी धजातक देखे और तिरछा पहिले दूसरे देवलोकमें पल्यके

फुलचंगेरीके आकार, अनुत्तर विमानके देव कुमारीके कंचुके कांचलीके आकार देखे, मनुष्य तिर्यंच जालीके आकारसे अनेक प्रकारसे देखे, ४ वाह्याभ्यंतर नर्कके जीव और देवताके जीवको आभ्यंतरिक ज्ञान तिर्यंच वाह्य प्रगट ज्ञान और मनुष्य वाह्य अभ्यंतर दोनों होवे, ५ अणुगामी अणाणुगामी, अणुगामी उसे कहते है एक वस्तुसे दूसरी तीसरी यों सर्व अनुक्रमें देखे और सर्व ठिकाणे साथ रहै देख सके, अणाणुगामी जहां उपज्या वहां देखे दूसरे ठिकाणे न देख सके, नारकी देवताके अणुगामी अवधिज्ञान और मनुष्य तिर्यंचके अणुगामी अणाणुगामी दोनुं, ६ देशसे सर्वसे नारकी देवता तिर्यंचको देशसे थोड़ा ज्ञान होय और मनुष्य को देशसे व संपूर्ण दोनों अवधि ज्ञान होय, ७ हाय मान वर्द्धमान अनुठीए हायमान

ओ पोछे कमी होता जाय, वृद्धिमान वृद्धि

ज्यादा होता जाय, अवस्थित उपजा उपना ही घना रहै, नारकी देवको अवस्थित और मनुष्य तिर्यंचको तीन ही तरहका होता है, ८ पडवाइ, अपढ़वाइ; आकर चला जाय सो पढ़वाइ ज्ञान और आकर नहीं जाय सो अपढ़वाइ ज्ञान नर्क देवको अपढ़वाइ और मनुष्य तिर्यंचको पढ़वाइ अपढ़ाइ दोनों अवधि ज्ञान होते हैं।

मन पर्यव ज्ञानके दो भेद।



१ ऋजुमती और २ बिपुलमती मनपर्यव ज्ञानी द्रव्यसे रूपी पदार्थ देख क्षेत्रसे नीचे १ हजार योजन ऊंचा नवसो योजन तिरछा, अढाइ द्वीप ऋजुमतीवाला अढाइ अंगुल कमी देखे तथा खुला खुला नहीं देखे, विपुल-मतीवाला अढाइ द्वीप पूरा देखे और खुला देखे कालसे पल्यके असख्यातमें भाग गये कालकी और आवते कालकी बात देखे, भावसे

सर्वसज्ञीके मनकी बात जाणे, देखे, यह मन-पर्यव ज्ञान मनुष्य सज्ञी कर्मभूमी संख्यात वर्षके आयुष्यवाले पर्याप्ता समदृष्टी संजती अप्रमादी लब्धिवंत इतने गुणयुक्त होवे उन मनुष्यको उपजता हे। दृष्टांत, जैसे—किसीने अपने मनमें घडा धारण किया तो ऋजुमतिवाले तो फक्त घड़ाही देखेगे और विपूल मतिवाले विशेप देख सकते हें कि इसने मृत्तिका (मट्टी) या धातुका घडा घृत या दुग्धादि अर्थ धारण किया वगेरा, ऋजुमतिवाले पडिवाइ हो जाते हें, अर्थात् ज्ञान चला जाता है और विपुलमति मन-पर्यव ज्ञान हुये वाद केवलज्ञान जरूर ही उत्पन्न होता है, अवधी ज्ञानसे मन-पर्यवज्ञानके १ क्षेत्र थोडा है, परन्तु विशुद्धता निर्मलता अधिक है, २ अवधिज्ञान चार ही गतीके जीवोको होता है और मनः-पर्यवज्ञान फक्त मनुष्यगतिमें

 ही होता है, ३ अवधिज्ञान तो अंगुलके

असंख्यातमें भाग क्षेत्र देखे वा अधिक भी होता है और मन पर्यवज्ञान एकही वख्तमें अढाई द्वीप देखे जितना ऊपजता है, ४ और अवधिज्ञानसे भी जो रूपी सुक्ष्म द्रव्य दृष्टि नहीं आवे वो मनःपर्यववाले देख सकते हें यह चार विशेपत्व है, यह देशसे नो इन्द्रि प्रत्यक्ष मतिज्ञानके भेद हुये ।

॥ ५ केवलज्ञान ॥



सर्व द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावको जाने. अपड-वाइ संपूर्ण होता हे। यह ऊपरके गुणयुक्त मनुष्य अवेदी अकपाइ तेरमे गुणठाणवर्त्तिको होता है। यह आये पिछे निश्चय मोक्ष जावे।

इति ज्ञानभेद संपूर्णम् ।

॥ अहिंसा परमो धर्मः ॥

श्री धर्म परीक्षा संक्षेप हितकारण लिखिए छै ।



कोई भलो शिष्य श्री गुरुने पुछे छै, श्री गुरु म्हारो वचन सांभलो, जे संसार मध्ये जितना जीव छै ते सर्व जीवने धर्म एहवो शब्द घणु वाहलो लागे छै, हवे गुरु कहे एह वातनो शुं अचरज तीहारें वले श्री गुरुने शिष्य पुछे हे स्वामी हुं एटले माटे पुछुं छुं के जो सर्व जीव जेहवो धर्म छै तेहवो जानता नथी अने धर्म शब्द तो वाहलो घणु लागे छै, तिहारे श्री गुरु उत्तर दहे छै के जे धर्म छै ते जीवरो स्वरूप छै, जीवरो निज लक्षण छै, ते माटे शब्द पण घणु वाहलो लागे छै, तेहनो दृष्टांत देखाडे छे जिमके नागनो मंत्र कहता नाग घणु खुसी थाय छै अने विषपण पाछु वाले छै ते नागना मंत्र

मध्ये नागनों कुल नामो वखांण छै ते माटें नागनु मन घणो खुसी थाय छे, तिम इण दृष्टांते जीव पण धर्म शब्द सांभल्यां थी खुसी थाय छै, तिवारे फिर शिष्य वोल्योके हे स्वामी संसार मध्ये तो सहुलोग कहे छै के देहथी नीपजे ते धर्म छै अने श्री गुरुजी तमे तो जीवनो निज लक्षण ने धर्म कह्यो छै तेहनो प्रकाश करो, तिहारे श्री गुरु कहे जे जीवने चेतना छै ते जीवनो धर्म छै ते चेतना मध्ये गुण अनंता छै ते मध्ये गुण तीन मुख्य छै तेहना नाम— ज्ञान गुण (१) दर्शन गुण (२) चारित्र गुण (३) ये तीन गुणने आददेइ अनंता गुण छै ते सर्व चेतना धर्म छै ते चेतना धर्म जीवने पासे छै ते जीव निगोद मांहे गयां पण चेतना धर्म टले नही पण ते मध्ये एटलो विशेष छै के धर्म पोताने पासे छै पण विसर गयो छै, ते सभाल तो नथी ; तेहनो दृष्टांत लिखिए छै—

जिम कोइ बालकने बाल अवस्था मध्ये तेने तेहना माता पिताए चिन्तामण रतन ते बालक ने गले बांध्यो ते (बालक) कालांतर मोटो थयो तेने दालिद्र अवस्था आवी छै पण पोताने गले चिन्तामण रतन छै ते जाणतो नथी, तेहने कोई कहे तुझ पासे भली वस्तु छै ते माने नहीं क्युं माने नहीं के ते पुरुषने दालिद्र रेहण हार छै (अंतराय तुटी नहीं) तिण वास्ते माने नहीं ज्युं जीव पण पोताने बहुल संसार ने उदय चेतना धर्म विसर गयो छै वीजो दृष्टांत जे कोईके घरमें भुंय (भवरे) मांहे निधांन छै पण ते जाणतो नथी तेहने कोई एक जाण पुरुष कहे के थारे घर मांहे निधान छै तेहनी दालिद्र दिसा मिटन हार छै ते कह्यो वचन मान्यो, निधांन काढ्यो संतोष ऊपन्यो इम बहु दृष्टांते जीव जिन भाख्यो धर्म जाणे पोतानो धर्म पोताने पास छै चेतना

धर्म टले नहीं, तेवारे वले शिष्य बोल्यो हे स्वामी पोतानी वस्तु पोताने पासे छै विसारी गयो ते सु कारण, तिहारे श्रीगुरु कहे छै जे अनादि कालनो जीव छै ते राग द्वेष रूप फेरीदीयोछै ते ऊपर दृष्टांत लिखिए छै, जिमके एक पाणीनो द्रह भरीयो छै ते पाणी मध्ये गुण घणा छै ते मध्ये गुण तीन मुख्य छै ते किसा गुणः—(१) पहिलो निर्मलताइ (२) बीजो रस, मधुरताइ (३) तीजो शीतलताइ ए तीनों गुण आदि देइने पाणी मांहे गुण घणा छै ते पाणीरा द्रह मध्ये कालंतर किसी ही जोगवाइ करीने पाणी मांहे सेवाल ऊपनो ते पाणी मध्ये गुण तीन (३) निकमा थया शीतलताइ तेहवी नथी, रस मधुरताइ पण तेहवी नथी, अने वले निर्मलताइ तो पूरी गई ए दृष्टांते जीव नो स्वरूप जाणवो, जिम पाणी थी सेवाल ऊपनो छै तिणहीज पाणी अवस्था फेरी दिछै जिम

पुद्गलनें निमित्त करी ते राग द्वेषरूप परिणाम ते जीवथीज ऊपना छै तेणेहीज जीवनो स्वरूप फेरी दियो छै ते जीव मध्ये अने पाणी ना दृष्टांत मध्ये एटलो विशेषछै के जीवने राग द्वेष प्रणाम अने पुद्गल नो निमत्त अनादि कालना लागा थका संपन्न छै अने पाणी मध्ये सेवाल ऊपना कहे छै एहवो दृष्टांत श्रीगुरूना मुख थकी सांभलीने शिष्य खुश थयो।

॥ शुभं भवतु ॥

॥ सेवं भंते सेवं भंते। तमेव सच्चम् ॥

॥ सम्यक्त का ५ लक्षण ॥

१ सम कहता—शत्रु, मित्र ऊपर सरीषा भाव रखे।

२ समवेग कहता— वैराग्य भाव रखे।

३ निरवेग कहता—आरंभ परिग्रह से निवर्ते।

४ अनुकंपा कहता—परजीवने दुखी देखने करुणा (अनुकंपा) करे।

५ आसता कहता—जीवादिक द्रव्यना सुक्ष्म भाव सुणकर मुंझावे नही श्रीजिन वचन ऊपर आसता रखे।

॥ विस्तार ॥



॥ अथ संवेग स्वरूप लिख्यते ॥



सम्यक्त सदा अन्तःकरणमें संवेग---वैराग्य भाव रखे।

श्लोक—शरीर मनसागंतु वेदना प्रभवाद्भवात्।
स्वप्नेंद्रजालसंकल्पाद्भीति॰ संवेगमुच्यते॥

अर्थात् संवेगी ऐसा विचारेकि "संसारमी दु.खपउरय" यह संसार शारीरिक देह संवन्धी रोगादिक और मानसिक मन संवन्धि चिंता इन दोनों दु:खो करके प्रतिपूर्ण भरा है, किंचित

ही खाली नहीं है, इसमें तूं सुखकी अभिलाषा करे सो तेरेको सुख कहांसे प्राप्त होवे तथा जो पुद्गलोंका संयोग मिला है, सो भी कैसा है कि यथा दृष्टान्त किसी क्षुधापीड़ित भिक्षुक बजारमें हलवाईकी दुकानपर अनेक पक्वान देख विचार करता २ रसोई बनाने कंडे छाणे लाया था उसको सिर नीचे दे सो गया। उसे स्वप्न आया कि इस ग्रामका राजा मरनेसे मैं राजा बन ऊँचा सिंहासन पर बैठ छतर चमर धराने लगा और मिजवानीमें घेवर प्रमुख अत्युत्तम पक्वान जीम शयन किया इतनेमें ही कुछ आवाज होनेसे जाग्रत हो देख २ रोने लगा ग्रामके लोग पूछनेसे उत्तर दिया कि मेरा राज परिवार सुखसाहबी कहां गया और अभी मैंने इच्छित भोजन किये थे सो भी कहां गये यह कंडेही रह गये, लोग कहने लगे यह दिवाना हो गया सो बकता है। ऐसेही यह मनुष्यजन्म-

सायभी स्वप्नके सम्पत्ति मिली है। इसको
ादेनेसे दिवानाकी तरह रोना पड़ता है,
ालव यह सम्पत्ति सव स्वप्न या इन्द्रजाल
रुडीके ख्याल जैसी प्रत्यक्ष दीखती है ऐसे
खसागर अथिर संसामें लुब्ध न होवै। सदा
र्म बधके कारणोंसे डरता है संसारको
ाडनेकी सदा अभिलाषा रखे सो संवेगी
ाणना। इतिसंवेग सरूपम्।

अथ अनुकम्पा संक्षेप स्वरूप लिख्यते।

सम्यक्ती प्राणी दुःखी जीवोंको देख अनु-
कम्पा करे।

श्लोक

सत्व सर्वत्र चित्तस्य दयार्द्रत्वं दया नव।
धर्मस्य परमंमूलमनुकम्पा प्रवचते॥

अर्थात्—जगतवासी सर्व जीव सुखसे जीवितव्यके अभिलाषी हैं, दुःख प्राप्त होनेसे घबराते हैं और दुःख प्राप्त हुए उस दुःखमेंसे कोई छुड़ानेवाला मिल जाय तो वो हर्ष मानते हैं। इसलिये समदृष्टि प्राणी दुःखी जीवोंकी अनुकम्पा लाकर उनको उस दुःखसे अवश्य छुडावे यह अनुकम्पा ही धर्मका मूल है।

॥ दोहा ॥

दया धर्मका मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोडिये, जबलग घटमें प्राण॥

॥ अथ आसता स्वरूप लिख्यते ॥

श्री जिनेश्वरके मार्गपर या वचन पर पक्की आस्ता रखे, एक जिनेश्वरके मार्गको सच्चा जानना, दृढ़ श्रद्धा रखना, देवादिक कोई धर्मसे

जिधर गुड़ावे उधर गुड़ जाते है ऐसे वहुत है, इस लिये धर्मी होकर दुःख पाते हैं। वहुत धर्मकर यथा तथा फल प्राप्त नहीं कर सकते हैं; ऐसा जान समदृष्टी प्राणी यथा शक्ति करणी करे; परन्तु पूर्ण आसता रखकर पूर्ण फल लेवे। इति आसता स्वरूप ॥

॥ इन्द्रियोंके विषय स्वरूप लिख्यते ॥



॥ श्रोतेन्द्री ॥

१ श्रोतेंद्री—कानके तीन विषय, १ जीव शब्द जीव बोले सो, २ अजीव शब्द भींतादिक पड़नेसे शब्द होवे सो, ३ मिश्र शब्द वाजिंत्र वांसरी प्रमुख अजीव, वजानेवाला जीव दोनो मिलकर शब्द होवे सो मिश्र शब्द; इसके बारह विकार पहिले तीन विषय कही उसको दो गुणा करना शुभ-अशुभ जैसे पुण्यवान प्राणी बोले तो अच्छा लगे और पापी बोले तो

खोटा लगे यह जीव शब्द हुये, रुपये पड़े तो उसका शब्द अच्छा लगे, भींत पड़े तो उसका शब्द खोटा लगे ये अजीव शब्द हुये, उत्सनका वाजिन्त्र अच्छा लगे और मृत्युका और सग्राम का वाजिन्त्र खराव लगे यह मिश्र शब्द हुये, यों तीनके दो भेद करनेसे छव भेद हुये। इन छव पर कभी राग प्रेम और कभी द्वेष उत्पन्न होता है, अच्छे शब्द पर भी किसी समय द्वेष आ जाता है, जैसे लग्न होता है तब कहे कि "रामनाम सत्य है" तो खोटा लगे और कभी खोटा शब्द अच्छा लगता है जैसे सासरे में गालियों, यों छव के दो गुणे करनेसे श्रोतेन्द्रीके वारह विकार हुये। इस इन्द्रीके वशमें होकर मृग, सर्प इत्यादि पशु मारे जाते हैं, ऐसा जान कभी राग द्वेष उत्पन्न होवे ऐसा शब्द सुनना नहीं और कभी कानमें आय ज़ाय तो उसपर राग द्वेष करना नहीं. क्योंकि

राग द्वेष ही कर्मके बंधका मुख्य कारण है। इस भवमें या आगेके जन्ममें वहिरापणा या कानके अनेक रोग प्राप्त होते हैं और इसको वशमें करता है, वह श्रोतेन्द्रीकी निरोगता पाता है और अनुक्रमे मोक्षमे जाता है।

॥ चक्षुइन्द्री ॥



२ चक्षुइन्द्री—आंखकी पांच विषय १ काला, २ नीला, ३ लाल, ४ पीला, ५ श्वेत, इनके साठ विकार, पांच वर्णकी वस्तुमे कितनी सचित (सजीव) कितनी अचित (निर्जीव) और कितनी मिश्र (सचित अचित दोनों भेली) होती हैं, यों ५ × ३ = १५ होये, यह १५ कभी शुभ होता है और कभी अशुभ होता है, यों १५ × २ = ३० हुये, इन तीस पर कभी राग और द्वेष पैदा होता है, यों ३० × २ = ६० चक्षु इन्द्रीके विकार हुये। इस इन्द्रीके

राग द्वेष ही कर्मके बंधका मुख्य कारण है। इस भवमें या आगेके जन्ममे वहिरापणा या कानके अनेक रोग प्राप्त होते हैं और इसको वशमें करता है, वह श्रोतेन्द्रीकी निरोगता पाता है और अनुक्रमे मोक्षमें जाता है।

॥ चक्षुइन्द्री ॥



२ चक्षुइन्द्री—आंखकी पांच विषय १ काला, २ नीला, ३ लाल, ४ पीला, ५ श्वेत, इनके साठ विकार, पांच वर्णकी वस्तुमें कितनी सचित (सजीव) कितनी अचित (निर्जीव) और कितनी मिश्र (सचित अचित दोनों भेली) होती हैं, यों ५ × ३ = १५ होये, यह १५ कभी शुभ होता है और कभी अशुभ होता है, यों १५ × २ = ३० हुये, इन तीस पर कभी राग और द्वेष पैदा होता है, यों ३० × २ = ६० चक्षु इन्द्रीके विकार हुये। इस इन्द्रीके

में पड़कर पतंगिया दीवेमें झंपापात ले मरण
ता है । ऐसा जान राग द्वेष उत्पन्न
ऐसा रूप देखना नही और देखनेमें आवे
राग द्वेष करना नहीं। जो राग द्वेष
ता है वह इस भव परभवमे चक्षु इन्द्रीकी
ता पाता है और वशमें करता है सो
इन्द्री निरोगी पाकर अनुक्रमे मोक्ष
ा है।

॥ घ्राणेन्द्री ॥



३ घ्राणेन्द्री—नाक इसकी दो विषय, १
हलो) सुभींगन्ध सुगन्ध और २ (दुजो)
र्गिन्ध दुर्गन्ध। इसके वारह विकार, यह दो
चित और दो अचित और दो मिश्र यों ६,
छव पर राग और छव पर द्वेष यो वारह
कार हुये, इस इन्द्रीके वशमें पड़कर भ्रमर
नरे) फुलमें मारा जाता है । ऐसा जाणकर

राग पैदा होवे ऐसा सुगन्ध सुघना नहीं और दुर्गन्ध आजावे तो द्वेष करणा नहीं क्योंकि राग द्वेष करनेसे घ्राणेन्द्री की हीनता पाता है और वशमें करनेसे घ्राणेन्द्री निरोगी पाकर अनुक्रमें मोक्ष पाता है।

॥ रसेन्द्री ॥



४ रसेन्द्री—जीभकी पांच विषय, १ खट्टा, २ मीठा, ३ तीखा, ४ कड़ुवा, ५ कसायला। इसका साठ विकार, यह पांच सचित्त, पांच अचित्त और ५ मिश्र यों तिन गुणे करनेसे १५ हुये, ये १५ शुभ और १५ अशुभ यों ३० हुये, यह ३० पर राग और ३० पर द्वेष यों साठ विकार हुये। इसके वशमें पड़कर मच्छी मारी जाती है। ऐसा जान कर किसी रस पर राग द्वेप करना नहीं, क्योंकि राग द्वेषसे रसेन्द्रीकी हीनता प्राप्त होती है और

वशमें करनेसे निरोगीपणा पाकर अनुक्रमें मोक्ष प्राप्त होता है । यह रसेन्द्री वशमें करनेसे पांचही इन्द्री सहजमें वशमें हो जाती है । कहा है कि "एक धापी तो चार भूखि एक भूखि तो चार धापी" जो रसेन्द्री पेट भरा हुवे तो काणोसे राग रागिणी सुनने की, आंखोसे रूप देखनेकी, नाकसे सुगन्ध लेनेकी और शरीरसे भोग भोगनेकी इच्छा उत्पन्न होती है और जो रसेन्द्री भूखी होवे तो कुछ भी इच्छा होती नहीं है । उल्टा चार ही कामोंका तिरष्कार होता है । शान्त आत्मा रहती है । इसलिये आत्मा वशमें करनेका एक यहही उपाय है कि वस्तु खानेका नियम रखना ।

॥ स्पर्शेन्द्री ॥



५ स्पर्शेन्द्री शरीर इसकी आठ विषय—१ हलका, २ भारी, ३ ठण्डा, ४ उष्ण (गरम) ५

लुखा, ६ चोपड़ा, ७ सुहाला और ८ खर-खरा । इसके ९६ विकार, आठ सचित, ८ अचित और ८ मिश्र यों ८×३=२४ हुये, २४ शुभ २४ अशुभ, यों २४×२=४८ हुये और ४८ पर राग ४८ पर द्वेष. यों ४८×२=९६ विषय हुये । इस इन्द्रीके वशमें पड़कर हाथी (गज) हथणीके लिये खाडेमें पड़कर मारा जाता है, इस लिये राग द्वेष उत्पन्न होवे तो राग द्वेष करना नहीं, क्योंकि राग द्वेषसे अनेक कष्ट भोगने पड़ते हैं और वशमें करनेसे शास्वता मोक्ष सुख मिलते हैं ।

श्लोक ।

तुरंग-मातङ्ग-पतङ्ग-भृङ्ग-मीन-हता पञ्चभीरेवपञ्चः
एकः प्रमादी कथं न हन्यते सेवते पञ्चभीरेवपञ्चः
(नाशकेत पूराण अध्याय ६ श्लोक ३६)

अर्थ—मृग, पतङ्गीया, भ्रमर, मच्छी और हाथी यह पांचही एकएक इन्द्रीके वशमें पड़कर

मारे गये तो पांचों इन्द्रीके वशमें पड़ेहे उसके क्या हाल ?

॥ इति इन्द्रिय विषय विकार सम्पूर्णम् ॥

नोट—गमति वस्तुपर राग और अनगमति वस्तुपर द्वेष, आता है। अपने और अपने मित्रके पास अच्छी वस्तु होनेपर राग आता है। परन्तु वही अच्छी वस्तु शत्रु के पास होनेसे द्वेष आ जाता है, इसी तरह भूंडी वस्तु अपने और अपने सज्जनके पास रहनेसे द्वेष आता है और वही वस्तु शत्रु के पास रहनेसे राग आ जाता है सो समभाव रखे राग द्वेषको घटानेको उद्यम करे।

॥ अथ सिखामणरा बोल ॥



१ छते धन खावण पीवणरी न्युन्यता न कीजें, २ राजाकी, चोरकी, स्त्रीकी बात न कीजै, ३ राजा योगीको आसंगो न कीजें, आस कीजै, ४ आपरो कुल धर्म छोडीजै नहीं, धर्म कीजै, ५ गांवके छेडे वसीजें नहीं, विचमें वसीजै, ६ गई वस्तुरो सोच न कीजें, नवे वस्तुरो संग्रह कीजें, ७ कुटुंबसूं प्रीति राखीजै, सर्वसुं मिलाप

राखीजै, ८ राजा डंडेजिका, चोरकी वस्तु मोल न लीजै, ९ राजाडंडे लोकभंडे एसा काम न कीजै, १० पराई वस्तु दिये विना न लीजै, चोरी लागे, ११ अनीतीसे धन भेलो न करीजै, १२ अक्कलसे काम नीकलता होय तो धन न खरचिजै, १३ गुरुके पास राज सभामें तथा मोटी सभामें झुठ न बोलीजै, १४ घर सारु दान दीजै, झूठी साख न भरीजै, १५ गुणवान पंडितासुं प्रीत राखीजै, जो वुद्धि बधे, १६ कीणरी जामनीमें न आईजै, १७ किसीका दिल दुखे एसा कड़वा बचन न बोलीजै, १८ अजाणी वस्तु न खाइजै, नंदी फलवत्, १९ बिना आकब कीणीरी बातमें हुकारो न दीजै, २० घररी दुखरी बात चोवड़े किणहीने न कहीजै, २१ सूति गायने, सर्पने, नाहारने न जगाइजै, २२ आपरा मित्रने पूछकर काम कीजै, २३ बिना पिछाण्यां किणरोही साथ न कीजै,

२४ पांच आदमी मिलके कहवे सो मान लीजै, २५ चाकरसुं कपट दगो न कीजें, २६ वही खानामें, खत पानेमें झूठो नामो न लिखीजै, २७ बड़ा मनुष्यने ओछो आखर न कहीजै, २८ घणो लोभ हाणी जाणीजै, २६ विद्यावंतसुं, पंडितसुं वाद न कीजै, ३० द्रव्य फजुल न खरचीजै, ३१ खर्च आमदानी रोज स्मभालीजै, ३२ भोजन तैयार हुवा पाछै जिमणारी जेज न कीजै, ३३ औषध खाइजे सो पथ्य राखीजै, छाने लीजे, ३४ मसकरीमें किणरी वस्तु न उठाइजे, ३५ तोला मापा घटता बढ़ता न राखीजै, ३६ नामो ठामो तैयार राखीजे, ३७ पुंजी सारू काम करीजे, ३८ भोजन वेला झगडो नहीं कीजे, ३६ माथे कर उधार न दीजै, ४० अण भावतो भोजन न कीजे, अजीर्ण होय, ४१ गलि विचे एकली लुगाईसुं वात न कीजे, ४२ खाति लोहार

सिलावटेरे सामो न वेसीजे. ४३ जुवे सट्टे फाटकेका काम न कीजै, करेतो प्रतीत घटे, ४४ चोर, कसाई, वेश्या, नीच, दूष्ट मनुष्यके साथ लेन देन बेपार न करीजै, ४५ जावते विछु सर्पने छेडणो नही. ४६ वात करतां गाल काढणी नहीं, ४७ वात करतां आपने हसणो नहीं, मूर्ख दीसे, ४८ वरजतां चालिजे नहीं, अगाड़ी काम सिद्ध होवे नही, ४९ मंगतासुं राड न कीजे, लोकमें भुंडो दीसे, ५० टाबररो लाड वरस सात तांई राखीजे, पाछे विद्या पढ़ाईजे, ५१ पशुरे चोट न दीजे, मर्मरी लागे जीवसुं जावे, ५२ लिखतां वात न कीजे, वात करे तो खोट आवे, ५३ सर्व जीव, सतव, प्राण, भूत, न हणीजै, दया राखीजै, ५४ स्रीसुं रोस न कीजै, करे तो मूर्ख वाजे, ५५ वेला विना घरवारे न जाइजे, ५६ पढ़तां, गावतां, नाचतां, व्यवहारमें लाज न राखिजे, ५७ विना विचार्‌यां

मुंढावाहरे वात न काढीजे, ५८ दोय जणा घात करता हुवे जठे न जाइजे. ५६ हालतां फिरतां उभां न खाइजे, ६० कुवा ऊपर न वेसीजे, ६१ दान देईने न पोमाइजे, ६२ गांवरा धणीसुं वैर भाव न राखीजे, ६३ मित्रता होये जठे कर्ज न मांगीजै, मांग्यां-लियां न दरीज्यां रंज होवै प्रीति टुटे, ६४ लेने देने में साहुकारी राखीजे, जो साख सोभा इजत आवरु वधे, ६५ सदा निशंक पणै न रहीजै, ससारको भय राखीजै, ६६ मोटो देख किणरी खुसामदी न करीजै।

॥ इति शिखा वाक्य ॥

॥ शिखावनरा बोल ॥

१ सदहणा शुद्धहुवे तिणरो उपदेश सुणीजै, २ व्रत मर्यादा किधा होय तिणसुं प्यार कीजै, ३ सज्जन दुश्मन जोइनै परखीजै, ४ एकली

स्त्री कनै उभा न रहीजै, ५ कांइ लाल पालकीयां न पतीजै, ६ भलो चावै तिणरी सीख मानीजै, ७ बोल्यां बंध नहीं होय तिणरो संघ न कीजै, ८ परवश पड्या सील दृढ राखीजै, ९ सटल. विटलसुं प्रेम न कीजै, १० सज्जन मित्रने छेह न दीजै, ११ कुमती हिंसा कारक संग न कीजै, १२ चुकानै वार बार न पूछीजै १३ उलटी बुद्धिवालेने वारवार सीख न दीजै, १४ घणोमान वधायो तोही विनो न छोडीजै, १५ सुखदुखमें पिण भली मर्यादा न छोडीजै, १६ आपणां गुण आपईज न वखाणीजै, १७ आपना औगुण पराये पर मत डालीजै १८ पूठ पाछै ओगुण न बोलीजै, १९ सम्यक्त शील दृढ़ राखीजै, २० बुरीगारने न छेड़ीजै, २१ हीयारी बात जिणतिणनै न कहीजै, २२ रीस चड़ै तो क्षमा कीजै, २३ विण विच्यारां दाय आवै च्यूं न बोलीजै, २४ धर्म आचार्यरे

हुकममें रहीजै, २५ पर उपगार भूलीजै नहीं, २६ निर्गुण देवगुरु धर्म सेवीजै नहीं, २७ गुणवंत देवगुरु धर्म सेवीजै २८ निश्चय व्यवहारनां जांण हुइजै, २९ चतुर्विध संघरा निंदकनै दुर्लभ बोधी जाणीजै, ३० चतुर्विध संघनै वखांणै ते सुलभ बोधी जाणीजै, ३१ आवशक उपयोग सहित कीजै, ३२ भणने गुणनेमें वाद न कीजै, ३३ संशय उपजै तो सदगुरुने पुछीजै, ३४ दोष आलोयने निशल हुईजै, ३५ गुरुके, वड़ाके सामो न बोलीजै, ३६ गुरुनो काज हित सुं कीजै, ३७ किसी की आत्मा न दुखाइजै, ३८ धर्मरे ठिकाणे विकथा न कीजै, ३९ धर्मरे ठिकाणे झूठ न बोलीजै, ४० छव काय बंचै जठे धर्म जाणीजै, ४१ गुण उपजै तिणने भणाईजै, ४२ निर्गुण, सुगुणारी परीक्षा कीजै, ४३ कूड़ांरी पख न खांचीजै, ४४ सत्यवादीरी प्रतीत आणीजै,

४५ कृतघ्नने अगुणग्राही जाणीजै, ४६ कपटीरो विश्वास न कीजै, ४७ पाप कर्मसे डरता रहीजै, ४८ किणही वस्तुरो गर्व न कीजै, ४९ धर्म कार्यपर तत्पर रहीजै, ५० अति लोभ तृष्णा न कीजै, ५१ किणहीसुं डंस राखने दुख न दीजै, ५२ पारकी चाड़ी न कीजै, ५३ पर उपकार करता ढील न कीजै, ५४ कड़वा, कठोर, निर्लज्ज न बोलीजै, ५५ मीठो अमृत, सत्य, निरवद बोलीजै, ५६ धर्मरी बात उगाड़े मुंढे न कहीजै, ५७ अविनीतरी बुद्धि गुण नासती जाणीजै, ५८ विनैवंतरी बुद्धि गुण वधती जाणीजै, ५९ पांच सुमती तिन गुप्ती चोखी पालीजै, ६० लीधा व्रत पच्चखाण में दोष न लगाइजै, ६१ घणे कारणे पिण अधीरा न हुइजै, ६२ रोग कष्ट पड़्या धर्म न छोड़ीजै, ६३ पांच इन्द्रीरी विषयरे वश न पड़ीजै, ६४ खांण भोग, कर्म

रोग जाणीजे, ६५ संसाररो सगपण काचो जाणीजे, ६६ धर्म रो सगपण साचो जाणीजे, ६७ पाषंडी, लोभी, कुगुरुरो संग न कीजे, ६८ निर्लोभी सद्गुरुनी संगत कीजे, ६९ सात विसन न सेवीजे, ७० पाप अठारह पर हरीजे, ७१ कोई वांको वर्ते तो ही द्वेष न कीजे, ७२ खोटे हाण, खरे वरकत जाणीजे ७३ पापसुं दुखफल धर्मसुं सुखफल जाणीजे, ७४ गुरुसुं वांको वहे सो वडो अभाग्यो जाणीजे, ७५ गुरुसुं सन्मुख वहे तो वडो भाग्य खुल्या जाणीजे, ७६ सीख उंधीमाने तो हीन पुण्यो जाणीजे, ७७ जो झूठ न वोले और सच बोले सो साहूकार कहीजे, ७८ घणी बोली हांसी करीने गुण न खोईजे, ७९ ओछो वचन न काढ़े ते गंभीर आदमी जाणीजे, ८० ओछो बचन काढ़े ते हलको आदमी जाणीजे, ८१ न्याय पक्ष स्वीकार कीजे, अन्याय पक्षमें

कभी न जाईजै, ८२ सुदेव, सुगुरु धर्मकी विनय भगती कीजै, ८३ देव गुरु धर्मकी असातना न कीजै, ८४ पराइ स्त्री वडी है, सो माता छोटी है, सो बेहन भाणजी सामान जानीजै, ८५ संपत, विपत, सुख, दुख, मुढ, चतुर, कर्मोरा नाटक जाणीजै, ८६ आरंभ, परिग्रह, विषय कषाय थोड़ो अने घणो दुखरो कारण जाणीजै ।

इति छयासी बोल समाप्त ।

॥ श्रीरस्तु कल्याण मस्तु ॥

॥ अथ कर्म छतीसा लिख्यते ॥



परम निरंजण परम गुरु परम पुरुष परधान । वंदो परम समाधि गत भयभंजण भगवान ।१। जिनवांन करि सुगुरु शिष मनि आनि । किछुक जीव अरु कर्म्मको निरने कहु वखानि ।२। अगम अनत अलोक नभ तामें

लोक आकाश। सदा काल ताके उदर जीव अजीव निवाश ।३। जीव दरवकी द्वै दसा संसारी अरु सिद्ध । पांच विकल्प अजीवके अपै अनादि अकिद्ध ।४। गगन काल पुद्गल धरम अरु अधर्म अभिधान। अव किछु पुद्गल दरवको कहुं विशेष वखान ।५। धरम द्रष्टी सो प्रगट है पुद्गल दरव अनंत। जड लत्तण निरजीव दलरूपी मूरतिवंत ।६। जो त्रिभुवन थिति देखिये थिर जंगम आकार। सो पुद्गल करवानको है अनाद विस्तार ।७। अव पुद्गलके वीश गुण कहो प्रगट समझाय। गरभित और अनंत गुण अरु अनंत परजाय ।८। श्याम, पीत उज्जल अरुन हरित मिश्र वहु भांति। चिविध वरण जो देखिये सो पुद्गलकी कांति ।९। आमल तिक्त कषाय कटुखार मधुर रस भोग। ए पुद्गलके पांचे गुण परसां नहिं सव लोग ।१०। तातो शिरो चीकनो रुखो नरम

कठोर। हरवो अरु भारी सहज आठ फरस गुण जोर ।११। जो सुगन्ध दुरगन्ध गुण सो पुद्‌गलको रूप । अब पुद्‌गल परजायकी महिमा कहो अनूप ।१२। सबदंबंध सूछिम स्वरल लंब वक्र लघू थूल । विथरनि भेद निउद्योत तम दुहुको पुद्‌गल मूल ।१३। छाया आकृति तेज दुति इत्यादिक बहु भेद । ए पुद्‌गल परजाय सब प्रगट हो हिउछेद ।१४। केइ शुभ केइ अशुभ रुचिर भयानक भेष। सहज सुभाउ विभाउ गति आरू सामान विशेष ।१५। गरभित पुद्‌गल पिंडमें अलस अमूरति देव। फिरै सहज भव चक्रमें यह अनादिकी टेव ।१६। पुद्‌गलकी संगत करै पुद्‌गल ही सो प्रीति । पुद्‌गलको आपागनै यह भरमकी रीति ।१७। जेजे पुद्गलकी दशा ते निज मांने हंस । यही भरम विभाऊसो बढ़े करमको वंश ।१८। ज्यो ज्यो कर्म्म विपाक

चसिवाने भ्रमकी मौज। त्यौंत्यौं निज संपति दूरे जरे परिग्रह फौज।१६। ज्यों वानर मदिरा पीवै विछु डंकत गात। भूत लगै कौतु करै त्यां भ्रमको उतपात।२०। भ्रम संसैकी भूलसौं लखेन सहज सूकीऊ। करम रोग समझे नही यह संसारी जीऊ।२१। करम रोगके द्वे चरण विषम दुहुकी चाल। कम्प परकिती लिये एक अेवी असराल।२२। कम्प रोग है पापपद अकर रोगहै पुन्त्र। ज्ञान रूप है आतमा दुहु रोग सो सूत्र।२३। मूरख मिथ्या दृष्टि सो निरखै जगकी रोस। डरहि जीव सब पापसो करही पुण्यकी होस।२४। उपजे पाप विकारसो भयतापादिक रोग। चिन्ता खेद वृथा बढ़े दुख माने सुख माने सब लोग।२५। उपजे पुन्न विकारसो विपे रोग विस्तार। आरति रूद्र वृथा बढे सुखमाने संसार।२६। दोउ रोग समान है मूढ़ न जाने रीति। कंप रोगसे भय करे अकर रोगसो

प्रीति ।२७। भिन्न भिन्न लक्षण लखै प्रगट दुहु की भांति। एक लहै उदवेगता एक लहै उपशांति ।२८। कच पकी सीसकुच है वक्र तुरङ्गकी चाल। अन्धकारकी सांसमें कंप रोगके भाल।२६। चकर कूदसी उमग हेऊ कर वंद की चाल। मकर चांदनीसी दिये अकर रोगके माल ।३०। तम ऊद्योत दोऊं प्रकृति पुद्गलकी परजाई। भेद ज्ञान विऊमूड मूमि भटक भटक भरमाई ।३१। दुहु रोगको एक पद दुहु सो मोक्ष न हो। विना सिक दुहुकी दशा विरला बूजे कोई ।३२। कोउ गिरी पहार चढ़ कोउ बूजे कूप। मारन दोहुको एक सोक सो कहिवै को द्वै रूप ।३३। मावबासि दुविधा धरे ताते लखे न एक। रूप न जाणे जलधिको कूपा कोसो भेष ।३४। माता दुहुकी वेदनी पिता दुहु को मोह। दुहुं वेडी सो ए वंधि रहै कहवती कंचन लोह ।३५। जाति दुहूवी

एक है होय इक है जो कोई। गहे आच
सह है सुखल्लभ है सोई ।३६। जाके चित
तैसी दशा ताको तैसी दृष्टी। पंडित भ
ब्रडन करै मुड बधावे सृष्टी।

॥ इति कर्म्म छतीसी समाप्त ॥

॥ चाणक्य नीतिसार दोहावली ॥

शुभ तरुवर ज्यों एक ही,
फूल्यो फल्यो सुवास।
सब वन आमोदित करे,
त्यों सपूत गुणरास। १।

जिस प्रकार फूला फला तथा सुगन्धित एक ही वृक्ष सब वनको सुगन्धित कर देता है, इसी प्रकार गुणोंसे युक्त एक भी सपूत लड़का पैदा होकर कुलकी शोभाको बढा देता है। १।

जिन के सुत पण्डित नहीं,
नहीं भक्त निकलङ्क।

अन्धकार कुल जानिये,

जिमि निशि विना भयङ्क ।२

जिसका पुत्र न तो पण्डित है, न भक्ति करनेवाला है और निष्कलङ्क (कलङ्क रहित) ही है, उसके कुलमें अन्धेरा ही जानना चाहिये, जैसे चन्द्रमाके विना रात्रिमें अन्धेरा रहता है । २ ।

निशि दीपक शशि जानिये,

रवि दिन दीपक जान ।

तीन भुवन दीपक धरम,

कुल दीपक सुत मान । ३ ।

रात्रिका दीपक चन्द्रमा है, दिनका दीपक सूर्य है, तीनों लोकोंका दीपक धर्म है और कुलका दीपक सपूत लड़का है । ३ ।

एकहि अच्छर शिष्य को,

जो गुरु देत वताय ।

धरती पर वह द्रव्य नहिं,

जिहिं दै ऋण उतराय ।४।

गुरु कृपा करके चाहें एक ही अक्षर शिष्यको सिखलावे, तो भी उसके उपकारका बदला उतारनेके लिये कोई धन संसारमें नहीं है, अर्थात् गुरुके उपकारके बदलेमें शिष्य किसी भी वस्तुको देकर उऋण नहीं हो सकता है । ४ ।

पुस्तक पर आप हि पढ्यो,
गुरु समीप नहिँ जाय ।
सभा न शोभै जार सें,
ज्यों तिय गर्भ धराय । ५ ।

जिस पुरुषने गुरुके पास जाकर विद्याका अभ्यास नहीं किया, किन्तु अपनी ही बुद्धिसे पुस्तक पर आप ही अभ्यास किया है, वह पुरुष सभा में शोभाको नहीं पा सकता है, जैसे—जार पुरुषसे उत्पन्न हुआ लड़का शोभाको नहीं पाता है, क्योंकि जारसे गर्भ धारण की हुई स्त्री तथा उसका लड़का अपनी जातिवालोंकी सभामें शोभा नहीं पाते हैं, क्योंकि—लज्जाके कारण बापका नाम नहीं बतला सकते हैं । ५ ।

वन में सुख सें हरिण जिमि,
तृण भोजन भल जान ।
देहु हमैं यह दीन वच,
भाषण नहिँ मन आन । ६ ।

जङ्गलमें जाकर हिरणके समान सुख पूर्वक घास खाना अच्छा है परन्तु दीनताके साथ किसी सूम (कजूस) से यह कहना कि "हमको देओ" अच्छा नहीं है । ६ ।

नहीं मान जिस देश में,
वृत्ति न बान्धव होय ।

नहिँ विद्या प्रापति तहाँ,
वसिय न सज्जन कोय । ७ ।

जिस देशमें न तो मान हो, न जीविका हो, न भाई बन्धु हों और न विद्याकी ही प्राप्ति हो, उस देशमें सज्जनोंको कभी नहीं रहना चाहिये । ७ ।

पण्डित राजा अरु नदी,
वैद्यराज धनवान ।
पांच नहीं जिस देश में,
वसिये नाहिँ सुजान । ८ ।

सब विद्याओंका जाननेवाला पण्डित, राजा, नदी (कुआ आदि जलका स्थान), रोगोंको मिटानेवाला उत्तम वैद्य और धनवान, ये पाच जिस देशमें न हो उसमें बुद्धिमान् पुरुषको नहीं रहना चाहिये । ८ ।

भय लज्जा अरु लोकगति,
चतुराई दातार ।
जिसमें नहिँ ये पांच गुण,
संग न कीजै यार । ९ ।

हे मित्र ! जिस मनुष्यमें भय, लज्जा, लौकिक व्यवहार अर्थात् चालचलन, चतुराई और दानशीलता, ये पाच गुण न हो, उसकी सगति नहीं करनी चाहिये । ९ ।

काम भेज चाकर परख,
बन्धु दु:ख में काम ।
मित्र परख आपद पड़े,
विभव छीन लख वाम ।१०।

कामकाज करनेके लिये भेजने पर नौकर चाकरोंकी परीक्षा हो जाती है, अपने पर दु ख पड़ने पर भाइयोंकी परीक्षा हो जाती है, आपत्ति आने पर मित्रकी परीक्षा हो जाती है और पासमें धन न रहने पर स्त्रीकी परीक्षा हो जाती है। १०।

पीछे काज नसावहीं,
मुख पर मीठी बात ।
परिहरु ऐसे मित्र को,
मुख पय विष घट जान ।११।

पीछे निन्दा करे और काम को बिगाड़ दे तथा सामने मीठी १ बातें बनावे, ऐसे मित्र को अन्दर विष भरे हुए तथा मुख पर दूध से भरे हुए घड़े के समान छोड़ देना चाहिये । ११ ।

रुप भयो यौवन भयो,
कुल हू में अनुकूल ।
विना विद्या शोभै नहीं,
गन्धहीन ज्यों फूल ।१२।

रूप तथा यौवनवाला हो और बड़े कुल मे उत्पन्न भी हुआ हो तथापि विद्यारहित पुरुप शोभा नहीं पाता है, जैसे—गन्ध से हीन होने से टेसू (केसूले) का फूल । १२ ।

कौन काल को मित्र है,
देश खरच क्या आय ।
को मैं मेरी शक्ति क्या,
नित उठि नर चित ध्याय ।१३।

यह कौन सा काल है कौन मेरा मित्र है, कौन सा देश है, मेरे आमदनी कितनी है और खर्च कितना है, मैं कौन जाति का हूँ और क्या मेरी शक्ति है, इन बातो को मनुष्य को प्रतिदिन विचारते रहना चाहिये क्योंकि जो मनुष्य इन बातो को विचार कर चलेगा वह अपने जीवन मे कभी दु ख नहीं पावेगा । १३ ।

तीन थान सन्तोष कर,
धन भोजन अरु दार ।
तीन सँतोष न कीजिये,
दान पठन तपचार ।१४।

मनुष्य को तीन स्थानों मे सन्तोप रखना चाहिये—अपनी स्त्री मे, भोजन मे और धन में, किन्तु तीन स्थानो में सन्तोष नहीं रखना चाहिये—सुपात्रों को दान देने में, विद्याध्ययन करने में और तप करने में । १४ ।

मित्र दार सुत सुहृद हू,
निरधन को तज देत ।
पुनि धन लखि आश्रित हुवैं,
धन बान्धव करि देत ।१५।

जिस के पास धन नहीं है उस पुरुष को मित्र, स्त्री, पुत्र और भाई बन्धु भी छोड़ देते हैं और धन होने पर ये ही सब आकर इकट्ठे होकर उस के आश्रित हो जाते हैं इस से सिद्ध है कि—जगत् में धन ही सब को बान्धव बना देता है । १५ ।

नेत्र कुटिल जो नारि है,
कष्ट कलह से प्यार ।
बचान भड़कि उत्तर करै,
जरा वहै निरधार ।१६।

खराब नेत्रवाली, पापिनी, कलह करने वाली और क्रोध में भर कर पीछा जबाब देने वाली जो स्त्री है—उसी को जरा अर्थात् बुढ़ापा समझना चाहिये किन्तु बुढ़ापे की अवस्था को बुढ़ापा नहीं समझना चाहिये । १६ ।

जो नारी शुचि चतुर अरु,
स्वामी के अनुसार ।

नित्य मधुर बोलै सरस,

लक्ष्मी सोइ निहार ।१७।

जो स्त्री पवित्र, चतुर, पति की आज्ञा में चलने वाली और
ब रसीले मीठे वचन बोलने वाली है, वही लक्ष्मी है दूसरी कोई
मी नहीं है । १७ ।

लिखी पढ़ी अरु धर्मवित,

पतिसेवा में लीन ।

अल्प सँतोषिनि यश सहित,

नारिहिँ लक्ष्मी चीन ।१८।

विद्या पढ़ी हुई, धर्म के तत्व को समझने वाली, पति की सेवा
तत्पर रहने वाली, जैसा अन्न वस्त्र मिल जाय उसी मे सन्तोष
ने वाली तथा ससार में जिस का यश प्रसिद्ध हो, उसी को
लक्ष्मी जानना चाहिये, दूसरी को नहीं । १८ ।



॥ शुद्धि पत्र ॥



१०६ आहार रा दोष।

१६ उदगमनरा:—

१ आहार कम्मे कहता—समचें साधुरे अर्थ करे ते दोष।

२ उदेसिय कहता---एक साधुरो नाम ले कर बनावै--ते दोष।

३ पुईकमं कहता---आधाकर्म्मी आहार १००० घर आंतरे तांइ लै ते दोष।

१६ उत्पातरा:—

११ कुफ तुल्ला संथिय।

१० एषणारा:—

४ पेंईए।

६ मीसे कहता---मिश्र मोरण अत्यादि।

७ अपरणीत कहता---शस्त्र प्रगम्यो नहीं होवे (थोड़े कालरो) तो नहीं लेवै लेवै तो दोष।

८ डायवा कहता--- आंधो, लुलो, लंगड़ो अजीण करतो वेहरावे ते दोष ।

९ लंते कहता---तुरंतरी जागां लिप्योडी होवे उपर कर उलंघ (डाक) कर आहार ले ते दोष ।

१० छंदे कहता--दुध, दही, रावरा छांटा पड़ता होवे तो लेवे नही लेवे तो दोष ।

५ आवशकराः---

५ वो परिठावणीया कहता--परठण निमत ले तो दोष ।

२३ दशमी कालकरा.---

१ दानठा कहता---कीरती रो दान ।

१० उजाए (वहु अभोधम्म) अपसीय भवणीभा ।

११ पडिकुटं कुलंग कहता---निषेद कुलरो

१३ अचित कुलंग ।

१५ सुईं घे (सुरा)

६ आचारंगजीरा।
१२ भगवतीजी सुत्ररा।
५ प्रश्न व्याकरणरा।
६ नसीत सुत्र रा।
२ उत्तराध्ययन रा।
२ दश श्रुत स्कद रा।
२ ठाणांगजी रा।
१ वेदकल्प रा।
१ प्रिहासीयेकपे कहता---वासी राखीने
खावे तो दोष।

१०६

६ तिगंछे कहता—चिकित्सा अर्थात् वैद्यकी करके दवाई प्रमुख देयकर आहार लेवे नहीं।

७ कोहे कहता—क्रोध करके आहार लेवे नहीं।

८ माने कहत—मान करके आहार लेवे नहीं।

६ माए कहता—कपटाई करके आहार लेवे नही।

१० लोभे कहता—लोभ करके आहार लेवे नहीं।

११ संथिये कहता—पहिले या पीछे दातारके गुणके प्रसंशा करके आहार लेवे नहीं।

१२ विद्या कहता--विद्या पढ़ाय कर आहार लेवे नहीं।

१३ मंत्र कहता--मंत्र जंत्रादिक करके आहार लेवे नहीं।

१४ चूर्ण कहता---चूर्ण गोली इत्यादि बताय कर आहार लेवे नही।

१५ जोगे कहता-- वशीकरणादि करके आहार लेवे नही।

१६ मूलकरण दोष कहता—गर्भपातन आदि कर्म करके आहार लेवे नही।

---

१६ दोष उदगमनरा ।

दातारलुं लागे अर्थात् श्रावक लगावे।

---

१ आहार कम्मे कहता---साधुरे अर्थ माव भेलायकर आहार वणावे ते आधा कर्मी दोष।

२ उदेसियं कहता---सगलो आहार दर्शणी निमित्त वनायो हो तो उदेसिय दोष किंचित ठामरे लागो भी लेणो कल्पे नही ।

३ सुजता आहार मांही आधा कम्मी अश मात्र भी भेल करे तो दोष।

४ मिसीजाय कहता---आपरे वास्ते तथा साधुरे वास्ते भेला रांधे तो दोष ।

५ ठवणा कहता---साधु निमित्त थापण राखे तो दोष ।

६ पाहुडियाए कहता---साधु अर्थे पावना आगा पाछा करने आहार देवे तो दोष ।

७ पाऊरे कहता---अंधारे मांहि सुं उजास करके देवे तो दोष ।

८ कीय कहता---साधु निमित्त आहार तथा वस्त्र मोल लायकर देवे तो दोष ।

९ पामिचे कहता---उधार लायकर देवे तो दोष ।

१० परियठे कहता---साधु निमित्त आपनी वस्तु दे कर बदलेमें दूजी वस्तु लायकर वेहरावे तो दोष ।

११ अभिहय कहता---आपणे घरसे जो साधुके पास साम्हा जायके देवे तो दोष ।

१२ भिन्न कहता---लेपनादिक छांदो खोलके देवे तो दोष ।

१३ मालोहय कहता---ऊंचासे उतार कर देवे तो दोष ।

१४ अछिजे कहता---दूजेके पाससे खोसकर देवे तो दोष ।

१५ अणिसट्ठे य कहता---दोय्के सीरकी वस्तु (एक दूसरेकी विना रजावंदी) देवे तो दोष ।

१६ अजोयरं कहता---आगाड़ी आधण मांहि साधु आया जाणी इधको ऊरी देवे तो दोष ।

---

१० दोष एषणारा ।

ग्रहस्थ तथा साधु दोनुं सुं लागे ।



१ शंकीए कहता---ग्रहस्थीने तथा साधुने

शंका पड़जाय तो साधु आहार लेवे नहीं।

२ मंखीए कहता---हाथरी रेखा तथा मूंछ रा बाल भीना हुवे तो आहार लेवे नहीं।

३ निखिते कहता---असुजती वस्तु ऊपर सुजती वस्तु हुवे तो आहार लेवे नहीं।

४ सुजती वस्तु ऊपर असुजती वस्तु हुवे तो आहार लेवे नही।

५ सायरे कहता---अप्रतीतकारी घरमें तथा अनेरा भाजनमें घालकर देवे तो आहार लेवे नहीं।

६ मीसे कहता---मिश्र चीज सुजती असुजती लेवे नहीं।

७ अपरणीते कहता---शस्त्र प्रणम्यो नहीं हुवे तो लेवे नहीं।

८ अंधेसे आहार लेवे नहीं।

६ लंते कहता—सुरंत री जागा लिप्योड़ी हुवे तो वहां लेवे नहीं।

१० छंदे कहता—छींटा पड़ता हुवे तो लेवे नहीं।

दशमी कालमें आहारका २३ दोष ।

१ दानठा कहता—दानरे अर्थे किनो हुयो जैसे—डाकोत विगेरहके वास्ते किनो हुयो आहार लेवणो कल्पे नहीं ।

२ पुण्यठा कहता—पुण्यरे अर्थे किनो हुयो, दूकानमें धरमादे रो निकालो हुयो तथा मुंवे रे लारे पुण्य रो कियो हुयो कल्पे नहीं ।

३ वांणीमगठा कहता—रांक भिखारीरे अर्थे कीन्यो हुयो आहार लेनो कल्पे नहीं ।

४ समणठा—बाबा, योगी, सन्यासीके अर्थे कियो लेनो कल्पे नहीं ।

५ नियागं कहता—नित्य प्रत्य एक घर रो आहार कल्पे नहीं ।

बैठो हुवे तो उल्लंघ कर आहर लेवणो कल्पे नहीं।

८ साणगं कहता—सवान (कुत्तो) बैठो होय तो उल्लंघ कर (डाककर) आहार लेवणो कल्पे नहीं।

९ वच्छगं कहता—गाय रो बाछड़ो बारने आगे बैठो होय तो उल्लंघ कर आहार लेवणो कल्पे नहीं।

१० अगाईता चलाईता कहता—आगो पाछो होयजाय जैसे---काचे पानीको लोटो हाथमें है, साधु, साधवी पधारयां देख, जाव तो पाछो घीर जाय या कोई सचित्त वस्तु हाथमें है साधु आया देख रख दे तो आहार लेणो कल्पे नही।

११ गोवणीकाल मासणी कहता—गर्भवती स्त्रीसे सातमें महीने पीछे आहार लेवे नहीं।

२२ थाणं पेजमाणी कहता—बालक चुंघते जैसे---बालक चुंघरहा है उस वख्त चुंघते छोडाय कर आहार वेहरावे तो लेवे नहीं ।

२३ नीयेदुवार तमसं कहता—कोठी ओवरी जो नीचो बारणो भीतर अधेरो पडतो होय तो ऐसे जागारो आहार लेवणो कल्पे नहीं ।

। श्री भगवती सूत्र मांहे १२ दोष अहार का ।

१ खेताइकंते—जो खेत्रमे रहे वहां सूर्य्य उगे (उदे) सुं पहले अहार लेवे तो दोष ।

२ कालाइकंते—पहले पोहरको लियो अहार चौथे पोहरमें भोगे तो दोष ।

३ मगाइकंते—दोय कोस उपरांत अहार लेय जाय भोगे तो दोष।

४ पमाणाइकंते—प्रमाणसुं अधिक आहार लेवे तो दोष।

५ आउए—गृहस्थ आयने नेत जाय, नेतियां आहार लेवे तो दोष।

६ कंतारभतं—अटवीमे पो वगेरह होवे उठे चीणा वगेरह वेंटता हुवे सो लेवे तो दोष।

७ दुभिखभतं---दुकालके समय दानशाला कोनी होय वहां आहार लेवे तो दोष।

८ वद्दलीयाभत---बरसाद आया कोई दातार भिखारीने कोई जागा आहार वांटतो होय वहां आहार धामे और लेवे तो दोष।

९ गिलाणभतं---रोगी गिलाणीरे अर्थे कियो हुयो आहार लेवे तो दोष।

१० सजोयणा---संयोग मिलाय कर आहार लेवे तो दोष।

११ अंगारेयं--- सराइ सराइ आहार लेवे तो दोष राग सहित लेवे तो चारित्रका कोयला हो जाय।

१२ धुमे---मस्तक (माथो) धुणी धुणी कुसराय कुसराय आहार भोगे तो दोष, द्वेष सहित आहार करे तो चारित्रको धुंवो होय।

श्री आवशकमें पांच दोष आहारका।



१ ऊघाड़ किवाड़ उघाड़नीया कहता—किवाड़ उघड़ाय कर आहार लेवे तो दोष।

२ मंडी पाहुडीया—शेष निकाल कर रखा है वह शेष लेवे तो दोष।

३ बलीपाहुडीया----बल बाकुलादिक आहार लेवे तो दोष।

दहीमें चडुआ मिलाय कर देवे तो लेवे नहीं याने पर्याय पलटाय कर देवे तो लेवे नहीं।

३ सहयागयं कहता—साधु आपरे हाथसुं औषध पाणी अलावे आहार लेवे तो दोष।

४ अनुत्तर बाहसमणठा कहता---भीतर सुं तीन बारना उपरांत को या अण दीसतो आहार लेवे तो दोष।

५ मोहरंच कहता---चारन, भाटरी तरह वरदावली करके आहार लेवे तो दोष।

श्री नसीयत सूत्रमें आहाररा ६ दोष।

१ पुजासियं कहता---बहुतसे मनुष्योमें से पुकार करके कहे कि "कोई यहां

दातार है" ऐसो कह कर आहार लेणो कल्पे नहीं।

२ अड़वीभतं (अटवीभतं) कहता---"ए ठाम में कांई, ए ठाममें कांई" ऐसो पुछ पुछ आहार लेणो कल्पे नहीं या मजुरादिक रे भाते रो आहार लेणो कल्पे नहीं।

३ पासंठाभतं कहता---ढीला पासंथा क्रिया रहित ऐसेका आहार लेणो कल्पे नहीं।

४ दुरगछा कुलंग कहता—नखेध कुल लोग दुरगंछा करे ऐसे निंदनीक (ढेढ चमरादि) कुल रो आहार लेणो कल्पे नहीं।

५ सभाए निसीए कहता—सिझातररो नेसराय रो तथा दलाली रो आहार लेणो कल्पे नहीं।

६ अनोथीयाभते कहता—अतिथी रोटी

टुकड़ा मांग कर लावे वह आहार लेणो कल्पे नहीं।

श्री उत्तराध्ययनजीमें आहाररा दोय दोष।

१ सनएपिंड कहता---नातीला गौतीला रो समएपिंड दोष।

२ मकारण (अकारण) कहता---विनाकारण चीज मांगकर लावे तो दोष।

श्री ठणांगजीमें आहाररा दोय दोष।

१ पावणा कहता---पावणेरे अर्थ कियो पावणा जीम्या पहिला लेवे तो दोष तथा

पावणा आगा पाछा किया आहार लेवै तो दोष ।

२ मसारे कहता---अमच मास आहार इत्यादि लेणो कल्पे नही ।

श्री दशाश्रुतस्कंधमें आहाररा दोय दोष ।

१ बलअठा कहता---बालकरे अर्थे कियो हुयो आहार बालक जीम्या पहिला लेवै तो दोष ।

२ गोत्रणठा कहता---गर्भवती स्त्रीके अर्थे कियो गर्भवती स्त्री जीमणे पहिला आहार लेवै तो दोष ।

श्री वेदकल्पमें आहाररो एक दोष ।



१ प्रासिया कहता---काल प्रमाण ऊपरको बासी आहार तथा अति स्निग्ध चीकना झरझरता आहार लेनो कल्पे नहीं ।

॥ इति शुभम् ॥

अधिको ओछो आगे पाछो लिख्यो होय तो मिच्छामि दुक्कडं ।

नोट—धारया हुवा उपयोगमें रहा सो लिख दिया है । आगम प्रमाणे श्री गुरु पासे धार शुद्ध करीजो ।



अथ साधुको बावन अणाचार लिख्यते।

(अण आचरण कहता आचरवा योग नहीं)



१ उदेशिक आहार भोगवे तो अणाचार, २ मोलरो लियो भोगवे तो अणाचार, ३ नित्य पिंड आहार भोगवे तो अणा०४ साहमो लायो भोगवे तो अणाचार, ५ रात्रि भोजन करे तो अणाचार, ६ स्नान करे तो अणाचार, ७ गन्ध कपुरादिक भोगवे तो अणाचार, ८ फूलारी माला भोगवे तो अणाचार, ९ विजणासुं वायरो लेवे तो अणाचार, १० स्निग्ध-वासि राखे तो अणाचार, ११ गृहस्थीरा भाजन में जीमे तो अणाचार, १२ राजपिंड भोगवे तो अणा०, १३ सत्रूकार (दान साला) रो भोगवे तो अणा०, १४ मरदन करे तो अणा०, १५ दांत पखाले मसी लगावे तो अणाचार, १६

J

गृहस्थीरी साता पूछै तो अणा०, १७ काच, पानीमें मूंढो देखेतो अणा०, १८ सत्रंजादिक रमत रमे तो अणा०, १९ जूवे रमे तो अणा०, २० छत्र माथे धारे तो अणा०, २१ सावद्य औषध तथा वैदगी करे तो अणा०, २२ पगरषी मोजा आदि पहरे तो अणा०, २३ अग्नि रो आरंभ करे तो अणा०, २४ पल्यंग मांचे ढोलिये पर बैठे तो अणा०, २५ गृहस्थरे घरे बैठे तो अणा०, २६ पिठी उगटणो करे तो अणा०, २७ गृहस्थ कनेसुं वयावच्च करावे तो अणा०, २८ जात जणायने आहार भोगवे तो अणा०, २९ मिश्र पाणी भोगवे तो अणा०, ३० गृहस्थरो सरणो वांछे तो अणा०, ३१ मूलो काचो भोगवे तो अणा०, ३२ आदो काचो भोगवे तो अणा०, ३३ सेलड़ी रा खंड भोगवे तो अणा०, ३४ कदमूलादिक भोगवे तो अणा०, ३५ मूल वृक्षादिक भोगवे तो अणा०,

६ सभ्यातरपिंड भोगवे तो अणा०, ३७ फल
डिमादि भोगवे तो अणा०, ३८ वीजतिलादि
गवे तो अणा०, ३९ सचित्तलूण भोगवे तो
णा०, ४० सिंधो लूण भोगवे तो अणा०,
१ समुद्रनो लूण काचो भोगवे तो अणा०, ४२
ागरनो लूण काचो भोगवे तो अणा०,४३ खारी
ण काचो भोगवे तो अणा०, ४४ कालो लूण
ाचो भोगवे तो अणा०,४५ वस्त्रने धूप देवे तो
णा०, ४६ वमन करे तो अणा०, ४७ गला
ठला केश लेवे तो अणा०, ४८ विरेचन करे
जाय पीय कर उलटी करे) तो अणा०, ४९
ांखमें अंजन घाले तो अणा०, ५० दांतण
रे तो अणाचार, ५१ शरीरमे तेलादि चोपड़े
अणाचार, ५२ शरीरकी विभूषा करे तो
णाचार ।

॥ इति बावन अणाचार सपूर्णम् ॥
॥ दसवीकाल अध्यायने ३ में जाणो ॥

७० गुण करण सित्तरीके ।

गाथा--पिंड विसोही समिइ भावण पढि-माय इन्द्रिय निरोहो पड़िलेहणागुत्तीओ अभिग्गाहचेव करणतु १ ।

पिंडविशुद्धिके ४ भेद—१ आहार पाणी सुंखड़ी सोपारी आदि फासुक निर्जीव विधि-युक्त लेवे, २ वस्त्र सूत ऊनके सफेद रंगके मानोपेत (साधुको ७२ हाथ और साध्वीको ९६ हाथ) निर्दोष ग्रहण करे, ३ काष्ठ, तुम्बे प्रमुखका पात्र यथा विधि लेवे, ४ अठारे प्रकारके निर्दोष स्थानक मालिककी आज्ञासे लेवे यह चार शुद्धि साचवे ।

५ सुमति युक्त सदा रहे, १२ भावना भावे, १२ पड़िमा धारे, ५ इन्द्री वसमें करे, २५ पड़िलेहणा, ३ गुप्ती, ४ अभिग्रह

द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव सब मिलके ७० गुण करण सित्तरीके हुये।

---

७० गुण चरण सित्तरीके।

गाथा---वयसमण धम्मसंयम वेयावच्चं च बंभ गुत्तीओ नाणाइ तीयंतव कोहोनिग्गहाइं चरणमेयं १।

५ महाव्रत १० प्रकारका साधु धर्म १७ संयम, १० वेयावच्चकरे, ९ वाड शुद्ध ब्रह्म चर्य पाले, ३ ज्ञान दर्शन चारित्र रत्नत्रयी आराधे, १२ भेदे तप करे, ४ कषाय निग्रह करे यह सर्व ७० चरण सित्तरीके गुण जाणना।

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

अथ सामाईककी पाटीयां तथा अर्थ ।

॥ अथ श्री नवकार मंत्र प्रारंभ ॥

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं । एसो पंच णमुक्कारो ; सव्व पावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ इति नमस्कारः ॥ १ ॥

अर्थ ---(अरिहंताणं) अरि एटले कर्म-रूप शत्रु, तेने हंताणं एटले हणनार, अर्थात् जेणे चार घनघाती कर्मरूप शत्रुनो नाश कर्यो अने जे चोत्रीश अतिशयोयें करी शोभित तथा वाणीना पांत्रीस गुणोयें करी विराजमान एहवा विहरमान

म्हारो (णमो) नमस्कार हो, (सिद्धाणं) जेरों
सकल कार्य साध्यां, अने जे आठ कर्म खपावी
मोक्ष नगरें पहोता अने एकत्रीश गुणोयें करी
सहित एवा श्रीसिद्ध भगवानने म्हारो (णमो)
नमस्कार हो, (आयरियाणं) जे पोते पांच
आचार पाले अने बीजाने पलावे छत्रीश गुणें
करी सहित एहवा श्रीआचार्यजीने म्हारो
(णमो) नमस्कार हो, (उवज्झायणं) जे शुद्ध
सूत्राक्षर पोते भने, अणो बीजाने भणावे तथा
पच्चिश गुणें करी सहित एहवा श्री उपाध्याय-
जीने म्हारो (णमो) नमस्कार हो, (लोए)
अढीद्वीपरूप मनुष्य लोकने विषे, (सव्वसा-
हूणं) थिविर कल्पादिक भेदोवाला सर्व साधु
जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तपना साधनार
तथा जे सत्तावीश गुणें करीने सहित छे
तेहवोने म्हारो (णमो) नमस्कार हो, (एसो)
ए जे अरिहतादिक सबंधी, (पच णमुक्कारो)

पांच प्रकारनो नमस्कार छे ते केहवो छे? तो के (सव्वपाव) ज्ञानावरणादिक सर्व पाप तेहनो, (प्पणासणो) प्रकर्षे करी विनाशनो करणहार छे, वली ते केहवो छे? तो के (मंगलाणांच सव्वेसिं) सर्व मंगलमांहे (पढमं) प्रथम एटले मुख्य, (मंगलं) मंगल (हवइ) छे ॥ १ ॥

॥ अथ तिख्खुत्तारी पाटी प्रारंभः ॥

॥ श्री मुनिराजकों वंदना करनेका पाठ ॥



तिख्खुत्तो, आयाहिणं, पयाहिणं करेमी, वंदामि, णमसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं पज्जुवासामि, मत्थएण वंदामि ।

अर्थ—(तिख्खुत्तो) त्रण वार, (आयाहिणं) आदक्षिणत, एटले वे हाथ जोडीने जीमण-

पासा थकी प्रारंभीने. (पयाहिणं करेमी) प्रदक्षिणा प्रत्ये करुं छुं. (वंदामि) वांदुं छुं, पगे लागुं छुं, (नमंसामि) मस्तक नमाड़ीने नमस्कार करुं छुं, (सक्कारेमि) सत्कार देवुं छुं, (सम्माणेमि) सन्मान देउं छुं, (कल्याणं) कल्याणकारी, (मंगलं) मंगलकारी, (देवय) धर्मदेव समान, (चेइयं) छकायका जीवने सुखदायक एवा ज्ञानवंत प्रत्ये (पज्जुवासामि) पर्युपासुं छुं एटले मन वचन कायाए करीने सेवा करुं छुं, (मत्थएण वंदामि) मस्तके करी वांदुं छुं ॥ २ ॥

॥ इति तिख्खुत्तारो अर्थ समाप्तम् ॥

सूचना—पूर्व तथा उत्तर दिशाकी तर्फ मुह करके तिख्खुत्ताके पाठसे पचाग नमाय ३ वखत् विधियुक्त वदना नमस्कार करके श्रीमहावीर स्वामीजीकी तथा अपने धर्माचाय (गुरुदेव) की तथा वखतपर जो कोई मुनिराज होवे उनके पाससे सामाईकका चोविसत्थव करनेकी आज्ञा लेना, फिर निम्नोक्त (नीचे लिखा) पाठ बोलना।

॥ अथ इरियावहीयानी पाटी प्रारंभ ॥



इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, इरियावहियं पडिक्कमामि, इच्छं, इच्छामि, पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, वीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसाउत्तिंग, पणग दग, मट्टीमक्कडा, संताणासंकमणे, जेमे जीवा, विराहिया, एगिंदिया, वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया ठाणाउठाणं, संकामिया, जीवियाउं, विवरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

अर्थ—(इच्छाकारेण) तुमारी इच्छा-पूर्वक, (संदिसह) आज्ञा करो तो, (भगवन्) हे महाभाग्य ज्ञानवंत । (इरियावहियं) चालवानो जे मार्ग तेमांहे थइ एवी जे जीववाधादिक

सपाप क्रिया ते थकी हुं (पडिक्कमामि) पडिक्कमुं, निवर्तुं ? इहां गुरु कहे, (पडिक्कमह) पडिक्कमो निवर्त्तो, पाप टालो, तेवारे शिष्य कहे, (इच्छं) प्रमाण छे, हुं पण (इच्छामि) इच्छुं छुं, (पडिक्क-मिउं) पाप कर्मसुं निवर्तण वास्ते, (इरियावहि-याए) गमन छे प्रधान मुख्य जेमा एवो जे मार्ग तेने विषे थती एवी जे (विराहणाए) जंतुओनी विराधना ते थकी, (गमणागमणे) जातांने आवतां, (पाण) प्राणीने, (क्कमणे) पगे करी चांप्या थकी, (बीय) बीजने, (क्कमणे) पगे करी चांप्या थकी, (हरिय) नीलवर्णवाली वनस्पति तेने, (क्कमणे) पगे करी चांप्या थकी, (ओसा) ठार ओस एटले सूक्ष्म अपकाय आकाशथकी पडे ते, (उत्तिङ्ग) कीडीयोनां नागरां कहता कीडी नगरा (पणग) पांचवर्णी नीलण फूलण, (दग) पाणी, (मट्टी) काची माटी, (मक्कडा) मर्कट, एटले कोलिआवडाना (संताणा) संतान,

ए सत्रने (संक्रमणे) पगे करी पीड़्याथकी अथवा मसल्याथकी, घणुंसुं कहुं १ (जे) जे कोई, (मे) मैं (जीवा) जीवो, (विराहिया) विराध्या होय दुःखमांहे पाड्या होय, (एगिंदिया) जेहने शरीर रूप एकज इन्द्री होय ते, पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पतिना जीव, (बेइन्द्रिया) शरीर तथा मुख ए दोय इन्द्रीवाला जे शंख, शीप, गंडोला, अलसीया, एहवा जेहने पग न होय ते बेन्द्रि, (तेइंदिया) तीन इन्द्रीवाला ते जेने शरीर, मुख, नाक होय ते, कुंथुवा, जु, लीख, मांकड़, कीड़ी प्रमुख जेहना मुख ऊपरे शिंग होय ते, (चउरिंदिया) चार इन्द्रीवाला ते जेने शरीर, मुख, नाकने आंख होय ते, माखी, मच्छर, डांस, वीछी, भमरी, टीडी जे उडणेरा, जीव जेने आठ पग तथा मस्तके शिंग होय ते, (पंचिन्दिया) पांच इन्द्रीवाला जेने शरीर, मुख, नाक, आंख अने कान

होय ते जलचर, खेचर, ए सर्वतिर्यंच जाणवा तथा मनुष्य, देव, नारकी ए सर्व पंचेन्द्रिय जीव कहिये, हवे ए सर्व जीवोने केवी रीते विराध्या होय? तेना प्रकार कहे छे, (अभिहया) सामा आवतां हण्या, (वत्तिया) एक ढिगले कर्या तथा धुलें करी ढांक्या, (लेसिया) भूमीमें घस्या तथा लगारेक मसल्या, (संघाइया) मांहोमांहे शरीरने मेलववे करी एकठा कीधा, (संघट्टिया) थोडो स्पर्श करवे करी दुहव्या (परियाविया) समस्त प्रकारे परिताप पमाड्या पाड्या, (किलामिया) गाढी किलामणा उपजावीने मार्या नहीं, पण मृतप्राय कीधा, (उद्दविया) त्रास पमाडीने हाली चाली शके नहीं एहवा कीधा, (ठाणाओ) एक स्थानक थकी उपाड़ाने, (ठाणं) बिजे ठेकाणं, (संकामिया) संक्रमाव्या मूक्या, (जीवियाओ) जीवित थकी, (विवरोविया) चूकाव्या, मार्या,

(ठामि) कायाने एक ठामे करूं छुं, (काउस्सग्गं) कायाने हलाववी नही ते रूप काउस्सग्गप्रत्ये करुं छुं, हवे इहां काया हलाववी नहीं, एवी प्रतिज्ञा करी छे, माटे शरीरनुं कांइ पण हालवुं थवाथी प्रतिज्ञानो भंग थाय तेथी कउस्सग्गमा चार आगार मोकला राख्या छे, (अन्नत्थ) उच्छ्वासादिक जे आगारो कहता अगार कहेसे, ते आगारो वर्जीने बीजे स्थानके कायाने हलाववानो नियम करुं छुं, तेना नाम कहे छे, (उससिएणं) ऊंचो श्वास लेवाथी, (निससिएणं) नीचो श्वास मूकवाथी, (खासिएणं) खासी आवे एटले खोखलो आव्या थकी, (छीएणं) छींक आया थकी, (जंभाइएणं) जाभली ते बगासूं लेवा थकी, (उड्डुएणं) ओडकार आया थकां, (वायनिसग्गेणं) वायु निकलतां थकां, (भमलिए) भ्रमरी चक्री आववाथी, (पित्तमुंच्छाए)

त्तरा क़ोपसूं मूर्छा आया थकां, (सुहुमेहिं)
ूक्ष्म थोड़ोक, (अंगसंचालेहिं) शरीर हलाव-
थी, (सुहुमेहिं) थोड़ो, (खेलसचालेहिं)
लेष्म तथा मुखना थूंकनुं चालववुं करवा
की, कफ गिलवा थकी, (सुहुमेहिं) सूक्ष्म
ोड़ी, (दिट्ठि संचालेहिं) चक्षु दृष्टी हलाववा
की, (एवमाइएहिं) ए आदि करीने बीजा,
आगारेहिं) आगार लेता थकां, (अभग्गो)
ांगे नही, खंडित हुवे नहीं, (अविराहिओ)
ानी पहोंचे नही, (हुज्ज) होजो, (मे) म्हारो,
काउस्सग्गो) काया स्थिर राखवी, (जाव) ज्यां
ुधी, (अरिहंताणं भगवंताणं) अरिहंत भग-
ाननने, (नमुक्कारेणं) नमस्कार करू त्यांसुधी,
नपारेमि) पाडु नहीं ध्यान संपूर्ण न करूं,
ताव) त्यांसुधी, (कायं) म्हारी कायानें,
ारीरने, (ठाणेणं) एक ठिकाणे स्थीरपणे
ाखीने, (मोणेणं) अबोलो रहीने (झाणेणं)

एकाग्र ध्यान तेणें करीने, (अप्पाणं) म्हारी काया ते प्रत्ये, (वोसिरामि) हुं तजुं छुं ।

॥ इति तस्सउत्तरीकी पाटी संपूर्णम् ॥

सूचना—इतना बोलके कायोत्सर्ग (काउसग) करणा, काउसगमे हाथ पैर मुंह शरीर वगेरे हलन चलन करणा नही, अपने शरीरको स्थिर रखना, काउस्सगमें इरियावहियाएकी पाटी, जीवियाउ ववरोविया तक मनमें गुणना फिर नमोअरिहंताण, ऐसा प्रगट मुंढेसे बोलके काउस्सग पाडणा, फिर निचेकी-पाटीया प्रकट बोलना ।

अथ चार ध्यानकी पाटी ।

काउस्सग्गमें आर्तध्यान, रूद्रध्यान ध्यायो होय, धर्म ध्यान, शुक्लध्यान नहीं ध्यायो होय तथा काउस्सग्गमे मन चल्यो होय, वचन चल्यो होय काया चली होय तो तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

अथ लोगस्सकी पाटी।



लोगस्सउज्जोयगरे, धम्मतित्थयरेजिणे, अरिहंते, कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली। १। उसभ १ मजिय २ च वंदे, संभव ३ अभिनंदणं ४ च सुमइं च ५। पउमप्पहं ६ सूपासं ७ जिणंच चंदप्पहं ८ वंदे ।२। सुविहिंच ९ पुप्फदंतं, सीयल १०, सिज्जंस ११, वासुपुज्जं च १२। विमल १३ मणंतं १४, च जिणं धम्मं १५ संतिं १६ च वंदामि ।३। कुंथुं १७ अरं १८ च मल्लिं १९, वंदेमुणि सुव्वयं २० नमिजिणं च। २१ वंदामि रिट्ठनेमिं २२, पासं तह २३ वद्धमाणं च २४ । ४। एवं मए अभिथुआ, विहुय रयमला, पहीण जरमरणा, चउवीसंपि, जिणवरा, तित्थयरा में पसीयंतु ।५। कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहिलाभ समा-

हिवर मुत्तमं दिंतु ।६। चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।७।

अर्थ—(लोगस्स) पंचास्तिकायात्मक लोक ने विषे, (उज्जोयगरे) उद्योतना करणहार, (धम्म) धर्म (तित्थयरे) तीर्थना करनार, (जिणे) रागद्वेषना जितनार एहवा, (अरिहंते) अरिहंतने, (कित्तइस्सं) कीर्ति करुं छुं, (चउवीसंपि) ऋषभादिक चोवीस परमेश्वर तथा अन्यनी, (केवली) केवलज्ञानी तीर्थंकरना नाम कहे छे, (उसभ) श्रीऋषभदेव स्वामी, (मजियंच) श्री अजितनाथ प्रत्ये, (वंदे) वांदुं छुं, (संभव) श्री संभवनाथ प्रत्ये, (मभिणंदणं) श्री अभिनंदन नाथ प्रत्ये, (च) वली, (सुमइं) श्री सुमतिनाथने, (च) वली (पउमप्पहं) श्री पद्मप्रभू स्वामी प्रत्ये, (सुपासं) श्री सुपार्श्वनाथजीने, (जिणं) रागद्वेषना

जितनार, (च) वली, (चंदप्पहं) श्री चन्द्र-
प्रभजीने, (वंदे) वांदु छुं, (सुविहिं) श्री
सुविधिनाथजीने, (च) वली, (पुप्फदंतं)
श्री पुष्पदंतजी प्रत्ये, (सीयल) श्री शीतल
नाथजीने, (सिज्जंस) श्री श्रेयांसनाथजीने,
(वासुपुज्जं) श्री वासुपूज्य स्वामी प्रत्ये, (च)
वली, (विमल) श्रीविमलनाथजीने, (मणंतं)
श्री अनंतनाथजीने, (च) वली, (जिणं)
रागद्वेषना जीतनार, एहवा (धम्मं) श्री धर्म-
नाथजीने, (संतिं) श्री शांतिनाथजीने (च)
वली, (वंदामि) वांदु छुं, (कुंथुं) श्री कुंथु-
नाथजीने, (अरं) श्री अरनाथजीने, (च)
वली, (मल्लिं) श्री मल्लिनाथजीने, (वंदे)
वांदु छुं, (मुणिसुव्वयं) श्री मुणीसुव्रतस्वामी
प्रत्ये, (नमिजिणं) श्री नमिजिणने (च)
वली, (वंदामि) नमस्कार करुं छुं, (रिट्ठनेमिं)
श्री अरिष्टनेमिजी प्रत्ये. (पासं) श्री पार्श्व-

नाथस्वामी प्रत्ये, (तह) तथा, (वद्धमाणं) श्री वर्द्धमान स्वामी प्रत्ये, हुं वांदुं छुं, (च) वली, (एवं) ए प्रकारे, (मए) म्हारे जीवे जे, (अभिथुआ) नामपूर्वकस्तव्या छे ते-चोवीस परमेश्वर कहवा छे? तो के (विहुय) टाल्या छे, (रयमला) कर्मरूपी रज तथा मैल, (पहीन) अतिशय करीने, (जरमरणा) जरा तथा मरणने जेणे क्षय कर्या छे, (चउवीसंपि) चोवीस तीर्थंकर तथा अन्य, (जिणवरा) जिनवर, (तित्थयरा) तथंकर ते, (मे) म्हारा ऊपर, (पसीयंतु) प्रसन्न होवो, (कित्तिय) कीर्तित छे, (वंदिय) वंदित छे, (महिय) पुज्य छे, इन्द्रादिक पूजे छे एहवा, (जे) जे तीर्थंकर, (ए) ए प्रत्यक्ष (लोगस्स) लोकने विषे, (उत्तमा) उत्तम एहवा, (सिद्धा) सिद्ध भगवन्त। तमे मुझने, (आरुग्ग) द्रव्य तथा भाव रोग रहित, (बोहिलाभं) श्री

जिनधर्मनी प्राप्तिनो लाभ थवाने अर्थे, (समाहिवर) प्रधान समाधि, उत्तम उत्कृष्ट ऊंची एहवी, (दिंतु) देवो, (चंदेसु) चंद्रमा थी अधिक, (निम्मलयरा) अत्यंत निर्मल, (आइच्चेसु) सूर्यसमुदाय थकी पण (अहिय) अधिक, (पयासयरा) प्रकाशना करणहार (सागरवर) प्रधान, छेल्लो स्वयंभुरमण नामा समुद्र तेनी परे (गंभीरा) गुणे करी गंभीर, (सिद्धा) एहवा जे सिद्धो ते, (सिद्धि) मुक्ति ते, (मम) मुझने, (दिसंतु) देवो ।

॥ इति लोगस्सकी पाटी संपूर्णम् ॥

'सूचना — तिक्खुत्ताके पाठसे विद्धियुक्त वदना करके गुरु माहाराजके पाससे सामाईक पञ्चक्खाणकी आज्ञा मागना, फेर निचेका पाठ बोलना ।

॥ अथ सामायिक लेवानी पाटी प्रारंभ ॥

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं, *मोहूर्तं, पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

अर्थ—(करेमि) हुं करूं छुं (भंते) हे पूज्य ! (सामाइयं) समता परिणामरूप सामायिकने, (सावज्जं) सावद्य काम, पाप, तेने (जोगं) मन वचन कायाना योग, करी (पच्चक्खामि) हुं निषेध करूं छुं, (जाव) ज्यां सुधी, (नियमं) सामायिक व्रतना नियमने (पज्जुवासामि) हूं

---

* महुर्त्त जितना करना होवे उतना बोलना, १ महुर्त्त ४८ मिनिटका समझना, ज्यादा बैठे तो लाभ है, मगर ४८ मिनिटसे कमी तो सामायिक करना नहीं, कमी करनेसे सामायिकमें दोष लगता है ।

सेवुं, त्यांसुधी, (दुविहं) दोय करनसुं (तिविहेणं) तीन जोगसूं (नकरेमि) हुं करूं नहीं (नकारवेमि) हुं दुजापासें न करावुं, (मणसा) मने करी, (वयसा) वचने करी, (कायसा) कायाए करीने (तस्स) ते सावद्य व्यापाररूप पापने, (भंते) हे भगवंत! (पडिक्कमामि) निवर्तुं छुं, (निंदामि) हुं आत्मानी साखे निंदुं छुं, (गरिहामि) गुरुनी साखे हुं विशेषें निंदुं छुं, (अप्पाणं) म्हारी आत्माने, ते दुष्ट क्रिया थकी (वोसिरामि) वोसिरावुंछुं विशेषे करीने तजुं छुं।

सूचना—यहां डाबा गोडा ऊँचा रखके बैठना और दोनुं हाथ जोडकर डाबे गोडेपर रखके नमुत्थुणका पाठ दो वक्त बोलना।

अथ श्री नमुत्थुणंनी पाटी प्रारंभः।

नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थगराणं, सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं,

पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीयाणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोग-हियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं, अ-भयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरण-दयाणं, जीवदयाणं, वोहिदयाणं, धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं, दिवोत्ताणं सरण-गइपइट्ठाणं, अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, वोहियाणं, मुत्ताणं मोय-गाणं, सव्वन्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मक्खय मव्वावाह मपुणरावित्ति, सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं, संपत्ताणं, नमो जि-णाणं, जियभयाणं ॥ १॥ इति ॥ ७ ॥

अर्थ :—(नमुत्थुणं) नमस्कार होवो, (अरिहंताणं) श्री अरिहंत देवने, (भगवं-ताणं) भगवंतने, (आइ गराणं) धर्मना

आदिना करनारने, (तित्थगराणं) तीर्थना स्थापणार एटले साधु, साधवी, श्रावक, अने श्राविका, ए चार जातना तीर्थना स्थापनार, (सयंसंबुद्धाणं) पोते सम्यक प्रकारे तत्वनो जाण थया, (पुरिसुत्तमाणं) पुरुष मांहे उत्तम, (पुरिससीहाणं) पुरुष माहे सिंह समान, (पुरिसवरपुंडरीयाणं) पुरुष माहे पुंडरीक कमल समान, (पुरिस) पुरुष माहे, (वर) प्रधान, (गंधहत्थीणं) गन्ध हस्ती समान, (लोगुत्तमाणं) लोक मांहे उत्तम, (लोगनाहाणं) लोकना नाथ, (लोगहियाणं) लोकना हितकारी, (लोगपईवाणं) लोकने विषे दीपक समान, (लोगपज्जोयगराणं) लोकमांहे उद्योतना करणार (अभयदयाणं) अभय दानना देणार. (चक्खुदयाणं) ज्ञानरूप चक्षुना देणार, (मग्गदयाणं) मोक्ष मार्ग देणार, (सरणदयाणं) सरणना देण

(जीवदयाणं) संयम जितव-जिवतरना देणार, (बोहिदयाणं) समकित रूप बोधना देणार, (धम्मदयाणं) धर्मना देणार, (धम्मदेसियाणं) धर्मना उपदेशना देणार, (धम्मनायगाणं) धर्मना नायक, (धम्मसारहीणं) धर्मरूप रथना सारथी, (धम्म) धर्मने विषे, (वर) प्रधान (चाउरंत) चारगतिनो अंत करवा माटे, (चक्कवट्टीणं) चक्रवर्ति समान, (दिवोत्ताणं) ससार समुद्रमा द्वीप समान, दुःखना निवारण करनार, (सरणगइपइट्ठाणं) सरण गतिना स्थानक भूत शरणागत वत्सल, (अप्पडिहय) नहीं हणाय एवुं, (वर) प्रधान, (नाण) ज्ञान, (दंसण) दर्शन (धराणं) धरणार, (विअट्टछउमाणं) छद्मस्तपणु गयुं छे, एटले कर्मरूपी आवरण, क्षयकीधा (जिणाणं) राग द्वेषने जीत्या छे, (जावियाणं) बिजाने राग द्वेष थकी जिताव्या छे, (तिन्नाणं)

संसाररूपी समुद्र तर्या छे, (तारयाणं) बिजाने संसार-समुद्र थी तारे छे, (बुद्धाणं) पोते तत्व ज्ञानने समज्या, (बोहियाणं) बिजाने तत्वज्ञान समजावणार, (मुत्ताणं) पोते चातुर्गतिक विपाक विचित्र कर्मथकी मुकाणा तथा (मोयगाणं) बीजा भव्य प्राणीने कर्म थकी मुकावणार छे, (सव्वन्नूणं) सर्व ज्ञानी छे, (सव्वदरिसिणं) सर्व पदार्थना देखणार छे, (सिव) सर्व उपद्रव रहित (मयल) अचल (मरुए) रोग रहित, (मणंत) अनंत ज्ञानादि चतुष्टये करी युक्त छे, मांटे अनंत छे, (मक्खय) सर्व काल निश्चल, (मव्वबाह) बाधा पीडारहित, (मपुणरावित्ति) जे गति थकी फरी संसारने विषे अवतार लेवो नथी, एहवी (सिद्धिगई) सिद्ध गति छे, (नामधयं) एवुं नाम, (ठाणं) एवुं स्थानक (संपत्ताणं) मोक्ष नगर प्रत्ये पाम्मा छे, एहवा अरिहंत

लेइने एक नवकार गुणीने "इरियावहियानी" पाटी भणावी ;, पछी तस्स उत्तरीनी पाटी भणी ने काउस्सग्ग करवो, काउस्सग्गमांहि "इरियावहियाएथी मांडीने जीवियाऊ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कड" सुधीनो पाठ मनमां बोलीने एक नवकार मनमां कहीने काउस्सग्ग पारवो, पछी प्रगट "लोगस्सकी" पाटी कहीने सामायिकनी आज्ञा लेईने "करेमि भंतेनी" पाटी "जावनियमं" सुधी कहीने आगल मुहूर्त्त (घालणो हुवे तिके) घालणो, पछी "पज्जुवासामि" थकी "अप्पाणं वोसिरामि" सुधी पाठ कहीने सामायिक पच्चक्खवो, पछी डाबो गोडो उभो करीने दोयवार "नमुत्थुणं" नी पाटी केहवी, दुजा नमुत्थुणं ने छेहडे "ठाणं संपाविऊ कामस्स "नमो जिणाणं" एम केहवुं, अने सामायिक पारती वेला "इरियावहीया,तस्स उत्तरी" नी पाटी भणीने काउस्सग्ग करवो,

पछी काउस्सग्गमांहे इरियावहियानी पाटी कहिने एक नवकार गणीने काउस्सग्ग पारवो, पछी "लोगस्स" भणी "नमुत्थु णं" दोय वार ऊपर लिख्या मुजब कहीने नवमा सामायिक-व्रतनी पाटी "अणुपालियं न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं" सुधी कहीने तीन नवकार गणीने सामायिक पारवुं ।

❋ विशेष गुरु गम्यसे धारे ❋

॥ इति श्री सामायिक अर्थ विधि समाप्त ॥

नोट :—पूर्व तथा उत्तर दिशाकी तर्फ मुह करके सामायिक करे और श्री गुरु महाराजके पास बैठा होय तो मुह श्री गुरु महाराजकी तर्फ रखे श्री गुरु महाराजकी व्याख्याण (वखाण) वाणी सुणे श्री गुरु महाराज फरमावे उसमें उपयोग रखे और धारे ।

॥ अथ प्रश्नोत्तर वाक्य संग्रह ॥

प्रश्न	उत्तर
१ भणनो कांई ?	गुरु पासे

२ तजणो कांई ? संसार कार्य,
३ सुणीये कांई ? सदुपदेश,
४ पारनहीं पाय एसो कांई ? स्त्री चरित्र,तृष्णा,
५ लघु छोटो कांई ? याचना करणीसो,
६ निद्रा कांई ? मूढ पणो,
७ चन्द्र तुल्य शीतल कांई ? सुजनरो समागम,
८ सुख कांई ? आत्म विरति, संतोष,
९ सत्य सार कांई ? उपकार, सर्व प्राणीको हित करणोसो,
१० जीवने वल्लभ कांई ? प्राण,
११ अनर्थ फलदायक कांई ? चंचल मन,
१२ मरण कांई ? अति मूर्खपणो,
१३ अमूल्य कांई ? मोकेमें काम आवें सो,
१४ सर्व गुणको मूल कांई ? विनय,
१५ सर्व धर्मको मूल कांई ? दया,

कलहरो मूल कांई ?	हासि,
७ सर्व रोगरो मूल कांई ?	अजिर्ण,
८ सर्व बंधणरो मूल कांई ?	स्नेह राग,
९ सर्व पापरो मूल कांई ?	लोभ, परिग्रह,
१० पवित्र जन कोण ?	शुद्ध मनवालो,
११ निन्द्रावान कोण ?	अविवेकी, शून्य चित्तजन,
१२ चोर कोण ?	पंचेन्द्रिका विषय,
१३ वैरी कोण ?	मान, अनुद्योग,
१४ घणो अन्धो कोण ?	संसार रागी,
१५ चतुर कोण ?	स्त्री चरित्रसें अखंडित रहे सो,
१६ जाग्रण कोण ?	विवेकी जन,
१७ मित्र कोण ?	पापसे निवृत्तावेसो
१८ आंधो, बहेरो अने मूर्ख कोण ?	अकृतकार्य करनेवालो, हित वचन सुणनेवालो अने समय अनुकूल न बोलने वालो,

२६ डाह्यो कोण ?	संसार घटावे सो;
३० यौवन, धन, आयु कैसा ?	कमल पत्रपर पाणी री बुंद जैसा,
३१ अप्रीति कहां रखणी ?	पर स्त्रीमें, पर धनमें, कपटमें,
३२ जगत कोण जित्यो छे ?	सत्य तितिक्षावान-वैराग्यवंत पुरुष,
३३ बुद्धिमान कोणसें भय पावे ?	संसार सागरसे,
३४ प्राणी वश केने रहे ?	सत्य, प्रिय वचन तथा विनयवानके,
३५ स्नेह किसका जाणीजे ?	सुधर्ममें स्नेह होय उसका,
३६ सुजनको कहां ऊभो रहेणो ?	पक्षपात टालके न्याय-मार्गमें,

पांच व्यवहार श्रीभगवती सूत्रमें कहे सो लिख्यते ।

पंच व्यवहार पणते तंजहा आगमो सुय आणा धारणा जीए ।

(१) पहलो आगमो व्यवहार ।

श्रीतीर्थंकर केवलज्ञानी चौदह पूर्व ज्ञानके धारक जावत् दश पूर्वधारी प्रवर्तते होए उनकी आज्ञामें प्रवर्ते सो आगम व्यवहार ।

(२) दुजो सुय व्यवहार ।

आचारंगादिक सूत्रोंमें कहे मुजब प्रवर्ते सो सूत्र व्यवहार ।

(३) तीजो आणा व्यवहार ।

जिस वक्त जो आचार्य प्रवर्ते होए उनकी आज्ञामें-प्रवर्ते चले अथवा आचार्य दूर-देशावरमें विचरते होए वह पत्र द्वारा गुढार्थादी कर जो आज्ञा देवे उसमें प्रवर्ते सो आणा व्यवहार ।

(४) चौथो धारणा व्यवहार ।

पूर्व परम्परासे चलता आता आचार गोचरादिकमें प्रवर्ते तथा गुरुवादिकसे धारणा कर रखी होवे उस मुजब प्रायश्चित देवे सो धारणा व्यवहार ।

(५) पांचमो जीए व्यवहार ।

द्रव्यक्षेत्र काल भावमें फरक पड़ा देख या संघयणादिककी हीणता देख आचार्य और चतुर्विध संघ मिलकर जो निर्वद्य मर्यादा बांधे उस मुजब प्रवर्ते—चले सो जीए (जित) व्यवहार। इन पंच प्रकारके व्यवहार मुजब प्रवर्तता हुवा भगवतकी आज्ञाका उल्लंघन नहीं करता है ।

॥ इति ॥

॥ शुभं भवन्तु ॥

ओछो अधिको आगो पाछो लिख्यो होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

सेवं भंते सेवं भंते ।



ॐनमस्सिद्ध

॥ श्रीवीतरागदेव ऋषभ जिनेश्वराय नमः ॥

श्री छत्तीस बोल संग्रह

द्वितीय भाग

॥ मङ्गलाचरण ॥

ओंकार उदार अगम्य अपार संसारमें सार पदारथ नामी। सिद्धि समृद्धि सरूप अनूप भयो सबही सिर भूप सुधामी ॥ मन्त्रमें यन्त्रमें ग्रन्थके पन्थमें जाकुं कियो धुर अन्तरजामी। पञ्चहि इष्ट वसै परमिष्ट सदा ध्रमसी करै ताहि सलामी ॥१॥

॥ दोहा ॥

बोल छतीस नाम है, कीना भवि उपकार।
गुरु मुखसे धारजो, द्वितीय भाग सुजाण ॥१॥
गुरु समीपे जायने, लीजो अर्थ विचार।
भणीगुणीने सिखजो, जिन आज्ञा अनुसार ॥२॥
भैरोदान अर्ज करे, मत कीजो कोई ताण।
सूत्रार्थ जाणुं नही, केवली भाषित परमाण ॥३॥
बहु ग्रन्थे संचै कीयो, अल्प बुद्धि अनुसार।
भूल चुक दृष्टि पड़े, लीजो विद्वान सुधार ॥४॥

॥ उपदेशी दोहा ॥

समझ ज्ञान अकुर है, समझ टाले दोष।
समझ समझ संसारमें, गया अनंता मोक्ष ॥१॥
समझू संके पापसुं, अण समझु हरखंत।
वह लुखा वह चिकणा, इण विध कर्मबधंत॥२॥
ज्ञानी, गरीब, गुरु वचन, नरम वचन निरदोष।

इतरा कदे न छोडिये, शरधा शील संतोष ॥३॥
खरो मारग वीतरागरो, सूक्ष्म जेहना भेद ।
सेंठा होयकर शरधजो, मनमें राखी उमेद ॥४॥
जवर, चुड़ेनी, जायफल, साधणीने सेण ।
इतरा तो भारी भला, वलेज मुखरा वैण ॥५॥
जलकी शोभा कमल है, दलकी शोभा पील ।
मनकी शोभा धर्म है,ज्युं कुलकी शोभा शील॥६॥
साध साध सब नाम है, आप आपकी दोड ।
पांचु इन्द्री बस करै, तो माथेका मोड़ ॥७॥
कृपा करता साधजी, विचरे देश प्रदेश ।
भवि जीवांने तारता, दे दे धर्म उपदेश ॥८॥
साधु बड़े परमारथी, मोटो जिनको मन ।
भर भर मुट्ठी देत है, धर्मरुपी थो धन ॥ ६ ॥
साधु संगत जब हुवै, जागै पुण्य अंकुर ।
काईक रसायण ऊपजे, तो जाय दलद्र दूर ॥१०॥
साधु सत्तका सुपडा सत्तही सत्त भाषंत ।
छाड़ पछाड़े तुतड़ा, कणही कण राखंत ॥११॥

रोमने सुखकारी होवे, इसो मर्दन करे पीछे ऊनो शीतल सुगधी ए तीन पाणीसुं स्नान करावें, चौसठ तरकारी बत्तीस पकवान हाथे जीमावे, पीछे कांधे लेइने फिरे, तो पिण भगवंते कह्यो के मातापितासुं ऊरण न थावे, परं केवली परूप्या धर्मने प्रवर्त्तावे तिवारे उसरावण थावे १, बोले गुरुसें शिष्य उसरावण न थावे, अन्तर पिण जिका गुरां पासें शिख्यो हुवे, जिकांरो विनय करे घणी सेवा भक्ति करे उपगार मेटे नही। धर्मरे प्रभावे गुरांरे प्रभावे मरी देवता हुवे घणी रिद्धि पामे एक प्रस्तावे तेहीज गुरु विहार करता अटवी उजाडमांहि भूल्याथका देवता आवीने वसतीमांहि मेले, पछे रोग कोढ आय ऊपनाथका दुःखी छे, आपदा भोगवे छे; ते देवता आवीने रोग उपसमावे, सुखसाता करे तो पिण गुरु तथा गुरुणीसुं

उसरावण नहीं थावे, तिवारे गुरुरी तथा गुरुणीरी धर्म ऊपरसुं आसता ऊतरी जाणीने ते देवता हेतयुक्त करीने केवली परूप्या धर्ममे प्रवर्त्तावे तिवारे ते देवता गुरुसुं तथा गुरुणीसुं उसरावण थावे २, तीजे बोले वाणोतर (गुमास्ता) शेठसं उसरावण नहीं थावे, शेठने आपदा पड़ी हुवे वाणोतररी पुण्याइ वधी छे, शेठरी पुण्याइ हीणी छे, तिवारे वाणोतर शेठसुं पाछो उपगार करे, तो पिण उसरावण नही थावे, केवली परूप्या धर्मने प्रवर्त्तावे तिवारे उसरावण थावे 'शेठसुं वाणोतर" ३।

३ तीन गारव, इड्डिगारव कहता—रिद्धिरो गारव पाना, पुस्तक, शिष्य साखा, भंडोपगरण, जेहनो अहंकार करे ते इड्डिगारव १. बीजो रसगारव आहार सरस मिले तेहनो अभिमान करे एहवा सरस आहार हमने

मिले छे बीजाने मिले नहीं ते रसगारव २, तीजो सातागारव—सुखसातारो गरव अभिमान करे हमने सुखशाता छे इसी दूजा केहने नही ते सातागारव ३ ।

३ तीन शल्य—मायाशल्य १, नियाणाशल्य २, मिथ्यात्वदर्शणशल्य ३ ।

३ तीन विराधना—ज्ञान अकालने विषे भणे, ज्ञानरो विनय न करे, ज्ञानवंतनी असातना करे, ज्ञान भणतां गुणतां आलस मोडे अडपला (ओटो) लेवे, जिणरे पासे ज्ञान भणीयो हुवे तेहनो उपगार मेटे तिणारा अवगुणवाद बोले ते नाणविराधना १, बीजी दर्शन विराधना, समक्त पर शंका कंखा आवे, समक्तोसुं द्वेष करे, मिथ्यात्वीनी प्रशंसा करे, साधुसुं द्वेष करे, तेहनी निंदा करे, दर्शण विराधक सिजे नहीं ते दर्शनविराधना २, तीजी चारित्रविराधना

उत्तरगुणनुं दोष लगावे शरीररी सुश्रूषा करे ते चारित्रविराधना ३ ।

॥ चौथो बोल ॥

४ केवलीने इन्द्रिनो विषय न होय केवलज्ञाने सर्व जाणे, सिद्ध केवलीने दश प्राण हुवै नहीं भाव प्राण च्यार होवै ते अनंतो ज्ञान १, अनतो दर्शण २, अनंता सुख ३, अनंत शक्ति ४ ।

४ च्यारपात्र—अरिहंत १, साधू २, देशव्रती ३, सम्पगदृष्टी ४ ।

४ च्यार अजीर्ण—तपस्यारो अजीर्ण क्रोध १, भणीयेरो अजीर्ण अहंकार २, कार्यरो अजीर्ण विकथा ३, लोकमें अन्नरो अजीर्ण वमन ४ ।

४ च्यार प्रकारे क्रोध उपजे—क्षेत्र निमित्त

क्रोध उपजे १, वस्त्र निमित्ते क्रोध उपजे २, शरीर निमित्ते क्रोध उपजे ३, उपगरण निमित्ते कोध उपजे ४।

४ च्यार बोल जीपतां (जीतणा) घणा दोहीला छे, व्रतमांही शीलव्रत पालनो दोहिलो १, आठ कर्म मांही मोहनी कर्म जीतणो दोहिलो २, पांचे इन्द्रियमाहीं रसेन्द्रिय जीतणी दाहिली ३, तीनु योगांमांही मनरो योग जीतणो दोहिलो ४।

४ च्यार बोल पावणा दोहिला छे, पांच ज्ञानमांही केवलज्ञान पावणो दोहिलो छे १, लेश्या छव मांही शुक्ललेश्या पावणी दोहिली छे २, च्यार ध्यानमांही धर्मध्यान शुक्लध्यान पावणां दोहिला छे ३, भरयोवनमांही शील पालनो दोहिलो छे ४।

४ च्यार बोल करवा महादोहिला (दुर्लभ) तरुणवयमें शील पालनो दोहिलो १, छता

भोग छांडीने दिक्षा लेवणी दोहिली २, क्षमाकरणी दोहिली ३, कृपणने दान देवणो दोहिलो ४ ।

४ च्यार वात अकलदारीकी, जागतां तो चोर नासे १; क्षमा करता कलह नासे २, उद्यम करता दारिद्र नासे ३, भगवन्तरी वाणी सुनता पाप नासे ४ ।

॥ अथ पांचमो बोल ॥

५ पांच बोल दुर्लभः—शास्त्रका अर्थ समझणा दुर्लभ १, भेदानुभेदकी शंका निकालनी दुर्लभ २, तत्व सरदहणा दुर्लभ ३, परीसह सहणो दुर्लभ ४, चारित्र पालणो दुर्लभ ५ ।

५ पांच प्रकारके साधू अवंदनीय---पासत्था १, उसन्ना २, कुशीलीया ३, संसता ४, अह-

च्छंदा ५, ॥१॥ पासत्थाके दोय भेद (१) सर्वतो पासत्था सो ज्ञान दर्शन चारित्रसे भ्रष्ट, फक्त वेश मात्र, (२) देशवृती पासत्था १०८ दोष युक्त आहारले, लोच नहीं करे, ॥२॥ उसन्नाके दोय भेद (१) सर्व उसन्ना साधुके निमित्त निपजाये हुये स्थानक पाट भोगवे (२) देश उसन्ना दो वख्त प्रतिक्रमण पडिलेहण आदि न करे तथा अस्थान छोड़ घरो-घर फिरता फिरे, अयोग्य ठिकाणे ग्रहस्थके घरमें विना कारण बैठे, ॥३॥ कुशिलियाके ३ भेद नाणकुशिलिया, (१) ज्ञानके आठ अतिचार, (२) दशणकुशिलीया सम्यक्तके ८ अतिचार, (३) चारित्र कुशिलीया चारित्रके ८ अतिचार यों २४ अतिचार लगावे, ॥४॥ संसता जेसे गायके वांटेमें अछा बुरा सब भेला कर देवे तैसे उसकी आत्मामें गुण-अवगुण सड़वड़ होवे उसे अपणे गुण

अवगुणकी कुछ खबर नहीं, इसके दो भेद (१) संक्लिष्ट-क्लेशयुक्त, (२) असंक्लिष्ट क्लेश-रहित, ॥५॥ अहच्छंदा (अपच्छंदा) गुरुकी, तीर्थंकरकी, शास्त्रकी आज्ञाका भंगकर अपनेही इच्छानुसार चलै जैसे ऋद्धिका, रसका, साताका यह तीन ही का गर्व करे, उत्सूत्र मनमाना परुपे सो अपच्छंदा, यह पांच बंदनाके अयोग्य है।

५ पांच ठामे गुरुने वंदना दीजै—प्रसन्नचित्त गुरुको होय तो वंदना कीजै १, आसन बैठा होय तो वंदना कीजै २, उपशांत होय तो बंदना कीजै ३, उठता न होय तो वंदना कीजै ४, आज्ञा होय तो वंदना कीजै ५।

५ पांच प्रकारे सिज्झाय—वाचना १, पृच्छना २, परिअटना ३, अनुप्रेक्षा ४, धर्म कथा ५।

५ पांच प्रकारे अचित्त वायरो ऊपजे तिण करी सचित्त वायरो हणीजे; पहिले दबके

ना कठे क्षमा करे जठे २, धर्मरी वधोतरी कठे तपस्या करे, दान देवे जठे ३, धर्मरी पुष्टाइ कठे उपसर्ग ऊपजते चढ़ता परिणाम राखे जठे ४, धर्मरो विनाश कठे क्रोध मान माया लोभ व्यापे जठे ५ ।

५ पांच पडिलेहणारी वेदका जाणवी, पहिली गोडारे ऊपरे हाथ राखीने पडिलेहण न करे १, बीजी गोडारे नीचे हाथ राखीने पडिलेहण न करे २, तीजे गोडारे पाखती हाथ राखीने पडिलेहण न करे ३, चौथे गोडारे विचे हाथ राखीने पडिलेहण न करे ४, पांचमी एक हाथ गोडारे विचाले अने एक हाथ गोडा ऊपरे इसी तरह पडिलेहण न करे ५ ।

५ पांच गुणारा धणीने भणावो आवे, विनीत हुवे ते भणे १, उद्यमवन्त भणे २, निर्मल बुद्धिरो धणी भणे ३, उपयोगवंत भणे ४, आजीविका हुवे तो भणे ५ ।

॥ छठो बोल ॥

६ संघेण छय धरनेवालोंकी गति---छेवट्ठा संघेणको धणी चौथा देवलोक उपरान्त न जावे १, कीलका संघेणवाला छट्ठा देवलोक तक जावे २, अर्द्धनाराच संघयणवाला आठमा देवलोक तक जावे ३, नाराच संघयणवाला दशमा देवलोक तक जावे ४, ऋषभनाराच संघयणवाला बारमा देवलोक तक जावे ५, वज्रऋषभनाराच संघयणवाला मुक्ति तक जावे ६।

६ छेवट्ठा संघयणवाला पहिली दूजी नारकी तक जावे १, कीलका संघयणवाला तीजी नारकी तक जावे २, अर्द्धनाराच संघयणवाला चौथी नारकी तक जावे ३, नाराच संघयणवाला पांचमी नारकी तक जावे ४, ऋषभ नाराच संघयणवाला छट्ठी नारकी

तक जावे ५, वज्रऋषभ नाराच संघयणवाला
सातमी नारकी तक जावे ६ ।

६ बोल छत्र, वादर पृथ्वीकाय सात नरक बारह
देवलोक नवग्रैवेयक पांच अनुत्तर विमान
सिद्धसिला लग छै १, बादर अपकाय सात
नरक बारह देवलोक लग लाभे २, बादर
तेऊकाय अढाई द्वीप सीम लाभे, नदी, मेह
मनुष्यना जन्म मरण प्रमुख अढाई द्वीप
माहें हुवे आगल नहीं ३, बादर वायुकाय
सगलै लोक माहें लाभै ४, बादर बनस्पति-
काय सात नरक बारह देवलोक सीम लाभे
५, बेइन्द्री १, तेइन्द्री २, चौइन्द्री ३, जीव
श्रीछै लोक माहें लाभै, ऊर्द्ध लोके मेरु पर्वतनी
बावडी प्रमुखे लाभे, अधोलोके मेरु पर्वतथी
पछिम दिसे छेहली दोय विजय अधोभूमी
ग्रामने विषे लाभे, त्रस जीव लोकने मध्यवर्त्ती
एक राज प्रमाण त्रस नाडि लाभे, सूक्ष्म

- प्रथ्वीकाय आदि देइ पंच थावर सगले लोक मांहे लाभै ६, इति षट्काय विचार ।

६ बोल छव, भाव श्रावकके लक्षण---जिन्होने व्रत आदि किये हैं १, जिनके शीलादि गुण सत्य है २, सत्य न्यायके पक्षी है ३, निष्कपटी सरल व्यवहार साधन करते हैं ४, विधि सहित गुरुकी सेवा करते हैं ५, जिन शासनका अभ्यास करके कुशल है ६ ।

६ बोल छव गुणठाणेका, चौदह गुणठाणामें १ पहिलो तथा चौदमो छोड-कर बाकी १२ गुणठाणा सजोगी नियमा भव्यीमें पावे १, पहिलो दूजो तेरमो चौदमो गुणठाणो छोड कर बाकी १० गुणठाणा नियमा रुद्मीमें पावे २, पहिलेसुं तीजो बारहमें सुं चौदमो छोडकर ८ गुणठाणा उपशमसम्यक्तमें पावे ३,पहिलेसुं चौथो इग्यारमेंसुं चौदमो छोडकर छव गुणठाणा सकषाइ व्रतीमें पावे

४, पहिलेसुं पांचमो दसमेंसुं चौदमो छोडकर ४ गुणठाणा सामायिक छेदोपस्थापनीय चारित्रमें पावे ५, पहिलेसुं छठो नवमेंसुं चौदमो छोडकर २ गुणठाणा अप्रमादि हास्यादिक नोकपाईमें पावे ६ ।

६ छकायना जीव किहां घणा किहां थोड़ा ते कहै छै---पुढवीकायना जीव पूर्व दिसै घणा ते स्यां माटे ? गौतम द्वीप छै ते माटे १, अप्पकायना जीव उत्तर दिसै घणा ते स्यां माटे ? मान सरोवर छै ते माटे २, तेऊ-कायना जीव पछिम घणा ते स्यां माटे ? मनुष्य घणा छै ते माटे ३, वायुकायना जीव दक्षिण दिशि घणा ते स्यां माटे ? तिहां पोलाड घणी छै ते माटे ४, वनस्पतिना जीव उत्तर घणा छै ते स्यां माटे ? जेमां मानसरोवर मध्ये कमल छे ते माटे ५, मनुष्य उत्तर अने दक्षिण थोड़ा छै तेहथकी

पूर्व-संख्यात गुणा अधिक तेह थी पश्चिममें पिण घणा ते स्यां माटे ? विजयकुंडी मनुष्य घणा ते माटे ६।

६ छव बोल नटनेरा याने नेकारो करणेरा लक्षण—लीलडमे सल घाले १, आंख्या मीचले, आधो देखै २, ऊंचो देखै, निची दृष्टि घाले ३, पराय से बात करणे लगजाय ४, मौन पकडले ५, काल विलंब करे ६; ॥ गाथा ॥ भिउड़े आधा लोचणं ऊँची परंमुहवयणं मौन कालविलंबो नाकारें छवी होय ॥ १ ॥

६ छव प्रकाररा जंबुद्वीपमें खेत्र, हेमवय १, एरणयवय २, हरिवास ३, रम्यकवास ४, देवकुरु ५, उत्तरकुरु ६।

६ छव पलिमथ ते विपरीत फल पावे, कुचेष्टा कुतुहल करे ते संयमरो पलिमंथ १, अलिक झूठ कहे ते संयमनो पलिमंथ २, आघो

पाछो दृष्टि देखे ते इर्यासुमतिरो पलिमंथ ३, तणतणाट गोचरीने विषे करे तो एषणासुमतिनो पलिमंथ ४, इच्छारो निरोधन करे तो निर्लोभीपणानो पलिमंथ ५, तप करीने नियाणो करे तो मोक्षनो पलिमंथ ६।

६ छव प्रकारे कुपडिलेहण करता जीव जन्म मरण वधारे, उतावली घणी करे १, अण पडिलेह्यां ऊपरे वेसे २, पडिलेह्यां अणपडिलेह्यां भेगा करे ३, वारंवार झाटकने जोवे नहीं ४, पडिलेहणा करीने वस्त्र आदि विखेर राखे ५, वेदिका रहित पडिलेहणा करे ६।

६ छव प्रकारे पडिलेहणा करतो जीव जन्म मरण टाले (घटावे), पडिलेहणा करतो शरीर वस्त्र नचावे नहीं १, पडिलेह्यां अणपडिलेह्यां भेला न करे २, ऊंची छातसे लगावे नहीं, नीचो धरतीसुं लगावे नहीं तिरछो भींतसुं वस्त्र लगावे नहीं, मर्यादा सहित पडिलेहणा

करे ३, छव प्रकारनी कुपडिलेहणा कही ते न करे ४, नव अखोडा नव पखोडा करे ५, प्राणी जीवने देखे दयारे निमित्त पडिलेहणा करे ६ ।

॥ सातमो बोल ॥

७ सात नारकीना नाम, गोत्र, आऊखो विस्तार पणै कहे छे, पहली घमा---रत्नप्रभा पृथ्वी नारकीनो आउखो जघन्य १० हजार वर्षनो उकृष्टो १ सागर, दूजी वंशा---शर्कराप्रभा पृथ्वीनु आउखो जघन्य १ सागरोपम उकृष्टो ३ सागर, त्रिजी शैला---वालूका प्रभानो आउखो जघन्य ३ सागर उकृष्टो ७ सागर, चौथी अंजना—पंकप्रभा पृथ्वी नारकीनो आउखो जघन्य ७ सागर उकृष्टो १० सागर, पांचमी अरिष्टा (रिट्ठा)—धूमप्रभा

आपतमें आंतरो ११५८३ योजन एक योजन रा तीन भाग तिकेरो १ भाग अधिक जाणीजो पत्र ४० ।

चोथी नारकीमे ७ पाथड़ा—आपतमें पाथड़े पाथड़े आंतरो १६१६६ योजन रा ३ भाग तीकेरा २ भाग अधिक जाणीजो पत्र ४० ।

पत्र ३० ओली आठवी अवधि ज्ञान जघन्य २॥ गाउ "अवधि ज्ञान कहणो" पत्र ३५

ओली नवमी बेहु पासै छै तिको चहु पासे कहणो पत्र ३८ ।

ओली छठी तथा इग्यारमी मधे बभर छै तिको वज्जर कहणो ।

१३ एक एक पाथडानुं पिंड तीन सहस्र योजन, लांवा पहुला रत्नप्रभा प्रमाण, तेरह पाथडांमें तीस लाख नरकावासा छै कित्तना एक नरकावासा असंख्याता योजनरा छै और कितनाएक नरकावासा संख्याता योजनना छे, जिहां असंख्याता नरकावासा छे तिहां असंख्याता नारकी छै, जिहां संख्याता नरकवासा छै तिहां सख्याता नारकी छे, तेहनी अवगाहना उत्कृष्टी पूणी आठ धनूष ६ अगुल, तेहनो आऊखो पूर्वोक्त, ते नारकीने कापोत लेश्या छै तिणे (उस) नरकावासै उष्णवेदना छै ते नारकीने अवधि ज्ञान जघन्य ३॥ (साढा तीन) गाऊ उत्कृष्टो च्यार गाऊं रत्नप्रभा हेठल वीस सहस्र योजन घनोदधिनूं पिड छै ते हेठल असंख्याता योजननो घणवातनो पिंड छै ते हेठल असंख्यता योजननो तणुंवातनो पिंड छै ए,

तिनो लांवा पहुला रत्नप्रभाप्रमाणे छै ते हेठल असंख्याता योजननुं आकाश छै ए रत्नप्रभानो विचार कह्यो १ ।

दूजी शर्कराप्रभा पृथ्वी—असंख्याता योजनना सहस्र लांवो पहुली असख्याता योजनना सहस्र परिधि, जाडपणे एक लाख वत्तीस सहस्र योजन प्रमाण छै, तिहां पाथडा इग्यारे एक एक पाथडानो पिंड जाडपणे तीन सहस्र योजन लांबा पहुला शर्कराप्रभा प्रमाणे छै तिणे नरके इग्यारे पाथडे पचवीस लाख नरकावासा छै केटला एक नरकावासा संख्याता योजनना छै तिहां संख्याता नारकी छै केटला एक नरकावासा असंख्याता योजनना छै तिहां असंख्याता नारकी छै तेहनो शरीर उत्कृष्टो साढापनर धनुष, अंगुल १२ ते नारकी ने कापोत, लेश्या छै तिणे नरकावासै ऊष्ण वेदना छै ते नारकी ने, अवधि ज्ञान जघन्य

तीन गाऊ उत्कृष्टो साढा तीन गाऊ शर्कराप्रभा. हेठल बीस हजार योजननो घणोदधिनो पिंड छै ते हेठल असख्याता योजननो घणवात छै ते हेठल असंख्याता योजननु तनुवातनु पिंड छै ए तीने लांबा पहुला शर्करा प्रभा प्रमाणे छे ते हेठल असंख्याता योजननु आकाश छै इनि दूजी शर्कराप्रभा विचार २।

तीजी वालूका प्रभा पृथ्वी—असख्याता योजनना लांबी पहुली असंख्याता योजननी सहस्र परिधि, जाडपणे एक लाख अट्ठाइस सहस्र योजन प्रमांण छै तिहां पाथडा नव एक एक पाथडानो पिंड योजन सहस्र तीन, लांवीपहुली वालूका प्रमाण छै तिहां नव पाथडा पनरे लाख नरकावासा छै, केतला एक नरकावासा संख्याता योजनना छै तिहां संख्याता नारकी छै. केतलाएक

हेठल असंख्याता योजननो आकाश छै इति पकप्रभा विचार ४।

पांचमो धूमप्रभा पृथ्वी—असंख्याता योजनना सहस्र लांबी पहुली असंख्याता योजननी परिधि, जाडपणे एक लाख अठारे सहस्र योजन प्रमाण छै तिहां पाथडा पांच, एक एक पाथडानो पिंड योजन सहस्र तीन, लांबा पहुला धूमप्रभा प्रमाण छै तिहां पांचेइ पाथड़े तीन लाख नरकावासा छै कितनाएक नरका वासा संख्याता योजनना छै तिहां संख्याता नारकी केतनाएक नरकावासा असंख्याता योजनना छै तिहां असंख्याता नारकी छै तेहनो शरीर एकसो पचवीस धनूष प्रमाण, ते नारकीने २ लेश्या, नीललेश्या, कृष्णलेश्या, ते मांही नीललेश्याना घणा कृष्णलेश्याना थोड़ा वेदना २, शीतवेदना, ऊष्णवेदना २, ते मांही

शीतवेदना घणी उष्णवेदना थोडी ते नारकीने अवधि ज्ञान जघन्य डोढगाऊ उत्कृष्ट बे गाउं, धूमप्रभा हेठल वीशहजार योजननुं घणोदधिनु पिंड छे ने हेठल असंख्याता योजननु घनवातनुं पिंड छे ते हेठल असंख्याता योजननो तनुवातनुं पिंड छे ए तीनुं लांबा पहुला धूमप्रभा प्रमाणे छे हेठल असंख्याना योजननु आकाश छे इति पांचमी पृथ्वी धूमप्रभानो विचार ।

छठी तमप्रभा पृथ्वी---असंख्याता योजननुं सहस्र लांबी पहुली असंख्याता योजनना सहस्र परिधि, जाडपणे, एकलाख सोले हजार योजन प्रमाण छे तिहां पाथड़ा तीन; एक एक पाथडानु पिंड तीन हजार योजन, लांबा पहुला तम प्रभा प्रमाणे छे तिनुं पाथडे, पांच ऊणा एक लाख नरका वासा छे कितना एक नरका वासा संख्याता

योजनरा छै तिहां संख्याता नारकी छे, किनना एक नरका वामा असंख्याता योजनना छै, तिहां असंख्याता नारकी छै, तेहनो शरीर उत्कृष्टो अढाइसौ धनूप प्रमाण छै तेहनो आउखो जघन्य सतरे सागरोपम उत्कृष्टो बावीस सागरोपम, तिहां कृष्णलेश्या छै, ते नरका घासे शीतवेदना छै ते नारकीने अवधिज्ञान जघन्य एक गाऊ उत्कृष्टो दोढ गाऊ, तमःप्रभा हेठल वीस सहस्र योजननु घनोदधिनु पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननु घनवात नो पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननूं तनुंवातनो पिंड छै ए तिनुं लांवा पहुला तमःप्रभा प्रमाणै छै ते हेठल असंख्याता योजननु आकाश छै, इति तमःप्रभा ६।

सातमी तमतमा पृथ्वी—असंख्याता योजनना सहस्र लांवी पहुली असंख्याता

योजननी परिधि, जाडपणी एक लाख आठ हजार योजन प्रमाण छै तेमाहीं साढावावन हजार योजन ऊपर मूकीए, साढा वावन योजन हेठल मूकीए, विचाले एक पाथड़ो ते पाथड़ानुं पिंड तीन हजार योजन जाड पणो छै लांबा पहुला तमतमा प्रमाणे छै ते पाथड़े पांच नरका वासा छै काल १ महाकाल २, रूरू ३, महारूरू ४, अपैठान ५, चार नरकावासा वेहुपासे असंख्याता योजनना छै तिणे असंख्याता नारकी छै तेहनो शरीर उत्कृष्टो पांचसो धनुष प्रमाणे छै तेहनुं अऊखो जघन्य वावीस सागरोपम उत्कृष्टो तेत्रीस सागरोपम अपैठाणे तेत्रीस सागरोपमनुं आउखो ते नारकी कृष्णलेश्या छै तिणे नरका वासे शीत वेदना छै ते नारकी ने अवधि ज्ञान जघन्य अर्द्ध गाऊ उत्कृष्टो एक गाऊ, तमतमा हेठल त्रीस हजार

योजननु घणोदधिनु पिड छै ते हेठल असंख्याता योजननु घनवातनु पिंड छै ते हेठल असंख्याता योजननु तणु वातनुं पिंड छै ए तीनुं लांबा पहुला तमतमा प्रमाण छै ते हेठल असंख्याता योजननु आकाश छै, साते नरके शरीर जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग जाणवो ; सात नरक पृथ्वी ए सम्यक दृष्टी. मिथ्या दृष्टी, मिश्रदृष्टी, ए तीन दृष्टी छै रत्नप्रभा पृथ्वी थकी बारे योजने अलोक छै बारह योजन मांहि तीन वलया छै पहिलो वलय घणोदधिनु छव योजननु छै बीजो वलय घनवातनु साढा च्यार योजननु छै त्रीजो वलय तनुवातनु दोढ योजननु छै, दूजी शर्करा प्रभा, ऐ बारह योजने दोय भाग तीरछो अलोक छै तिण मध्ये त्रिण वलय पूर्वोक्त रीते कुछ जाझेरा २, तीजी वालुका-प्रभाथी तेरह

योजन एकभाग तीरछो अलोक छै ते मध्ये त्रिणवलय ३, चौथी पंक-प्रभाथी चौदे योजन अलोक छै ते मध्ये त्रिण वलय छै ४, पांचमी धूम-प्रभाथी चौदे योजने दो भाग तीरछो अलोक छै ते मांहि त्रिण-वलय ५, छट्ठी तम प्रभा थी पन्दरह योजने एकभाग तीरछो अलोक छै ते मांहि त्रिण वलय ६, सातमी तमतमाथी सोलै योजने तीरछो अलोक छै तिहां सोलै योजनमांहे आठ योजननु घनोदधिनु वलय छै छव योजननु घन वातनु वलय छै देढ़ योजन छव भाग तनुवातनु वलय छै ७।

नारकी नीचे घणो दधि समुद्र आवे घणोदधि नीचे जावे तो घणवाय आवे घणवाय नीचे तणवाय आवे तणवाय नीचे आकाश आवे आकाश थकी तीरछो आलोक छै ते मांहे तीन वला (वलय) छै ।

वला (वलय) कैसो छै ?

आडे लकड़े, लांबे डोरेकी परै झालरीरे आकार छै ।

घणो दधि केने कहीजे ?

असंख्याता योजन लांबो चौड़ो छै २० हजार योजन जाड पणे पाणी छै ते बभ्मर मांही बंधाणो छै ।

घणवाय केने कहीजे ?

असंख्याता योजन लांबो चौड़ो छै असंख्याता योजन जाड पणे छै जाडो वायरो छै वायरो बभ्मर मांही बंधाणो छै ।

॥ विशेष विस्तार ॥

नारकी अलोक बीच आंतरा ।

वला (वलय)

नारकीसे अलोक	घणो दधि,	घणवाय,	तणवाय,
पहली नारकी १२योजन २ भाग	६ योजन	४॥ योजन	१॥ योजन
दूजी ,, १२ ,, २ ,,	६ ,, २ भाग	४॥। ,,	१॥ ,, १ भाग
तीजी ,, १३ ,, १ ,,	६ ,, २ भाग	५ ,,	१॥ ,, २ भाग
चौथी ,, १४ ,,	७ ,,	५ ,, १ भाग	१॥ ,, ३ भाग
पांचमी ,, १४ ,, २ ,,	७ ,, १ भाग	५ ,, २ भाग	१॥ ,, ४ भाग
छठी ,, १५ ,, १ ,,	७ ,, २ भाग	५ ,, ३ भाग	१॥ ,, ५ भाग
सातमी ,, १६ ,,	८ ,,	६ ,,	१॥ ,, ६ भाग

लोकमें कोई लोहारनी कलानें विषै चतुर छै ते मासअर्द्ध लगै लोहनो गोलो घड़ी घड़ी तपाय तपाय मोटो करै ते गोलो ऊष्णकरी नरकावासा मांहि मूके ते बलतो बलतो ते नारकी गली जाय एहवी ऊष्ण-वेदना नारकीने तिहां वेदे छै, छट्ठी तथा सातमीमें एक शीत वेदना वेदे छै, एतलो विशेष जाणवो, इम किणही कीधा नहीं करस्यै नही, भगवंत केवली भाव देख्या छै, सातुंही नारकी में पांच कोड अड़सट्ठि लाख निनाणु हजार पांचसौ चौरासी एतला रोग सात नारकीना जीवनै सदाई शरीरे होवे छै वर्णकाला, कांतिकाली, ए आदि देइने वर्णकरी गाढा पांडूया छै हिवै नारकी में गन्ध कहे छै जेहवा मनुष्यना मड़ा, गायं ना मड़ा, सर्पना मड़ा, खानना मड़ा (कलेवर), मंजार ना मड़ा, महिशना मड़ा, चित्राना मड़ा,

मूंआ कुहिया विणठा घणा कालना सड्या क्रमी जालेकरी सहित देखतां दुगंध माहे महा पांडुआ, गणधर देवे प्रश्न कीधो, स्वामी केवली कह्यो ए गन्ध थकी पिण अनिष्ट पांडुओ गन्ध छै, हिवै फरस कहै छै जेहवी तिक्षण खड़गनी धारा, छुरीनी धारा, जेहवो त्रिशूलनो अग्र, जेहवो वांणनो अग्र शूलनो अग्रभाग, जेहवा किवचना रोम, जेहवो अग्निनो फरस एहथी अधिक वखाण्या, गणधर देवे प्रश्न कीधा, भगवंत देवे कह्या कौन कौन जीव, किसी किसी नारकी उपजै, असन्नि सरीस्रप पंखी पहली नरके तिर्यंच पंचेंद्री असन्नी आवी उपजै उपरान्त नहीं १, बीजै नारके सरीस्रप कहता गोह, गिरोली, खिरोजी विसोरा, बंभणी, उंदरा, नोलीयादिक आवी उपजै उपरान्त न उपजै, तीजी नारके पंखी उडणा जीव सिकरा, सांमली, सिचांण,

चिड़कला, मोर, बुगला, लावा, कुही, बाज, जुररा, आदि देई मांस भक्षी उपजै, उपरान्त न ऊपजे ३ ; चौथे नरके गाय, भेंस, बाघ, सिंह, चित्ता, ससा, स्याल, रोज, रींच, हिरण, स्वान, सूअर, सांभर, बलद, हाथी, घोडा, ऊंठ, महिष, मंजार, वेसरी आदि देई चोपदनी जाती पापी जीव उपजै ४ ; पांचमें नारके उरपरिसर्प आदि देई जे हीएचालें ते उपजै उपरान्त न उपजै ५ ; छट्ठिनारके मनुष्यणी (स्त्री) अने माछली उपजै उपरान्त न उपजे ६ ; सातमी नारके मनुष्य अने माछला उपजै ७।

रत्नप्रभा नारकी सबसे छोटी छै तो पण घणी मोटी छै बाहरसुं चोखुणी छै मांहे गोल छै कुंभीरे आकार छे गौतम स्वामीजी पूछ्यो कि देवता नारकीरो पार पामे कि नहीं ? एक देवता चपल गतीरो चालणहार, नरकावासाको

पार पामें ? वले गौतम स्वामी वंदणा नमस्कार करीने पुछ्यो, हे भगवान पुज्य। यो देवता छव महीना तांइ चाल्यां नरकावासारो पार पामें? हे गौतम नो इठे समठे, (पार पमवां समर्थ नही) वले गौतम स्वामी वंदणा नमस्कार करके पूछ्यो तो स्वामी केतलो एक पारपाम्यो? हे गौतम संख्याता योजनका नरकावासा जिणरो पारपाम्यो, असंख्याता योजनका नरकावासारो पार न पाम्यो।

गौतम स्वामी पुछ्यो हे भगवान पुज्य भवनपती देवता कठे रहे छै? रत्नप्रभा नारकी मांहि १३ पाथड़ा छै १२ आंतरा छै तेमां एक पहलो एक छैलो=२ आंतरा खाली छै वीचे १० आंतरा छै तिहां भवणपतीरा भवण छै जिहां दस प्रकार भवणपती देवता रहे छै।

ए साते नारकीनु स्वरूप कह्यो।

७ सात ठामे गुरुवंदणा निषेध—विग्रह चित्त होय १, उपराठा होय २, निद्रा आवती होय ३, निषेध (मना) करता होय ४, आहार करता होय ५, नीहार करता होय ६, काम-काज करता होय ७।

७ सात प्रकृति क्षय कीधां क्षायक सम्यक्त उपजै—अनंतानुबन्धी क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, सम्यक्त मोहनी ५, मिथ्यात्व मोहनी ६, मिश्र मोहनी ७।

७ व्यवहारमें सात प्रकारे सोपकर्मी आउखो घटे (घणो आउखो वांध्यो छे पिण घट जावे) धसको खायने मरे १, कुवा, वावड़ी, तलावमें पड़कर तथा तरवार, कटारी, फांसी सुं मरे २, मंत्रने जोगे आगलो मुंठ वावे तथा डाकिनी साकिनीरे मंत्रथकी (प्राघाते) मरे ३, आहाररे अजीर्णसुं मरे ४, शूलादिक मोटी वेदना उपज्यां मरे ५, सर्प, विछु इत्यादिक

स्पर्श डंक लाग्यां मरे ६, आपणा श्वासोश्वास रोकीने मरे ७।

७ सात भय, इहलोक भय, ते जातिसुं जातिने भय ऊपजे, मनुष्यसु' मनुष्य डरे, देवतासु' देवता डरे, तीर्यंचथी तिर्यंच डरे. नारकीथी नारकी डरे, आप आपरी जातिसुं डरे ते इहलोकभय १, परलोकभय, परजातिसु' भय उपजे, देवतासु' मनुष्यने भय उपजे अथवा तिर्यंचसु' मनुष्यने भय उपजे अथवा परलोकना दुःख सुणीने भय उपजे ते परलोकभय २, आदान भय ते परिग्रहथी भय उपजे ते धन राखवा निमित्त चोरादिकनो भय उपजे ते आदानभय ३, अकस्मात् भय, अजाण गोली तोपनो शब्द सुणीने भय उपजे ते अकस्मात् भय ४, आजीविका भय ५, मरण भय ते आउखानो भय ६, अपयश भय ते अयश अकीर्त्तिरो भय ७।

७ सात प्रकारे साधुजीनी भाषा, थोडो बोले १, मीठो मधुरो बोले २, विचारीने बोले ३, कार्य पड्या बोले ४, निरवद्य वाणी बोले ५, मायारहित बोले ६, सूत्र सिद्धांतरे अनुसारे बोले ७।

७ सात प्रकारे धनने भय, राजारो भय १, चोररो भय २, कुटुंबरो भय ३, अग्निरो भय ४, पाणीरो भय ५, पृथ्वीमें नासण भागणरो भय ६, विनाशरो भय ७।

७ सात प्रकारसु ज्ञान घटे, आलस १, निद्रा २, क्लेश ३, शोक ४, सोच ५, रोग ६, कुटुम्बसु मोह करे तो ज्ञान घटे ७।

७ सात वैरी, मनवैरी १, शैतान २, भूख ३, धन ४, कुटुम्ब ५, निद्रा ६. काल ७।

॥ आठमो बोल ॥

८ सिद्धभगवानके आठगुण—ज्ञानावरनीय कर्मके क्षय होणसे अनंतज्ञानी हुये १; दर्शनावरणीय कर्मके क्षय होणसे अनंतदर्शणी हुये २; वेदनीय कर्मके क्षय होनेसे अव्याबाध, गुण, वेदना रहित हुये ३, मोहनीय कर्मके क्षय होणसे क्षायकगुण प्रगट ४, आयुष्य कर्मक्षय होणसे अजरामरगुण अर्थात् वृद्धपणे और मृत्यु रहित हुये ५, नाम कर्मके क्षय होणसे अमूर्त्ति निराकार हुये ६, गोत्र कर्मके क्षय होणसे अगुरू लघुगुण प्रगट ७, अंतरायकर्मके क्षय होणसे अनंत शक्तिवंत स्वामी रहित हुये ८।

८ पुनः अष्टगुण अनेक वस्तु स्वभाव लिये (हुवे) सो आस्तित्व कहिये १, अनेक वस्तु स्वभाव सहित हुवे सो वस्तुत्व कहिये २,

अपनी मर्यादलिये हुवे सो प्रमेयत्व कहिये ३, न भारी और न हल्के होय सो अगुरू लघुत्व कहिये ४, अपणो गुणपर्याय लिये हुवे सो द्रव्य कहिये ५, अपनी सत्तामेंही रहै सो प्रदेशी कहिये ६, अपना चैतन्य स्वभाव ज्ञान लिये होवे सो चैतन्य कहिये ७, चैतन्य स्वभाव ज्ञान दर्शण सहित और पुद्गलके वर्ण, गंध, रस, स्पर्श रहित होय सो अमूर्ति कहिये यह ८ गुण निर्मल है और चैतन्य द्रव्यके स्वभाविक है ८ ।

८ आठ जणांको शिक्षा लगे, थोड़ा हसे १, सदा दमितात्मा २, निरभीमानी ३, परमार्थगवेषी ४, देशसे और सर्वसे चारित्रकी विराधना नहीं करने वाला ५, रसनाको (जीभ) अलोलुपी ६, क्षमावंत ७, सत्यवादी ८।

८ आठबोल अचित भूमीके—राजपथ (रस्ता) की जमीन आंगुल ५ अचित १, सेरीकी

जमीन आंगुल ७ अचित २, घरकी भूमी आंगुल १० अचित ३, मल मूत्रकी भूमी आंगुल १५ अचित ४, गाय, भेंस, ऊंठ, बकरी प्रमुप बेठे वह भूमी आंगुल २१ अचित ५, चूल्हाहेठे आंगुल ३२ अचित ६, निवाहकी धरती आंगुल ७२ अचित ७, ईंटपजावकी भूमी आंगुल १०१ अचित ८, नीचे सचित होवे ऐसा सूगडांग बृत्तिमांहि कह्यो छे ।

८ उत्तराध्ययणजीका २४ मां अध्ययनमे साधूकुं आठ प्रकाररी भाषा बोलणी वर्जी—कर्कश कारी १, कठोरकारी २, खेदकारी ३, भेद-कारी ४, सावद्यकारी ५, मिश्रकारी ६, मर्म-कारी ७, मोसाकारी ८ ।

८ आठ प्रवचन माताना नाम—इर्यासुमति १, भाषा सुमति २, एषणा सुमति ३, आदान-निक्षेपणा सुमति ४, पारिष्टापनिका (उच्चार

पाशवण खेल जल संघान परिठावनिया सुमति) ५, मनगुप्ति ६, वचनगुप्ति ७, कायगुप्ति ८।

८ आठ आत्माका नाम—द्रव्यआत्मा १, ज्ञानआत्मा २, चारित्र आत्मा ३, योग आत्मा ४, कषाय आत्मा ५, उपयोग आत्मा ६, दर्शन आत्मा ७ वीर्य आत्मा ८।

८ आठ मदना नाम—कुलमद महावीरवत् १, वलमद दुर्योधनवत् २, जातिमद मेतार्य-ऋषीवत् ३, श्रुतमद थूलिभद्रवत् ४, ठकुराईमद राणांरावणवत् ५, रूपमद सन्त् कुमारवत् ६, तपमद द्रुपदीवत् ७, लब्धिमद अषाढभूतवत् ८।

८ आठ योगरा नाम—यम १, नियम २, आसन ३, प्राणायाम ४, प्रत्याहार ५, धारणा ६, ध्यान ७, समाधि ८।

८ आठ गण नाम—मगण १, नगण २, भगण

३, सगण ४, यगण ५, रगण ६, तगण ७ जगण ८ ।

८ भरतना आठ पाट—आरीसाभवन मांहे केवली हुवा आदित्यजसा १, अतिवल २, महाज़स ३, वलभद्र ४, वलवीर्य ५, कीर्त्तिवीर्य ६, जलवीर्य ७, डंडवीर्य ८ ।

८ श्री सिंघरूपी नगरको आठ ओपमा—सम्यक्तरूपी नींव १, क्षमारूपी कोट २, ज्ञानसिज्झायरूपी भूजा ३, जयणारूपी क़ांगरा ४, ध्यानरूपी दरवाजो (पोल) ५, तपरूपी किवाड़ ६, संवररूपी भोगल ७, तीन गुप्तिरूपी खाई ८ ।

८ आठ वोल सीखामण—दान देवे दया पाले ते दानेश्वर १, धर्मरो आचार पाले ते ज्ञानी २, पापसे डरे ते पंडित ३, पांच इन्द्री दमे ते शूरवीर ४, कुलक्षण छोड़े ते चतुर ५, सत्तवचन बोले ते सिंह ६, परउपकार करे ते

धनेश्वर ७, निर्धनसुं नेह करे ते अखंडित (अखी) ८।

दयाधर्मने आठ ओपमा—पहिले डरताने सरणानो आधार तिम भव्यजीवने दयानो आधार १, बीजे चौपदने खुंटानु आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार २, तीजे पंखीने आकाशनो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ३, चौथे तरसीयाने (तृपातुरने) पाणीनो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ४, पांचमे भूखाने अन्नरो आधार, तिम भव्य जीवने दयानो आधार ५, छट्ठे रोगीने औषधीनो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ६, सातमे भूल्याने साथरो आधार, तिम भव्यजीवने दयानो आधार ७ आठमे डुबताने पाटीयानो आधार तिम भव्यजीवने दयानो आधार ८।

: आठ प्रकाररी लोकरी स्थिति,—आकाश

प्रतिष्ठित वायु १, वायु प्रतिष्ठित उदही (पाणी) २, उदही प्रतिष्ठित पृथिवी ३, पृथिवी प्रतिष्ठित त्रस थावर प्राणी ४, अजीव प्रतिष्ठित जीव ५, कर्म प्रतिष्ठित जीव ६, अजीव जीव संग्रहीत ७, जीव कर्म संग्रहीत ८।

८ आठ बोले जीव धर्म नहीं पावे, घणो हंसे तिको धर्म नहीं पावे १, इन्द्री नोइन्द्री दमैं नहीं तिको धर्म नहीं पावे २, मर्म मोसो बोले तिको धर्म नही पावे ३, श्रावकरा व्रत पच्चक्खाण निर्मला नहीं पाले तिको जीव धर्म नहीं पावे ४, साधुरा व्रत पच्चक्खाण निर्मल नहीं पाले तिको जीव धर्म नहीं पावे ५, रसरो लोलुपी हुवे तिको जीव धर्म नहीं पावे ६, क्रोधी हुवे तिको जीव धर्म नहीं पावे ७, भूठा बोलो हुवे तिको जीव धर्म नहीं पावे ८।

८-आठांरे विषे उद्यमरो करवो ते भलो छे— आगला पापकर्म खपाववाने अर्थे (उद्यम) करे १, नया पापकर्म नही उपार्जे एहवो उद्यम करे २, आगलो सूत्र भणीयो तेहने चितारवारो उद्यम करे ३, नया सूत्र भणाववाने अर्थे उद्यम करे ४, नया शिष्य साखा करवाने अर्थे उद्यम करे ५, छठे आगला शिष्य साखा भणाववाने अर्थे उद्यम करे ६, चतुर्विध संघनो कलह मेटवाने अर्थे उद्यम करे ७, तप संयमने विषे वीर्य फोरवाने अर्थे उद्यम करे ८ ।

८ क्रोध जैसो जहर नहीं १, मान जैसो वैरी नही २, माया जैसो भय नहीं ३, लोभ जैसो दुःख नहीं ४, संतोष जैसो सुख नहीं ५, पच्चक्खाण जैसो हेतु नहीं ६, दया जैसो अमृत नहीं ७, साच तथा शील जैसो शरणो नहीं ८ ।

८ आठ मित्र—जन्मका मित्र माता पिता १, घरमें मित्र धन तथा स्त्री २, देहका मित्र अन्न ३, आत्माका मित्र कर्म ४, रोगिका मित्र औषध ५, संग्राममें मित्र भुजा ६, परदेशमें मित्र विद्या ७, अंतकाल जीवको मित्र श्री भगवान जिनेश्वरदेवरो धर्म ८।

८ आठ बोल श्रावकरा—थोड़ा बोले १, विचारी ने बोले अथवा काम पड्यां बोले २, मीठा बोले ३, चतुराइसु बोले ४, मर्मकारी भाषा न बोले ५, अहंकाररहित बोले ६, सूत्रके न्याय बोले ७, सर्व जीवने संतोपकारी बोले ८।

८ आठ बोल प्रस्तावीक, पापसु डरे सो पंडित १; दया पाले सो दानेश्वर २, कुलक्षण छोड़े सो चतुर ३, धर्म करे सो ज्ञानी ४, इन्द्री दमे सो सूरा ५, परउपकार करे सो पूरा ६, सत्य वचन बोले सो सिंह समान ७, निर्धनसुं नेह राखे सो धनवन्त ८।

८ आठ बोल सिखामणका—भगवन्तरो जाप जपीजे १, दया पालीजे २, सत्य वचन बोलीजे ३, शील पालीजे ४, संतोष राखीजे ५, क्षमा कीजे ६, परने दगो न दीजे ७, गुरुके अंकुसमें रहीजे ८ ।

८ जीवरो अजीव करवा समर्थ नहीं १, अजीवरो जीव करवा समर्थ नहीं २, भव्यजीवको अभव्य करवा समर्थ नहीं ३, अभव्यी जीवको भव्यी करवा समर्थ नहीं ४, एक परमाणुका दो खंड करवा समर्थ नहीं ५, उदय आयां कर्म कोई टालवां समर्थ नहीं आपरा किया आपही भोगवे दूसरे ने वेदावा समर्थ नहीं ६, लोकरी वस्तु अलोकमें जावा समर्थ नहीं ७, एक समय दो किया करवा समर्थ नहीं ८ ।

८ आठ बोल जीवने उद्यम करवा—भणवारो उद्यम करनो १, सिखो हुवो चितारनेरो

उद्यम करनो २, पाप कर्म खपावनेरो उद्यम करनो ३, पूर्वला कर्म काटनेरो उद्यम करनो ४, अनुभू जीवने प्रतिबोध देवारो उद्यम करनो ५, नव-दिक्षित साधने सिखावनेरो उद्यम करनो ६, तपस्वी बुढा गरडा ग्लानीरी वयापच्च करनेरो उद्यम करनो ७, चतुर्विध संघमांही क्लेश पड्या मिटानेरो उद्यम करनो ८।

८ आठ बोल धर्मकी शिक्षा—पहले बोले हिंसा न करे, दूजे बोले मर्म छेदन न करे, तीजे बोले पांचों इन्द्रीयाने दमे, चौथे बोले मूल गुण पच्चक्खान मांही दोष न लगावे, पांचमे बोले उत्तरगुण पच्चक्खान मांहे दोष न लगावे, छठे बोले जीभरा रसरो लोलूपी न होवे, सातमे बोले क्रोध न करे, क्षमा करे, आठमे बोले सत्य वचन बोले झूठ न बोले।

८ आठ बोल श्रावकका—पहले बोले श्रावकजी ध्यावे लो गम पीवे भगवंतरी वाणी, दूजे

बोले श्रावकजी मारे तो क्रोध, मेले मान, तीजे बोले श्रावक जी देवे तो दान, लेवे भगवंतरो नाम, चौथे बोले श्रावकजी पहरे तो शील, ओढे लज्जा, पांचमे बोले श्रावकजीने आवणो तो साधपणो, जावणो मोक्ष, छठे बोले श्रावकजी छोड़े तो मिथ्यात्व, आदरे सम्यक्त, सातमे बोले श्रावकजी छोड़े तो पाप, लेवे धर्म, आठमे बोले श्रावकजी जाने तो संसारनो स्वरूप आदरे सत्य गुरुरो मार्ग।

८ आठ प्रकारके श्रावक, अम्मापिइ समाणे— साधुओंके सर्वकार्य आहार पाणी वस्त्र पात्र औषधि प्रमुखकी चिंता रख साता उपजावे और कदाचित् प्रमादवश होकर साधु समाचारीसे चूक जाय तो आंखोंसे देखकर भी, स्नेह रहित न होवे यथा उचित विनय सहित हित शिक्षण देवे सो माता पिता

समान श्रावक १, नाय समाणे—हृदयमे तो साधुओं पर वहुत स्नेह रखे परन्तु विनय भक्तिमें आलस करे और संकट समय यथा योग्य प्राण भोंकके साहायता करे सो भाई समान श्रावक २, मित्र समाणे—कोई कारण सर साधुओंसे रूस जावे परन्तु अपने स्वजनोंसे भी साधुओंको अधिक समझे सो मित्र समान श्रावक ३, सव्वति समाणे—अभिमानी, कठिण हृदयी, छिद्र गवेषि, कदास प्रमादवश साधु चूक जाय तो उस दोपको प्रगट करे सो शौक तुल्य श्रावक ४, आय समाणे—साधुओंका प्रकाश्या सूत्रार्थ जिसके हृदयमें यथार्थवन्त होवे भूले नहीं सो आदर्श आरीसे कांच जैसा श्रावक ५, पडाग समाणे—साधुओंके वचनका जिसको निश्चय भरोसा नही मूर्खों पार्षडियोंके भर-मानेसे जिसका चित्त पताकाकी (ध्वजा)

तरह फिर जावे सो पताका समान श्रावक ६, खाणु समाणे—साधुओंका सद्बोध श्रवण करके भी अपना असत्य आग्रह पकड़ी हुई बातका त्याग न करे सो खीला समान श्रावक ७, खरंट समाणे—हितशिक्षा देनेवाले साधुओंकी निन्दा करे तथा अयोग्य शब्दोंसे अपमान करे कलंक चढावे सो अशुची विष्टा जैसा श्रावक इन ८ में शौक समान और खरंट समान श्रावक मिथ्या दृष्टि है परन्तु साधुके दर्शनको आते हैं इसलिये श्रावक कहे जाते हैं।

॥ इति आठ प्रकारके श्रावक॥

८ बोल सर्व गुणरो मूल विनय १, सर्व रसरो मूल पाणी २, सर्व धर्मरो मूल दया ३, सर्व कलहरो मूल हांसी ४, सर्व पापरो मूल लोभ ५, सर्व रोगरो मूल अजीर्ण ६, सर्व बंधणरो मूल स्नेह राग ७, सर्व मरणरो मूल देह ८।

८ बोले वीतरागरो धर्म पामें मिथ्यात्व मोहनी पतलि पाड़े तो धर्म पामें १, पांच इन्द्रो वस करे तो धर्म पामें २, कोईने मर्म मोसो न बोले तो धर्म पामें ३, देसथी व्रत न खंडे तो धर्म पामें ४, सर्वथी व्रत न खंडे तो धर्म पामें ५, रसरो लोलूपी न हुवे तो धर्म पामें ६, शत्रु मित्र ऊपर समता (सम) भाव राखे तो धर्म पामें ७, सत्य वचनको सूर वीर हुवे तो धर्म पामे ८।

८ बोले मुक्तिरी प्राप्ति हुवे वारवार सूत्र भणे तो १, भणियोड़ो भूले नहीं तो २, निरतिचार संजम पाले तो ३, आशा रहित तप करे तो ४, धर्मथी डिगताने थीर करे तो ५, नव-दिक्षितने क्रिया सिखावे तो ६, गरडा बुढारी व्यावच करे तो ७, अगिलाण पणे संघ विषे कलह उपसमावे तो ८।

॥ नवमो बोल ॥

९ नव ब्रह्मचर्यनी वाड़--स्त्री, पशु पिंडक(नपुंसक) सहित थानक न भोगवे, जो भोगवे तो मुसा बिल्लीको दृष्टांत १, स्त्री कथा करे नहीं, करे तो नींबुको दृष्टांत २, स्त्रीके आसण ऊपर बेसे नहीं, जो बेसे तो पेठने आटा काचरीको दृष्टांत ३, स्त्रीना अंगोपांग निरखे नही, जो निरखे तो सूर्य्यको दृष्टांत ४, स्त्री पुरुष विषयादि करता होय उस भीत टाटीके पास नहीं रहे, जो रहे तो मोर गाजरो दृष्टांत ५, पूर्वला काम भोग चितारे नही, जो चितारे तो बुढीयाकी छाछको दृष्टांत ६, रस प्रणीत पुष्ट आहार करे नही, जो करे तो सन्निपात-रोगकुं दूध मिसरीको दृष्टांत ७, मर्यादाथी अधिको आहार करे नही, जो करे तो-बोदिकोथलीको दृष्टांत ८,

शरीरकी विभूषा करे नहीं, जो करे तो रांक हाथे रत्नको दृष्टांत ६।

६ नव प्रकारे रोग ऊपजे—घणो खावे तो रोग ऊपजे १, अजीर्ण ऊपरे खावे तो तथा घणो बैठे तो रोग ऊपजे २, घणो सूवे तो रोग ऊपजे ३, घणो जागे तो रोग ऊपजे ४, घणी वडीनीति बाधा रोके तो रोग ऊपजे ५, छोटीनीतिनी घणी बाधा रोके तो रोग उपजे ६, घणो चाले तो रोग ऊपजे ७, अणागमते आसणे बेसे तो रोग ऊपजे ८, वार वार विषय सेवे तो रोग उपजे ६।

६ बोल—कालरो जाण १, बलरो जाण २, खेदरो जाण ३, जातरा मातरारो जाण (यात्रा कहता—संयमरूपी जातरा, मातरा कहता—आहार परमाण) ४, अवसररो जाण५, विनयरो जाण ६, स्वमतरो जाण ७, परमतरो जाण ८, अभिमतरो तथा अभिप्रायरो जाण ६।

९ बोल---मेरुपर्वतसुं मोटो अभयदान १, स्वयं-
भूरमणसमुद्रसुं मोटो सत्यवचन २, मीसरी
सुं मीठो धर्म ३, चंद्रमासुं निर्मल तपस्या ४,
पवनसुं वत्तो मन ५, अग्निसुं मोटी मोहनी
६, तरवारसु तीखो कडवो वचन
मोटो संतोष ८, देवलोकसुं मोटो
९ बोल---रजपूतने क्रोध घणो १,
घणुं २, गणिकाने (वेश्याने) माया
ब्राह्मणने लोभ घणो ४, मित्रने स्नेह
हेतु घणो ५, शौकने द्वेष घणो ६,
शोक घणो ७, चोरनी माताने चिंत
८, कायरने भय घणो ९ ।

९ नव अनंता सिद्धांत मांहे पहिले
अभव्य १, दूजे अनंते पडिवत्तीया २, तीजे
अनंते सिद्धनाजीव ३, चौथे अनंते बादर
वनस्पती ४, पांचमें अनंते सूक्ष्मवनस्पती ५
छठे अनंते बादरनिगोद ६, सातमें अनंते

सूक्ष्मनिगोद ७, आठमें अनंते ससारी जीव ८, नवमें अनंते सिद्धिसहित सर्व जीव कर्म ग्रंथे मतांतर प्ररूपणा छे ६।

॥ दशमो बोल ॥

१० दश जातरी नारकी च्रमें वेदना---अनंती भूख १, अनंती तृषा २, अनंती शीत ३, अनंती गरमी ४, अनंतो रोग (१६ प्रकार मोटा रोग ५, ६८, ६६, ५८४ छोटे रोग) ५, अनंतो शोग ६, अनंतो भय ७, अनंतो दाघ (दाह ज्वर) ८ अनंती खाज ६, अनंतो परवशपणो १०।

१० दश ठिकाणे दश वाना पाईजे---क्रोध घणो होय स्त्रीना भर्त्तारने गृह मध्ये १, मान घणो रजपूतरे २, माया घणी भेखधारीने ३, कपट घणो वेश्याने ४, लोभ घणो ब्राह्मणने ५,

शौक घणो जुवारीने ६, सोच घणो चोररी मातारे ७, साच घणो सम्यग दृष्टिने ८, निद्रा घणी धर्मथानके ६, संतोष घणो साधुने १०।

१० दश प्रकारे बुद्धि वधे---दीर्घ आउखो निर्मल बुद्धियो तेहनी बुद्धि वधे १, वीनीत पुरुषरी बुद्धिवधे २, उद्यमवंतरी बुद्धि वधे ३, इन्द्रियनो-इन्द्रियरा दमणहाररी बुद्धि वधे ४, सूत्र ऊपर अंतरंग राग हुवे तेहनी बुद्धि वधे ५, सखरा कार्यमांहि सावधान थावे तेहनी बुद्धि वधे ६, शंकारहित हुवे तेहनी बुद्धि वधे ७, गुरुनी प्रशंसा करे तेहनी बुद्धि वधे ८, वालभावथी मुकावे तेहनी बुद्धि वधे ६, धर्मने ऊपरे दृढ रहे तेहनी बुद्धि वधे १०।

१० दश जणासूं वाद नहीं कीजे---राजासे १, धनवन्तसे २, बलवन्तसे ३, पत्तपूरारे धणीसे

४, क्रोधीसे ५, नीचसे ६, तपस्वीसे, ७, कूडाबोलासे ८, माता पितासे ९, गुरु गुरुणी से १०।

१० दश प्रकाररा शस्त्र---अग्निरो शस्त्र १, वीसरो शस्त्र २, लूणरो शस्त्र ३, खटाईरो शस्त्र ४, चीगटरो शस्त्र ५, खाररो शस्त्र ६, मनरो शस्त्र ७, वचनरो शस्त्र ८, कायारो शस्त्र ९, अव्रतीरो शस्त्र १०।

१० दश प्रकारे आगे भवने विषे सातावेदनीय शुभ-कर्म बांधे---सम्यक्त शुद्ध मन पाले ते साता शुभ कर्म बांधे १, मन वचन कायाना जोग रोके (रुंधे) तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे २, इन्द्रियां दमे तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे ३, क्षमा करे तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे ४, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यावे तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे ५, वेयावच्च करे तो सातावेदनीय शुभकर्म बांधे ६

१० ज्ञानी पुरुषके १० लक्षण---क्रोध रहित १, वैराग्यवान् २, जितेंद्रिय ३, क्षमावान् ४, दयालु ५, सर्वका प्रिय ६, निर्लोभी ७, दातार ८, भय रहित ९, शोक चिंता रहित १०।

१० दर्शना वरणीय कर्मबंधणके १० कारण---कुदेव १, कुगुरु २, कुधर्म ३, कुशास्त्रकी प्रशंसा करे ४, धर्म निमित्त हिंसा करे ५, मिथ्या बुद्धि रखे ६, चिन्ता अधिक करे ७, सम्यक्तमें दोष लगावें ८, मिथ्याचार धारण करे ९, जानकर अन्यायीकी रक्षा करे १०।

१० सत्य भाषा १० बोल, १ जणवय सच्चे कहता—जिस देशमें जैसी बोली है वोही सच्च है जैसे पांणीकुं पय किसी देशमें कहें २, समय सच्चे कहता—अनेक शास्त्रोंमें आचार्योंने कही वात—जैसे कादे तथा जलसे उत्पन्न मेंडक सेवाल और कमल

इणोंमें पंकज कमल ही माना है यह समय सच है ३, ठवाना सच्चे कहता—स्थापना सत्यका २ भेद है सत्यभाव थापना, असत्य-भाव थापना, सत्यभाव थापना चार भुजारी मूरती, चार भुजारो आकार हुवे जिसकी चार भुजा मूरती कहे असत्यभाव थापना गोलमाल पत्थरके तेल सिंदूर लगाय भैरुंजी इत्यादि नाम रखे ४, नाम सच्चे कहता—नामादि करके वस्तु जाणनेमें आवे चाहे गुण नहीं हुवे जैसे नाम तो कुलवर्द्धन पर कुलरी वृद्धि करे नहीं ५, रूप सच्चे कहता—रूप है साधूरा पर गुण साधूरा नहीं ६, पाडुचीया सच्चे कहता—अनामीका आंगुलीकी अपेक्षा मध्यमा वड़ी, बेटेकी अपेक्षा बाप वड़ो बाप की अपेक्षा बेटा छोटा ७, व्यवहार सच्चे कहता—जैसे चूवे पाणी और कहे छत चूवे है गिरता है जल कहे पडनाल पड़ती है ८,

भाव सच्चे कहता—कोयल काली है सूवा हरा है बगुला सफेद है पर निश्चयमें वर्ण पांचही होता है ९, जोग सच्चे कहता—हाथीवाला, पखालवाला, खुमचेवाला इत्यादिक है १०, उपमा सच्चे कहता—उपमा सत्यके चार भेद छती बस्तुने छती उपमा (१), छतीने अछती उपमा (२), अछतीने छती उपमा (३), अछतीने अछती उपमा (४), जैसे पद्मनाभ भगवान्, महावीर, भगवान् सरीखा हुवेगा (१), छतेमें अछती उपमा जैसे-नारकी देवतारो आउखो छतो है उस तिणकुं पल तथा सागरकी उपमा अछती है (२), अछतीने छती उपमा ॥ दोहा ॥

पान पड़ंतो इम कहे, सुण तरुवर वनराय।
अवके बीछड़े कब मिलेंगे, दूर पड़ेगा जाय ॥
तव तरुवर उत्तर दियो, सुन पत्र एक बात।
इस घर एही रीत है, एक आवत एक जात ॥

कब तरुवर मुख बोलीयो, कब पत्र दियो जवाब।
वीर वखाणी ओपमा, अणुयोग द्वार मझार॥
अछतेने अछती उपमा घोडारा सिंग गधे सरीखा गधेरा सिंग घोड़े सरीखा।

१० मिश्र भाषारा दश बोल—उपनमिसीया कहता—आज सहरमें १० जन्म्या १, विघ्नमिसीया कहता—आज सहरमें दश मरया २, ऊपनविघ्नमिसीया कहता---आज सहरमें दश जन्म्या दश मरया ३, जीवमिसीया कहता---लाया तो जीव, उसमांहि अजीव है और कहे कि केवल जीवही जीव उठा भी लाया ४, अजीवमिसीया कहता---लाया तो अजीव उस मांहि जीवभी है और कहे केवल अजीवही अजीव उठा लाया ५, जीवाजीव मिसिया कहता---लाया तो जीव अजीव दोनुंही उसमें एक ज्यादा वा कम है और कहे कि आधो आध उठा लाया ६,

अंतमिसिया कहता---लाया तो अंत उस मांहि पडत भी है कहै कि केवल अंतही अंत उठा लाया ७, पडतमिसीया कहता---लाया तो पडत उस मांहि अंत भी है और कहै कि केवल पड़तही पडत उठा लाया ८, अधा कहता---दिन तो उग्योही है और कहै कि घड़ी दीन आया या दोय घड़ी दिन आया है संभा तो पड़ी है कहै कि दोय घड़ीरात आय गई है ६, अधधा कहता---दिन तो उग्योही है और कहै कि पहर दिन आया दो पहर दिन आया है संभा तो हुई है और कहै कि पहर रात या दो पहर रात आगई है १०।

१० उत्तराध्ययन सूत्र २४ मां अध्ययनमें उच्चार पासवण खेल जल्ल परिठावणीया सुमतिका दश बोल कहते हैं---उच्चार पासवण कहता द्रव्यथकी जहां कोई आवे नहीं जावे नहीं

शुद्धि पत्र ॥ पाठान्तर ॥

परठाणीया सुमतिरा १० बोल ।

१ कोई आवेड नही कोई देखेइ नही उठे परठे ।

२ आपरी आत्मा परायेरी आत्मा व्याघात नही पामे उठे परठे ।

३ ऊंची, नीची, तिरछी भोमकामें नहीं परठे ।

४ पोली भोमिकामें नहीं परठे ।

५ तुरंतरी अचित भोमकामे परठे ।

६ च्यार अगुल उन्डी अचित भोमकामे परठे।

७ एक हाथ लम्बी एक चवड़ी अचित भोमकामें परठे ।

८ उन्द्रादिकरा बिल हुवे उठे नहीं परठे ।

९ शहरके नजीक गृहस्थोने दुगंछा आवे उठे नहीं परठे ।

१० हरा अंकुरा वनास्पति, लीलण, फूलण विगेरह हुवे उठे नहीं परठे ।



देखे नही वहां परठे १, अपनी आत्मा और दूजाकी आत्मा दुखे नही वहां परठे २, पोली जगामें परठे नहीं ३, उंची नीची जगामें परठे नहीं ४, चार चार आंगुल अचित्त भूमिमें परठे नहीं ५, दो दो हाथ सम-भूमिमे परठे नही ६, ऊंदरादिकका बिल होवे वहां परठे नहीं ७, त्रस जीवकी उत्पत्ती होवे वहां परठे नहीं ८, हरि वनस्पती और हरा अंकुरा होवे वहां परठे नही ९, पांच प्रकाररी फूलण होवे वहां परठे नहीं १०।

१० उत्कृष्टा १७० तीर्थंकर होवे जिसमें पांच भरत पांच ऐरवत चेत्रमें तीर्थंकर १० होवे तिणके नाम---जम्बूद्वीपके भरत चेत्रमे श्री अजीतनाथजी १, ऐरवत चेत्रमें श्रीचन्द्र-नाथजी, २, धातर्क खंडके पहिले भरत चेत्रमें श्रीसिद्धांतनाथजी ३, ऐरवत चेत्रमें श्रीजय-

नाथजी ४, धातकी खंडके दूसरे भरत क्षेत्रमें श्रीकर्पठनाथजी ५, ऐरवत क्षेत्रमें श्रीपुष्प दंतजी ६, पुष्करार्थ द्वीपके पहिले भरत क्षेत्रमें श्रीप्रभासनाथजी ७, ऐरवत क्षेत्रमे श्रीजयनाथजी ८, पुष्करार्थ द्वीपके दूसरे भरत क्षेत्रमें श्रीप्रभावकनाथजी ६, ऐरवत क्षेत्रमें श्रीवलभद्रस्वामीजी १० ।

१० बोल वैयावच्चका---आचार्यनी वैयावच्च १, उपाध्यायनी वैयावच्च २, स्थिवरनी वैयावच्च ३, तपस्वीनी वैयावच्च ४, शिष्यनी वैयावच ५, गीलाणीनी वैयावच्च ६, कुलनी वैयावच्च ७, गणनी—समुदायनी वैयावच्च ८, चउविध सिंघनी वैयावच्च ६, साधर्म्मिनी वैयावच्च १० ।

१० दश बोल अढाई द्वीप बाहरे नहीं ते कहे छै---तिर्थंकर नही १, काल नहीं २, बादर अग्नि नहीं ३, गाज नहीं ४, विजली नहीं

५, मेह (मेघ). नहीं ६, नदी नहीं ७, सोना रूपारा आगर नहीं ८, नव निधान नहीं ९, चन्द्रमा सूर्य्यका ग्रहण नहीं १०।

१० दशविध यति धर्म, खंति कहता—क्षमा १, मूत्ति कहता---निर्लोभी, लोभका त्यागी २, अज्जव कहता—सरलता, कपटाइ रहित ३, मद्दव कहता—मानका त्याग ४, लाघव कहता---हलका ५, सच्च कहता---सत्य बोले ६, संयमे कहता—संयम पाले ७, तप कहता--तपस्याकरे ८, चइए कहता—द्रव्यका त्याग ९, बंभच कहता—ब्रह्मचर्य पाले १०।

१० दश बोल असत्य भापारा—क्रोधरे वश बोले तो असत्य १, मानरे वश बोले तो असत्य २, मायारे वश बोले तो असत्य ३, लोभरे वश बोले तो असत्य ४, रागरे वश बोले तो असत्य ५, द्वेपरे वश बोले तो असत्य ६, हास्यरे वश बोले तो असत्य ७,

भयरे वश बोले तो असत्य ८, मुखरी वचन बोले तो असत्य ६, विकथाकारी वचन बोले तो असत्य १०।

॥ इग्यारमा बोल ॥

११ मनुष्यका आयुष्य ११ बोले करी बांधे गुरुदेवनी भक्ति करे १, मिथ्यात कर्म न समाचरे २, चाडी चुगली न करे ३, कुकर्मनो उपदेश न देवे ४, जीवनो बंधन न करे ५, दांनवंत होवे ६, घणो आहर न करे ७, सूत्र सिद्धांत भणे भणावे ८, न्याय धर्मेकरी लक्ष्मी मेलवे ६, पर जीवने पीड़ा न करे १०, पर जीवने हित उपगार करे ११।

११ इग्यार बोल प्रस्तावीक, समकितरूपी मूल १, धीरजकंद २, विनय वेदिका (चोकी)

॥ शुद्धि पत्र ॥



दृष्टान्त On Tree

॥ ११ बोल प्रस्तावीकका ॥



१ समकित रूपी – मुल ।
२ धीर्य रूपी – कंद ।
३ विन्य रूपी – वेदका (चोकी) ।
४ जस (यस) रूपी – खंध (पेड़) ।
५ पांच महाव्रत रूपी – डाला ।
६ भावना रूपी – तचा (छाल) ।
७ अनेक ज्ञान, ध्यान रूपी – कुपल पान ।
८ अनेक गुण रूपी – फुल ।
९ सील रूपी – सुगंध ।
१० अनुना (आश्रव निरोधन) रूपी--फल ।
११ मोच रूपी – बीज ।



३, जस ४, खंद पांच महाव्रत ५, डाला भावना ६, त्वचा छाल ज्ञान ध्यान ७, कुपलपान अनेक गुण ८, फूल शील ९, सुगंध उपयोग १०, फल मोक्ष ११, बीज ।

१ इग्यार बोले करी ज्ञान वधे, उद्यम करता १, निद्रा तजे तो २, उणोदरी करे तो ३, अल्प बोले तो ४, पडितरो संग करे तो ५, विनय करे तो ६, कपटरहित तप करे तो ७, संसार असार जाणे तो ८, चोलणा पचोलणा करे तो ९, ज्ञानवंतने पास भणे तो १०, इन्द्रियोना विषय त्यागे तो ज्ञान वधे ११ ।

॥ बारहमो बोल ॥

२ बारे अङ्गका वर्णन, १ आचारांगजी—जिसके २ श्रुतस्कंध है, प्रथम श्रुतस्कंधरा आठमां

महा प्रज्ञा नामक अध्ययनका तो साफ विच्छेद हो गया है और बाकीके ८ अध्यायमें छव कायकी हिंसाके कारण और फल लोकका स्वरूप, सम्यक्तका स्वरूप, साधूको परिसह सहन करनेका साहस वगैरा वहुत ही बातों का वर्णन विस्तारसे किया है दूसरे श्रुत-स्कंधमें साधूको आहार, वस्त्र, पात्र, मकान इत्यादि, लेनेकी विधि, बोलनेकी विधि इत्या-दिक साधूका आचार तथा श्रीमान् महावीर स्वामीका जीवन चरित्र है, आचारांगजीके तो १८०० पद थे पदस्वरूप यथा ३२ अत्तर का १ श्लोक, १५०८८६८४० श्लोकका १ पद गिना जाता है अब तो मूलके २५०० श्लोक है; २ सूयगडांगजी—जिसके २श्रुत-स्कंध है पहिले श्रुतस्कंध १६ अध्ययन है इसमें ३६३ पाखंडियों कुवादियोंका स्वरूप वताकर समाधान किया गया है

श्रीऋषभदेव स्वामीके ९८ पुत्रको उपदेश साधूका आचार नरकके दुःख प्रभूके गुण वगैरा बहुत बातोंका वर्णन है दूसरे श्रुत-स्कंधके ७ अध्ययन हैं जिसमे पुष्करणीके कमल पुष्पके दृष्टांतसे मोक्ष ग्रहण करणेकी व्याख्या साधूको आहार लेनेकी बोलनेकी रीति आर्द्रकुमार और गोशालेकी चर्चा गौतमस्वामी और उदक पेढाल पुत्रका संवाद इत्यादिक बातें हैं सूयगडांगजीके पहिले तो ३६००० पद थे अब तो २१०० श्लोकही रह गये हे; ३ ठाणांगजी—जिसमें १ ही श्रुतस्कंध है और १० ठाणे अध्याय है पहिलेमें एकेक बोल श्रष्टीमें कौन कौनसे हैं और दूसरेमे दो दो यावत् दशमे ठाणेमे दश दश बोलकी व्याख्या है, इसकी चौभंगियोंको विद्वान जमाते हैं, तब बहुतही ज्ञानरस पैदा होता है ठाणांगजीके पहिले तो ४२०००

पद थे जिसमेंसे अब सिर्फ ३७७० श्लोक रह गया है; ४ समवायांगजी—जिसमें एक ही श्रुतस्कंध है अध्याय नहीं है इसमे सलंग बंध अनुक्रमें एक दो यावत संख्याते असंख्याते अनंते बोलकी व्याख्या है और ५४ उत्तम पुरुष इत्यादिक अधिकार है १६४००० पदमेंसे अधुना सिर्फ १६६७ श्लोक विद्यमान है; ५ विवहापन्नती भगवतीजी—जिसमें १४० शतक है १००० उद्देशे है इसमें विविध प्रकारके श्रीगौतमस्वामीके पुछे हुवे ३६००० प्रश्न है श्रीगौतमस्वामी स्कंधक सन्यासी ऋषभदत्त मुनि सुदर्शन सेठ शिवराज ऋषि गंगीयाजी, गंगदत्तजी, आनंदजी, कुशलजी, रोहाजी, सुनक्षत्रजी, सर्वानुभूतिजी, सिंहामुनीजी, इत्यादि साधुयोंका और देवानंदाजी, जायवतीजी, सुदर्शनाजी इत्यादि साध्वीयों का, संखजी, पोखलजी, कार्तिकजी सेठ

इत्यादि श्रावकोंका, रेवतीजी, सुलसाजी इत्यादि श्राविकायोंका तामली गोशाला प्रमुख अन्यमतियोंका और सूक्ष्म भंगजाल जीव विचार लब्धि विचार इत्यादि बहुत बाबतोका विवेचन है २२८८००० पदमेसे अबतो फक्त १५७५६ श्लोक विद्यमान है; ६ ज्ञाताजी—जिसके दो श्रुतस्कंध है पहिले श्रुतस्कंधके १६ अध्ययन है जिसमें मेघकुमारका मोरके-इंड का धनासार्थवाहका काछवेका कुंबडीका चन्द्रमाका अकिरण देशके घोडेका जिन-रक्षित जिनपालका थावच्चा पुत्रक खधक सन्यासीकी चर्चाका मल्लीनाथ भगवानके छव मित्रोका अरणक श्रावकका रोहिणीका वृक्षका द्रोपदीका कुंडरीक पुंडरीकका वगेरा दृष्टांतोसे दया सत्य शीलकी पुष्टीकी गई है, दूसरे श्रुतस्कधके २०६ अध्यायमे पुरुपा दाणी श्रीपार्श्वनाथजीकी २०६ पासच्छी

ढीली साध्वीयोंकी कथा है ५५५६००० पदमें साढे तीनक्रोड़ धर्म कथायों इस सूत्रमें पहिले थी जिसमेंसे अब तो फक्त ५५०० श्लोक विद्यमान है; ७ उपासक दशांगजी—जिसका १ श्रुतस्कंध और १० अध्ययन है इस सूत्रमें १० श्रावकोंका अधिकार है ये १० ही श्रावक श्रीमहावीरस्वामीके शिष्य थे २० वर्ष श्रावक धर्म पालकर जिसमें ५॥ वर्ष घर छोड पोपधशालामे श्रावककी ११ पडिमावही है वहां देवताका महाउपसर्ग सहा परंतु धर्मसे चले नही प्रथम देवलोकके अरुण विमानमें ४ पल्योपमका आयुष्य भोगवकर एकभवकर मोक्ष पधारेंगे।

न०	श्रावकके नाम	गाम	भार्या स्त्री	धन रुपया	गोकुल रुपया
१	आनंदजी	वाणीय ग्राम	शिवानन्दा	१२ क्रोड़ मोनैया	४००००
२	कामदेवजी	चंपानगरी	भद्रा स्त्री	१८ क्रोड़ मोनैया	६००००
३	चुलणी पीया	बनारसी	सोमा स्त्री	२४ क्रोड़ ,,	८००००
४	सूरदेवजी	बनारसी	धन्ना स्त्री	१८ क्रोड़ ,,	६००००
५	चूलशतकजी	अलंभीया	बहुला स्त्री	१८ क्रोड़ ,,	६००००
६	कुंडकोलिया	कंपीलपुरी	पुसा स्त्री	१८ क्रोड़ ,,	६००००
७	सकडालपुत्र	पोलासपुर	अग्गीमित्ता	३ क्रोड़ ,,	१००००
८	महाशतकजी	राजगृही	रेवती आदि १३	२४ क्रोड़ ,,	८००००
९	नंदनपीयाजी	सावत्थी	अश्विनी स्त्री	१२ क्रोड़ ,,	४००००
१०	तेतली पीया	सावत्थी	फाल्गुनी स्त्री	१९ क्रोड़ ,,	४००००

इसके प्रथम तो ११७०००० पद थे जिसमें से अब तो फक्त ८१२ श्लोक हैं ; ८ अंतगड़दशांगजी—जिसका एक श्रुतस्कंध६वर्गके ६० अध्ययन है, पहले वर्गके १० अध्ययनमें अंधकविश्नुजीके १० पुत्रोंका अधिकार है, दूसरे ८अध्ययनमें वासुदेवजी अक्षोभादिक ८ का अधिकार है, तीसरे वर्ग के १३ अध्ययनमें वासुदेवजीके गजसूकुमारजी प्रमुख ८ पुत्र पांच वासुदेवजीके पुत्रकायो १३ का अधिकार है, चौथे वर्ग के १० अध्ययनमें वासुदेवजीके मयाली आदि ५ पुत्रोंका अधिकार है, ६ साव ७ प्रद्युम्न कृष्णजीके पुत्रोंका ८ प्रद्युम्नजीके अनुरूद्ध कुमारका और समुद्र विजयजीके ६ सत्यनेमी १० द्रढनेमी पुत्रका अधिकार है, ५ वे वर्ग के १० अध्ययनमे कृष्णजीकी सत्यभामा रुक्मिणी प्रमुख ८१ पट्टराणियोंका अधिकार है और

जंवूकुमारकी मूलश्री मूलदत्ता राणीका अधिकार है, छट्ठे वर्ग के १६ अध्ययनमें मकाइ प्रमुख १३ गाथा पतीयोंका तथा अर्जुनमाली अतिमुक्त एवंता कुमारने गुणरत्न संवच्छर तप किया उनका और अलखराजा का अधिकार है, सातमें वर्ग के १३ अध्ययनमें श्रेणिक राजाकी नन्दाराणी प्रमुख तेरे पट्टराणियोका अधिकार है, आठमे वर्ग के १० अध्ययनमें श्रेणिक राजाकी कालीराणी ने रत्नावली तप किया, सुकाली राणीने कनकावली नप किया, महाकाली राणीने लघुसिंह क्रिडिन तप किया, कृष्णाराणीने वृद्धसिंह क्रीडित तप किया सुकृष्ण राणी इत्यादिक दश राणियोंकी तपस्याका अधिकार है; यों अंतगड सूत्रमें सर्व ९० मोक्षगामी जीवोंका अधिकार है इसके पहिले तो तेइस लाख अट्ठावीस हजार पद थे, जिसमेंसे अब

तो सिर्फ ६०० श्लोक रह गये हैं ६ अनुत्त-
रोववाइ जिसके तीन वर्ग हैं, पहले वर्ग के १०
अध्ययनमें और दूसरे वर्ग के १३ अध्ययन
में श्रेणिक राजाके जालियादिक तेवीस
पुत्रोंका अधिकार है, तीसरे वर्गके १० अध्य-
यनमें काकंदी नगरीके धनाजी सेठने ३२
स्त्री और ३२ क्रोड सोनेयेका धन छोड़ दिक्षा
ले अति दुकर तपस्या कर शरीरका दमन
किया ऐसे दश जीवोंका अधिकार है यह
तेतीस जणे अनुत्तर विमानमें गये एकभव
करके मोक्ष पधारेंगे इस सूत्रके पहले तो
चौराणुलक्ष चार हजार पद थे जिसमेंसे
अब तो फक्त २६२ श्लोक ही रह गये हैं
१० प्रश्न व्याकरणजी जिसके दो श्रुतस्कंध
हैं, प्रथम श्रुतस्कंधमें आश्रव द्वारमें पांच
अध्ययनमें हिंसा, झूठ, चौरी, मैथुन,
परीग्रह ये पांच आश्रव निपजनेके कारण

और उनके फलका अधिकार है, दूसरे श्रुत-स्कंधके संवर-द्वारके ५ अध्ययनमें दयाके ६० नाम सत्य अदत्त ब्रह्मचर्य अममत्व इन पांचोके भेद और गुण बताये है इसके पहले तो ६३११६००० पद थे जिसमेंसे १२५० श्लोक ही रह गये है ११ विपाकजी जिसके दो श्रुतस्कंध है---पहले श्रुतस्कंध दुःख-विपाक जिसमें मृगालोढा प्रमुख दश महापापी जीव पाप कर घोर दुःख पाये जिसका अधिकार है और दूसरा सुख वि-पाक जिसमें सुबाहू प्रमुख दश जीव दान, पुण्य, तप, संयम, कर आगे अत्यंत सुखपाये जिसका अधिकार है, इसके पहले तो एक क्रोड चौरासीलाख पद थे और एकसोदश अध्ययन थे अवतो १२१६ श्लोक ही है यह ११ सूत्र तो यत्किंचित भी विद्यमान है कितनेक ऐसा कहते हैं कि इग्यारे अंग

पहिले थे जितनेही अब है जिस जिस ठिकाण
जाव शब्दसे अन्य शास्त्रोंकी भलामणदी है
वो समास सब मिलावो तो बराबर हो जावे,
१२ दृष्टीवादजी जिसमें पांच वच्छु वस्तु
थी पहिली वच्छुके ८८ लाख पद थे दूसरीके
एक क्रोड़ ८१ लाख ५ हजार पद थे तीसरी
वच्छुमें चौदह पूर्वकी समावेस होता था,
सो चौदह पूर्वका ज्ञान १ उत्पाद पूर्व---इसमें
षट् द्रव्यका ज्ञान था इसकी दश वच्छु और
११ लाख पद थे २ अगणीय पूर्व—इसमें
द्रव्यगुण पर्यायका वर्णन था इसकी चार
वच्छु और बाइस लाख पद थे, ३ वीर्यप्रवाद
पूर्व—इसमें सर्व जीवके बल वीर्य पुरुषाकार
पराक्रमका वर्णन था इसके आठ वच्छु और
चौवालीस लाख पद थे, ४ आस्ती नास्ती
प्रवाद पूर्व---इसमें शास्वती अशास्वती वस्तु
का स्वरूप था इसकी सोले वच्छु और अठार्स

॥ शुद्धि पत्र ॥

१४ पूर्वके ज्ञानकी पद संख्या लिखते।

१ उत्पाद पूर्व १ कोड़ पद।
२ अग्राणीय पूर्व ९६ लाख पद
३ वीर्य प्रवाद पूर्व ७० लाख पद
४ अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व ६० लाख पद
५ ज्ञान प्रवाद पूर्व १ क्रोड पदमें १ पद उणो।
६ सत्य प्रवाद पूर्व १ कोड ६ पद ऊपर
७ आत्म प्रवाद पूर्व २६ क्रोड पद
८ कम प्रवाद पूर्व १ क्रोड ८० हजार पद
९ विद्या प्रवाद पूर्व १ क्रोड १५ हजार पद
१० प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व ८४ लाख पद
११ प्राण प्रवाद पूर्व १ क्रोड ५६ लाख पद
१२ अवझाण (अवंध्य) प्रवाद पूर्व २६ क्रोड पद।
१३ क्रिया विशाल पूर्व ९ कोड पद

१४ लोक बिंदुसार पूर्व १२ कोड ५० लाख पद ।

ओछो अधिको आगो पाछो तत्व केवली गम्य ।

लाख पद थे, ५ ज्ञान प्रवाद पूर्व—इसमें ५ ज्ञानका वर्णन था इसकी वारह वच्छु और १ कोड़ छीअन्तर लाख पद थे, ६ सत्य-प्रवादपूर्व इसमें दश प्रकारके सत्यका वर्णन था इसकी वारह वच्छु और दो कोड़ वावन लाख पद थे, ७ आत्म प्रवाद पूर्व—इसमें आठ आत्माका वर्णन था इसकी सोलह वच्छु और तीन कोड चार लाख पद थे, ८ कर्म प्रवाद पूर्व—इसमें आठ कर्मोंका वर्णन था इसकी सोलह वच्छू और छव कोड आठ लाख पद थे, ९ प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व---इस दश पच्चखाणके नव कोड़ भेदका वर्णन था इसकी तीस वच्छू और वारह कोड़ सोलह लाख पद थे, १० विद्या प्रवाद पूर्व—इसमें रोहिणी प्रज्ञसी आदि विद्या मंत्र जंत्र तन्त्रादिक विधि युक्त थे इसका चउदा वच्छू और पचीस कोड़ वीसलाख पद थे, ११ कल्याण

प्रवाद पूर्व—इसमें आत्माके कल्याण होणेकी तप संयमकी बातें थी इसको दश वच्छू और अडतालीस क्रोड चौसठ लाख पद थे. १२ प्राण प्रवाद पूर्व---इसमें चारसे लगाकर दश प्राणके धरणहार प्राणियोका वर्णन था इसकी दश वच्छू और सत्ताणु क्रोड़ अठाइस लाख पद थे, १३ क्रियाबिशाल पूर्व—इसमें साधु श्रावकका आचार तथा पच्चीस क्रियाका वर्णन है दश वच्छू और एक कोड़ा कोड़ी और एक क्रोड पद थे, १४ लोकबिंदुसार पूर्व---इसमें सर्व अक्षरोंका सन्नीपात उत्पत्ति और सर्व लोकके सार सार पदार्थोंका वर्णन था इसकी १० वच्छू और दो क्रोड़ा कोड तीन क्रोड दशलाख पद थे ऐसा कहा जाता है कि पहिला पूर्व एक हाथी डुबे जितनी स्पाईसे दूसरा दो हाथी डुबे जितनी स्पाईसे तीसरा चार हाथी डुबे

जितनी स्याईसे यो दूणे करते करते चौदवां पूर्व ८१९२ हाथी डुबे जितनी स्याईसे लिखा जाता था चौदह पूर्वका ज्ञान लिखने में १६३८३ हाथी डूबे जितनी स्याई लगती है दृष्टिवादांगकी चौथी वच्छूमें छव वाते हैं पहिली वातके ५ हजार पद और दूसरी, तीसरी, चौथी, पांचमी, और छट्ठीके जुदे जुदे वीस क्रोड़ इठाणुलाख नव हजार दोसो पद थे, दृष्टिवादकी पांचमी वच्छूको चुलका कहते हैं, जिसके दशक्रोड उगणसठलाख छियालीस हजार पद थे, इतना बड़ा दृष्टि-वाद अंगका विच्छेद होनेसे जैन धर्ममें ज्ञानको वडा जबर धक्का लगा है; जिस वक्त ये बारे अंग पूर्ण थे उस वक्त, उपाध्यायजी इनके पुर्ण जाण होते थे अब इग्यारह अंग जितने रहे हैं, उणके जाण हुवे उनको, उपा-ध्यायजी कहना इति अंगविचार संपूर्णम् ।

१२ साधूजीकी ओपमा, गाथा---

उरगगिरी जलनसागर नहतल तरुगण समोय जो होइ, भमरमिय धरणिजलरुह रविपवन समोय तोसमणो।

अर्थः—१ उरग कहतां, सर्प जैसा साधू गृहस्थने अपने निमित्त निपजाया स्थानक, स्त्री, पशु, पिंडक रहित होवे उसमें मालिकको आज्ञासे रहे, २ गिरी कहता, पर्वत जैसे साधु हुवे जैसे पर्वत हवाकरके कंपायमान न हुवे तैसें साधु परीसह उपसर्गे कंपायमान न हुवे धूजे नहीं, ३ जलण कहता, अग्नि जैसे साधु होवे जैसे अग्नि इन्धन तृण काष्ठादि करके तृप्त न हुवे तैसे साधु ज्ञानादि गुण ग्रहण करते तृप्त न हुवे, ४ सागर कहता, समुद्र जैसे साधु होवे समुद्र की तरह गंभीर समुद्र मर्यादा उल्लंघे नहीं ऐसे साधु तीर्थंकरकी आज्ञा उल्लंघे नहीं, ५

नहतल कहता, आकाश जैसे साधु होवे आकाशकी तरह निर्मल है जैसे आकाश स्तंभादि आधार रहित तैसे साधु भी गृहस्थादिकका आश्रय रहित हुवे,६ तरुगण कहता, वृक्ष जैसे साधु होवे जैसे वृक्ष शीत तापादि दुःख सहकर आश्रितों (मनुष्य, पशु, पक्षी यादि) को शीतल छायासे आराम सुख देवे तैसे साधु छवकाय जीवको आश्रयभूत सद्बोधादिसे सुख दाता होवे, ७ भ्रमर जैसे साधु होवे जैसे भमरा रस ग्रहण करता हुवा फुलको पीड़ा दुःख न ऊपजावे तैसे साधु आहार आदि ग्रहण करते दातारको पीड़ा कष्ट न देवे, ८ मिय कहता हिरण जैसे साधु होवे जैसे हिरण सिंहसे डरे तैसे साधु पापसे डरे, ९ धरणी कहता, पृथ्वी जैसे साधु होवे जैसे पृथ्वी शीत ताप छेदन भेदनादि स्पर्श समभावसे सहे तैसे साधुजी परिसह, उपसर्ग

दूसरी अशरण भावना ।

दल बल देई देवता, मात पिता परिवार ।
मरती विरियां जीवको, कोइ न राखन हार ॥

ऐसा विचार करै कि, रे जीव ! इस जगत में तेरेको शरण (आधार) का देनेवाला कोई नहीं है, सब स्वजन स्वार्थके सगे हैं, जब तेरे अशुभ कर्म उदय होगे तेरे पर दुःख आके पड़ेगा तब तुझको सहायकर्त्ता कोई भी नहीं होगा (ऐसी अशरण भावना, अनाथी निग्रंथ ने भाईथी) ॥२॥

तीसरी संसार भावना ।

दाम विना निर्धन दुखी, तृष्णावश धनवान ।
कहू न सुख संसार मे, सब जग देख्यो छान ॥

ऐसा विचार करै कि, रे जीव। तुं अनंत जन्म मरण कर सर्व संसारमें फिरा, वालाग्र जितना भी ठिकाणा खाली नहीं रखा, सर्व जीवोंके साथ सगपण (संबंध) कर चुका माता मरके स्त्री, और स्त्री मरके माता पिता के पुत्र, और पुत्रके पिता ऐसे आपसमें अनत वखत संबंध हो गया, सर्व जगत्वासी जीव स्वजन है, परन्तु शत्रु कोई नहीं है, इस लिये सबके साथ तुं मित्रता रख (ऐसी ससार भावना मल्लिनाथजीके ६ मंत्रीयोंने तथा धन्ना शाली-भद्रजीने भाई थी) ॥३॥

॥ चौथी एकत्व भावना ॥

आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय।
यो कबहू या जीव को, साथी सगा न कोय॥

ऐसा विचार करे कि रे जीव। इस जगतमे

कोई किसीका सोबती नहीं है, अकेला आय
और अकेलाही जायगा, जो पाप करके ले
धन कुटुंबका संग्रह किया है, सो मरेगा ज
धन धरतिमें, पशु घरमें रह जायगा, स्त्री दर
वाजे तक, और कुटुंब श्मशान तक ही आयग
अत्यंत प्रिय यह शरीर चित्ता (अग्नि)
जलके भस्म हो जायगा, ऐसा जाण तु
एकांतपणा धारण कर, (ऐसी एकांतभावन
नमीराय ऋषिने भाई थी) ॥४॥

॥ पांचमी परपंख भावना ॥

जहां देह अपनी नहीं, तहां न अपना कोय
घर संपति पर प्रकट ये, पर हैं परिजन लोय ।

ऐसा विचार करे कि, रे जीव ! इस
जगतमें सब स्वार्थी (मुतलबी) है, उनक
मुतलब होता है, वहां तक, सब जी जी खम

खमा, करते हैं, हुकम उठाते (मानते) हैं, मुतलब पूरा हुवे बाद सब सज्जन दूर भग जाते हैं, परन्तु कोई किसीका नहीं होता है (ऐसी परपंख भावना मृगापुत्रने भाई थी) ॥५॥

छट्ठी अशुची भावना।

दिपै चाम चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह।
भीतर या सम जगतमे, और नहीं घिन गेह ॥

ऐसा विचार करे कि, रे जीव। तूं तेरे शरीरको स्नान मंजनादिकसे शुद्ध करनेको चाहता है, लेकिन यह शरीर कभी शुद्ध नहीं होगा, क्योंकि इसकी उत्पतिका जरा विचार करके देख कि अव्वल माताका रक्त और पिताका शुक्र (वीर्य) का आहार कर यह शरीर बना था, अशुची (विष्ठा) के स्थानमें

बुद्धि पाकर रक्तके नालेमेंसे वाहिर पड़ा, और माताका दूध पीकर वड़ा हुआ। सो दूध भी जैसे रक्त (लोही) मास शरीरमें रहता है, तैसाही ये दूध है, और अभी अनाज खाता है सो भी अशुचीके खातेमें पैदा होता है।

अव तेरे शरीरके अन्दरके पदार्थोंका जरा विचार कर, इस शरीरमें ७ कला हैं :—१ मांस, २ लोही, ३ मेद, इन तीनोंके बीचमें तीन भिली है सो, ४ कृतफिये के वीच एक भिल्ली, ५ आंतोके बीच एक भिली, ६ पेटमें जठराग्नि को धरनेवाली एक भिली, ७ वीर्यको धरनेवाली एक भिली। इस शरीरमें सात आसय (स्थान) हैं। १ हृदयमें कफका स्थान, २ हृदयके नीचे आमका स्थान, ३ नाभी उपर डावी वाजु जठराग्निका स्थान (अग्नि पर तिल है;) ४ नाभीके नीचे पवनका स्थान, ५ पवनके स्थानके नीचे पेडुमें मल (विष्टा) का स्थान,

६ पेडु के जरासा नीचे मुत्रका स्थान (इ
बस्ती कहते हैं,) ७ हृदयके कुछ उपर जीव
और रक्त (लोही) का स्थान, स्त्रीको ३ स्थ
जास्ती हैं :—१ गर्भस्थान और २ दूधस्थ
(स्तन) ३ यो स्त्रीके १० स्थान हुए।

इस शरीरमें ७ धातु हैं, १ रस, २ लोहं
३ मांस, ४ मेद, ५ हाड, ६ मीजी, ७ शुः
जो आहार करता है सो पित्तके तेजसे पकव
पहिले चार दिनमें उसका रस होता है, फि
चार दिनमे उस रसका लोही होता है; यं
चार चार दिनके अंतर से एकेक धातूपः
प्रगमता प्रगमता एक महीनेके अंदर शुः
होता है।

सात उपधातू :—(१—२—३) जीभका
नेत्रका, और गलेकामेल रस की उपधातू
४ कानका मेल मांसकी उपधातू, ५ बीस हं
नख हाडकी उपधातू, ६ आंखका गीड

की उपधातु, ७ मुखके उपरकी चिकणाइ शुक्रकी उपधातू ।

मांस रुप जो धातु है उसे 'वसा' तथा 'औज' कहते हैं, यह घृत जैसा चिकणा होता है, सर्व शरीरमें रस रहता है, यह शीतल और पुष्टीका कर्ता बलवान है ।

७ त्वचा (चमडी) १ भामनी नामे उपर की त्वचा चिक्कणी है, सो शरीरकी विभूषा (शोभा) करनेवाली है, २ लालरंगकी त्वचा उसमें तिल आर्य पैदा होता है, ३ श्वेत त्वचा उसमें चर्म दल रोग पैदा होता है. ४ तांबेके रंग जैसी त्वचा उसमें कोढ रोग पैदा होता है, ५ छेदनी त्वचा उसमें अठारह प्रकारके कोढ पैदा होता है, ६ रोहणी नाये त्वचा उसमें गुमड़े गंडमाला प्रमुख रोग पैदा होता है, ७ स्थुल त्वचा, उसमें वीद्रधी रहते हैं ।

तीन दोषका स्वरूप—१ बात (वायू), २

पित्त, ३ कफ, इन तीनोको कोई तीन दोष और कोई तीन मेल कहते हैं।

१ वायु शरीरमें सर्व ठिकाणे वस्तुओंका विभाग करता रहता है। यह सुक्ष्म, शीतल, हलका और चञ्चल होता है, यह नसे रुप नल करके जो वस्तु खानेमें आती है, उसको ठिकाने पहुंचाता है, इसके पांच स्थान हे —१ मलका स्थान २ कोठा (पेट) ३ अग्नि स्थान ४ हृदय ५ (पांचवा) कंठ, इन पांच ठिकाने रहता है। १ गुदामें रहता है उसे अपान वायू कहते है, २ नाभीमें रहता है उसे सामान्य वायू कहते हे, ३ हृदयमें रहता है उसे प्राणवायू कहता है, ४ कंठमें रहता है उसे उदान वायू कहते हैं, ५ (पांचवा) सर्व शरीरमें रहता है उसे व्यान वायू कहते हैं। इस प्रकृति वालेके लक्षणः—केश छोटे, शरीर दुर्बल सुखास लिये होता है. इसका मन चञ्चल

रहता है, वाचाल होता है, और इसको आकाशमें उड़ने के स्पन्न आते हैं इसे रजोगुणी कहते हैं।

२ पित्त गरम, पतला, पीला, कड़वा, तीखा, दग्ध होनेसे खट्टा हो जाता है, यह पांच ठिकाणे रहके पांच गुण करता है, १ आसयमें तिल जितना अग्निरूप होकर रहता है यह अग्नि पांच प्रकारकी, १ मंदाग्निसे कफ, २ तिक्षणाग्निसे पित्त, ३ विषमाग्निसे वात, ४ समाग्नि श्रेष्ट, ५ विगमाग्नि नेष्ट, २ त्वचासे रहकर कांती करता है, ३ नेत्रमें रहकर वस्तुको देखाता है, ४ प्रकृतिमें रहकर वस्तुको पाचन कर खाये हुयेका रस लोही बनाता है, ५ हृदयमें रह बुद्धि उत्पन्न करता है, इसके ५ नाम है—१ पाचक, २ भ्रंअक, ३ रंजक, ४ अलोचक, ५ साधक इसकी प्रकृतिवालेके लक्षण जवानीमें श्वेत बाल होवे बुद्धिमान

होवे, पसीना बहुत आवे, क्रोधी होवे, और स्वप्नमें तेज देखे, इसे तमोगुण कहते हैं।

कफ चिक्कणा, भारी, श्वेत, शीतल, मीठा होता है, दग्ध हुए खरा हो जाता है, इसके पांच स्थानः—१ आसयमे, २ मस्तकमें, ३ कंठमें, ४ हृदयमें, ५ सन्धीमें, यह पांच ठिकाने रह स्थिरता कोमलता करता है, इसके पांच नामः—१ क्लेदन, २ स्नेहन, ३ एसन, ४ अवलंबन, ५ गुरूत्व, कफकी प्रकृतिवालेके लक्षण गंभीर, मद बुद्धि होता है, शरीर चिकणा, केश बलवान, और स्वप्नमे पाणी देखे, इसे तमो गुण कहते हैं।

और भी इस शरीरमें मांस, हाड, मेद, इनको बांधनेवाली जो नसें हैं उनको स्नायु कहते हैं, यह शरीर हड्डीयोंके आधारसे खड़ा है जिसको आधार इनका ही है, इस देहमें सबसे बड़ी सोलह नसे हैं, उनको करंड कहते

हैं, यह शरीरको संकोचन प्रसारन श
देते हैं।

संरंभ्राका स्वरूप—कानके दो, नाकके द
आंखके दो, यह ६, ७ जनेन्द्रि, ८ गुदा, ६ मु
यों ६ छिद्र पुरुषके और स्त्रीके १ गर्भाशय, औ
दो स्तन, यह ३ जास्ती, यों ११ छिद्र हैं औ
छोटे छिद्र तो अनेक हैं। नाभीके डावी तर
जो आशयके ऊपर तिल है सो पाणीको ग्रह
करनेवाली नसका मूल है, इससे ही प्या
(तृषा) शांत होती है, और कूंख (पेट)
जो दो गोले हैं, व जठरके मेदको तेज कर
हैं, इस शरीरमें सर्व कोठे ७२ हैं, जिसमें
कोठे वड़े हैं, जिसमेंसे शीतकाल (सियाले
में तीन कोठे आहारके, दो कोठे पाणीके औ
एक कोठा खाली श्वासो श्वासको रहता है
ऐसेंही ग्रीष्म ऋतुमें दो आहारके तीन पाणी
एक श्वासो श्वासका खाली रहता है, ऐसे

लपटी, एकसो साठ नाड़ी नाभीके नीचे गुदेको वींट रही है, पच्चीस नड़ी श्लेष्मको पच्चीस पित्तको, दश शुक्रको धरनेवाली है, यों सर्व नाड़ी ७०० हैं ।

इस शरीरके दो हाथ दो पग, यों चार शाखा एकेक शाखामें तीस तीस हड्डी, यह १२० हुई, ५ जीमणी कमरमें और ५ डाबी कमरमें, चार भग (योनी) में और चार गुदामें, एक त्रीकनमें, बहतर दोनों पसवाड़े में, तीस पीठमें, आठ हृदयमें, दो आंखमें नव ग्रिवामें चार गलेमें, दो हडवचीमें, ३२ दांत, एक नाकमें, एक तालुवेमें सर्व ३०० हड्डी हुई ।

इस शरीरमें साढ़े तीन क्रोड़ रोम हैं जिसमेंसे दो क्रोड़ एकावन लाख रोम गलेके नीचे, और निन्याणव लाख गलेके ऊपर है, और एक एक रोममें पौणी दो दो रोग माठरे

(कुछ कम) भरे हुए है, जिसमे भी जलभ्र भगंदरादिक १६ रोग मोटके (बड़े) भरे हुए हैं, इत्यादि अशुची (अपवित्रता) से और आधी (चिंता) व्याधी (रोग) उपाधी (काम कार्य) करके यह शरीर पूर्ण भरा है, जहां तक पूर्ण पुराय है वहां तक सर्व अपवित्रता छिपी हुई है, इसे गोरी काली चमडी ढांक रही है, जब अशुभ पाप कर्म उदय (प्रगट) होवेगा तब बिगड़ते किंचित् ही देर नहीं लगेगी (ऐसी भावना सनतकुमार चक्रवर्तीने भाईथी) ॥६॥

॥ सातमी आश्रव भावना ॥

मोह नींद के जोर, जगवासी घूमें सदा।
कर्म चोर चहुँ ओर, सब लूटे नहीं दिशता॥

ऐसा विचारे कि, रे जीव । तेने अनंत

संसार परिभ्रमण किया, इसका मुख्य हेतु आश्रव ही है, क्योंकि पाप तो इस जीवने अनंत वख्त छोड़ा, परन्तु आश्रव छोड़े बिन धर्म पूर्ण फल नहीं दे सकता । आश्रव २० प्रकारके हैं परन्तु यहां मुख्यमें अव्रतका अर्थात् उपभोग (जो एक वख्त भोगनेमें आवे आहार पाणी प्रमुख) परिभोग (एक वस्तु बारम्बार भोगनेमें आवे, वस्त्र भूषण प्रमुख) और भी धन, धान्य, भूमि इत्यादिकको मर्यादा नहीं करना, इच्छाका निरुधन नहीं करना, सोही आश्रव इस भवमें महा तृष्णा रूप सागरमें गोते खिलाता है, और आगे भी दुर्गतिमें अनंत काल विटंबणा देनेवाला होता है, ऐसा जाण रे जीव! अब तो आश्रव छोड़ और व्रत अंगिकार जरूर कर, (यह आश्रव भावना समुद्रपालजी ने भाईथी) ॥ ७ ॥

॥ आठमी संवर भावना ॥



सतगुरु देव जगाय, मोह नींद जब उपशमै।
तब कुछ बनै उपाय, कर्म चोर आवत रुके ॥

ऐसा विचार करे कि रे जीव। संसारमें रुलानेवाला आश्रव है, जिसको रोकनेका उपाय एक संवर ही है, इस लिये अब तो कायिक (काया) वाचित (वचन) मानसिक (मन) की इच्छाको रुंधन कर एकान्त समता रूप धर्ममें लीन हो, अर्थात् जीवरूप तलावमें कर्मरूप नालेसे, अव्रत रूप पाणी आ रहा है, उसको संवर (व्रत) रूप पाल बांधके आश्रवको रोक ले (यह संवर भावना हरिकेशीजी महाऋषि ने भाई थी) ॥ ८ ॥

॥ नवमी निर्जरा भावना ॥

ज्ञान दीप तप तेल भर, घर शोधै भ्रम छोर ।
या विधि विन निकसे नहीं, पैठे पूरव चोर ॥
पंच महा व्रत संचरण, समिति पंच परकार ।
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार ॥

ऐसा विचार करे कि रे जीव ! संवरसे तो आते पापको रोक (बंध कर) दिया, परन्तु पहले किये हुए पापको खपाने वाली तो एक निर्जरा (तपश्चर्या) ही है, छव बाह्य, छव अभ्यन्तर, बारह प्रकारका तप, इसलोक पर-लोकके सुखके रूपकी या कीर्तिकी वांच्छा रहित एकांत मोक्षार्थी हो कर करे तो तेरा कल्याण होवे अर्थात् जीवरूप कपड़ेको कर्म्मरूप मैल लगा हुवा है, इनको संवररूप साबुन लेकर तपरूप पाणीसे धो, सो तेरेको मोक्षरूप

अविचल सुखकी प्राप्ति हो जावे, (यह निर्जरा भावना अर्जुन माली ने भाई थी) ॥६॥

दसमी लोकसंठाण भावना।

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान।
तामें जीव अनादितैं, भरमत है बिन ज्ञान ॥

ऐसा विचार करे कि रे जीव ! इस लोकका संठाण कैसा है, जिसका तुं विचार करके देख तीन दीवे जैसा इस लोकका संठाण (आकार) है। जैसा कि एक दीवा उलटा जिसपर दूसरा दीवा सीधा। और उसपर तीसरा दीवा उलटा रखनेसे जैसा आकार होता है, तैसा इस लोकका आकार है, सर्व लोकका घनाकार ३४३ राजुका है, इस लोकके मध्य भागमें

(जैसा मकानके बीचमें एक पोकल स्थंभ होता है तेसा) एक राजुकी चौडी और १४ राजुकी लंबी एक ऐसी त्रस नाल हे, उसके अंदर त्रस और स्थावर जीव भेले भरे हुवे हैं, और इसके बाहिर बाकी सब लोकमें स्थावर जीव ही खिंचोखिंच भरे हुए हैं, तो रे जीव ! तुं अनंत वखत् इस लोकके विषे त्रस थावरपणे, सूक्ष्म बादरपणे, सन्नी असन्नीपणे पर्याप्ता अपर्याप्तापणे, नारकी तिर्यंचपणे मनुष्य देवतापणे, जन्म मरण करके सब लोक फरस लिया, ऐसी कोई जगह लोकके अन्दर नहीं रही कि जिस ठिकाणे तूं जन्म मरण नहीं किया हो, अर्थात् (एक बालाग्रह रखे उतनी जगा लोक मे खाली नहीं रखी) ऐसा जानकर रे जीव— अब तो ऐसी जगा देखनेकी इच्छा करके जहां जन्म मरणादि कष्टकी उत्पत्ति न होवे, और पुनर्पि संसारसागरमें परिभ्रमण करनेका काम

न पड़े, ऐसा स्थान (ठिकाणा) कहां है कि, लोकके अग्रभागके ऊपर अर्थात् स्वार्थसिद्ध विमानसे बारह योजन ऊपर ४५ लाख योजन की पूर्ण चंद्राकार समान गोल और छत्राकार, मध्यमें ८ योजनकी जाडी, और आखरी किनारे पर मक्खिके पंखसे भी पतली, मक्खनवत् चीकनी, अर्जुन स्वर्णमय सफेद, ऐसी सिद्धसिला है। जहां एक कोसके छट्ठे भागके ऊपर अनते सिद्ध भगवंत विराजते हैं, वहां कोई प्रकारका कष्ट नहीं है, इस लिये वहां जानेकी तु भी इच्छा कर, और ज्ञान दर्शन चारित्र तप अंगिकार करनेका उद्यम कर, तो वो मुक्ति स्थान तेरे को शीघ्र मिल जायगा, (यह लोक संठाणभावना शिवराजभाइने भाईथी) ॥ १०॥

ग्यारहमी बोधबीज भावना।

धन कन कंचनराज सुख,सबहि सुलभ कर जान
दुर्लभ है संसार में, एक यथारथ ज्ञान॥

ऐसा विचार करे कि रे जीव! तेरा निस्तारा किस करणीसे होगा, इस जीवको मोक्ष देनेका मुख्य हेतु सम्यक्त्व है,सम्यक्त्व बिन उतकृष्ट करणी कर नवग्रीवेग तक जा आया, परन्तु कुछ कल्याण न हुवा तो अब सम्यक्त्व फरसनेका अवसर (मोका) आया है, सो अब प्रमादको मेट सम्यक्त्व रत्न प्राप्त कर, और देव अरिहन्त,गुरू निग्रन्थ, केवली परुप्यो दया धर्म यह तीन तत्व शुद्ध अंगिकार कर, और कुदेव, कुगुरु, कुधर्मको त्यागन कर श्री वीतराग प्रणित वाणी (वचनो) की आस्ता (श्रद्धा) पूर्ण रख सो येही एक सम्यक्त्व है,

जैसे डोरा पोई हुई सुई कचरेमें खोई नहीं जाती है तैसे सम्यक्त्व पाया हुवा प्राणी संसार समुद्रमें बहुत परिभ्रमण नहीं करते हैं। ऐसा समझ कर रे जीव। तूं बोधबीज सम्यक्त्वकी प्राप्ति कर, कि जिससे मोक्षकी प्राप्ति होवे (यह बोधबीज भावना, कृष्ण वासुदेव, श्रेणिक राजा, और ऋषभदेवजीके अठाणुं पुत्रोंने भाईथी) ॥११॥

॥ बारमी धर्म भावना ॥

जाचे सुरतरु देय सुख, चिंतत चिंतारैन।
विन जाचे विन चिंतये, धर्म सकल सुखदैन॥

ऐसा विचारे कि रे जीव। यह नरभव है सो निर्वाण (मोक्ष) प्राप्ति करनेका कारण है, और मोक्ष धर्म करणीसे प्राप्ति होती है, यह

जन्म धर्म करनेको ही पाया है, कारणकी मनुष्य जन्म सवाय धर्मकरणी वण नहीं सकती है, और धर्म विन मनुष्य पशुतुल्य है, इस लिये अवश्य धर्म कर, धर्म तो इस संसारमें बहोत प्रकारसे लोक मान बैठे हैं, परन्तु सच्चा धर्मका मर्म (स्वरूप) कुछ नहीं समझते हैं फक्त अपना अपना मत पक्ष ताणते हैं, इस लिये सच्चा धर्म वोही है, की जिस धर्ममें किसी जीवको मन वचन काया करके विलकुल तकलीफ नहीं देते हैं, अर्थात् (अहिंसा परमो धर्मः) इति वचनात् जहां दया है सो ही परम (उत्कृष्ट) धर्म है, इस लिये दया धर्म अंगिकार कर, (यह धर्म भावना धर्मरुची मुनीने भाइथी) ॥१२॥

१३ बारह प्रकारनो आहार पाणी परिठवे, पिण भोगवे नहीं—आधाकर्मि १, उद्देशिक २, सूतीकर्म ३, मिश्र ४, सचित्त अचित्त मिल्या

५, अजोयरे ६, सिभ्मातरनो ७, सचित्त पाणीनी बुंद पड़े तो ८, खेलाइ कंते ९, कालाइ कंते १०, मगाइ कंते ११, पमाणाइ कंते १२।

१२ बारह संभोग—उपधि वस्त्र पात्रनो लेवो १, सूत्र सिद्धांत लेवो वाचणी लेवी देवी २, आहार पाणी लेवो ३, मांहोमांहि नमस्कार नो करवो ४, शिष्यादिकनो देवो ५, निमंत्रणा करवी ६, मांहोमांहि खड़ा होणा ७, कीर्त्ति गुणग्राम करे ८, वैयावच्च करणी ९, एकठा मिलवो १०, एक आसण वेसवो ११, कथा प्रबंधनो कहिवो १२।

१२ बारे बोल करी भव्य जीवकुं पछतावणो पड़े—छती योगवाइ साधु साधवीको १४ प्रकारको दान नहीं देवे तो पछतावणो पड़े १, दान देइने पोमावे तो पछतावणो पड़े २, दान देता वर्जेतो पछतावणो पड़े ३, छती

१२. कुतोहल काठायो ते कोतुक खेल तमासादिमें रहे १३, विषय काठीयो ते इन्द्रीयोके काम भोगमें मग्न रहे ए तेरह काठीया दूर करे तब धर्म पामें और आत्माका कल्याण करे।

१३ तेरे क्रिया साधूने लागे यथा स्वभावें अथवा गिलाणादिकने काजें आहार असूझतो लेवो ते अर्थ क्रिया १, देवगुरु संघनों प्रत्यनीक तथा धर्मनो हिंसक ते संघाते बोलवुंते हिंसकी क्रिया २, वस्तु पूंजी मूकता कोई जीवनें विराधना हुवे ते अकस्मात् क्रिया ३, सापराध निपराध भमतां मरण पामें ते दृष्टि विपर्यासि की क्रिया ४, कुडो बोलें ते मृखावादकी क्रिया ५, अणदीधे लेवे ते अदत्तादानकी क्रिया ६, हीयामें फोकट उचाट धरें ते अधात्मकी क्रिया ७, कारण पाखें असूजतो लेवो ते अनर्थकी क्रिया ८, अहंकार

अभिमान करै ते मानकी क्रिया ९, अल्प अपराध हुवै ने घणुं दडै ते अमित्रकी क्रिया १०,कुटिलपणोकरवुं ते कुटिलकी क्रिया ११, कामादिकनो आसक्त थको औरानें वंधवंधनादिक करवो ते लोभकी क्रिया १२, इर्यापंथकी क्रियानो अणसदहवो ते इर्यापंथकी क्रिया १३,

१ तेरे बोल हुवे जिहां साधु चोमासो करे— बेन्द्रियादिक जीव थोड़ा होय १, कीचड़ कादो थोड़ो होय २, उच्चार पासवणकी जागा निरवद्य होय ३, थानक साताकारी होय ४, छाछ दहि दूध घृत घणो होय ५, वस्ती घणी होय ६, राजवैद्य होय ७, औषध दवा चाहिजे सो मिले ८, श्रावक कोठे धान घणो होय ९, गामरो ठाकुर धर्मरो रागी होय १०, पाखंडीयोका जोर थोड़ा होय ११, आहार पाणीनी साता

होय १२, सिझाय करणेकी जागा जुदी होय १३ ।

१३ तेरे तिणगां जन्म रूपणी रूई मरण रूपीया-- तिणगा १, संयोगरूपणी रुई वियोगरूपीया तिणगा २, साता रूपणी रूई असाता रुपीया तिणगा ३, संपदा रूपणी रूई आपदा रूपीया तिणगा ४, हरख रूपणी रूई सोच रूपया तिणगा ५, सिल रुपणी रूई कुसील रूपीया तिणगा ६, ज्ञानरूपी रूई अज्ञान-रूपी तिणगा ७, सम्यक्त रुपी रूई मिथ्यात्व रूपी तिणगा ८, संयमरूपी रूई असंयम-रूपी तिणगा ६, तपस्यारूपी रूई क्रोधरूपी तिणगा १०, विवेकरूपी रूई अविवेकरूपी तिणगा ११ सनेहरूपी रूई मायारूपी ति-णगा १२, संतोष रूपणी रूई लोभ रूपीया तिणगा १३ ।

॥ महानुभाव वन्दनाका १२ बोल ॥



धन्न श्री ऋषभदेवजी अनंत बल रा धणी काया ने कांपसी धन वां पुरुषां ने वरसी तप चौविहार कियो, हे जीव, छमछरीरो उपवास तुंहो चौविहार कर थारे कायारी गरज सरसे, च्यार हजार साधांरे परिवार सु दिक्षा लीधी, दश हजार साधांरे परिवार सु छव दिनांरे संथारे सु मुक्ति पहुंता वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होयजो ॥ १ ॥

धन श्री महावीर स्वामी अनंत बलरा धणी कर्म काटयां, धन उत्तम पुरुषां ने बाहरे मास तेरे पक्ष चौविहार किया, छव मासी चौविहार किया, पंचमासी चौविहार किया, चौमासी चौविहार किया, तीमासी चौविहार किया, दो मासी, डेढ मासी चौविहार किया, वहोत्तर पक्ष चौविहार किया, २२६ वेला चौविहार किया,

२ दिन सुदि पड़िमा वह्या २ दिन वदि पड़िमा वह्या इसी तपस्या करीने कर्म खपाइने दोय दिनांरो संथारो करीने आधी रात मोक्ष पहुंता वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होयजो ॥ २ ॥

धन श्री गणधर गौतम स्वामी तीन आखरा उपर, ईगन देवा विगन देवा गुण देवा गुणतप कीधा पहिले पहोर ध्यान करे दूजे पहोर सझाय करे तीजे पहोर गौचरी करे चौथे पहोर पांचसो साधांने वांचणी देइने गुण रयण छमछरी तप करीने मोक्ष पहुंता वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होयजो ॥ ३ ॥

धन श्री धन्नोजी अणगार समीपे आइने भगवानरी वाणी सुणीने दिक्षा लेइने गौचरीमें अरस निरस विरस कागा कुत्ता नहीं वंछे इसो अहार लेइने बेले बेले पारणो करीने सवार्थ सिद्ध विमानमें पहुंता, वांने म्हारी वंदणा नमस्कार हुइजो ॥ ४ ॥

धन श्री एवंता अणगार भगवान समीपे आइने भगवानरी वाणी सुणीने दिक्षा लेइने साधांरे परिवार सुं थंडिले गया पाणी रो नालो देख्यो माटी री पाल बांधी पातरी तिराई आओ देखो साधां मारी न्याव तिरे छे साधां मन में जाण्यौ भगवान महावीर स्वामी मुंडीने क्या कियो पृथ्वी पाणी आदि छकाय जीवांने ओलखेइ नहीं साधू टली अलगा नीकल गया श्रीएवंतोजी मारकवडी साधांने पुगा भगवानरे समोसरण में आया भगवान फुरमाई प्रकृति इयरी भद्रिक छे हलुकर्मी जीव छे इण भवसे ही मोक्ष जासी, वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होइजो॥ ५॥

धन श्री अर्जुनमालीजी भगवान, समीपे आइने भगवानरी वाणी सुणी ने दिक्षा लेइने राजग्रीह नगरीमें सुद्ध परिणामें गोचरी उठ्या कोई भाठा मारे, कोई सोटा मारे, केई कूत्ता

लगावे, केई धूड़ फेंके. केई कहे म्हारो
मार्यो, केई कहे म्हारी मा मारी, केई
म्हारी बेन (भगनी) मारी, केइ कहे म्हारो
मार्यो, केइ कहे म्हारी भार्या मारी, केइ
म्हारो धणी मार्यो, केइ कहे म्हारो बेटो म
अर्जुन मालीजी मनमे चिंतावना करी, हे
तें घणा जीवांरी जीव काया न्यारी न्यारी
दीसे छे तने तो थोड़ा ही संतावे छे इसी च
करीने बेले बेले पारणे छव महिना
फिर्या, राजग्रीह नगरीमे अहार पाणी क
ही वेरायो नहीं छव महीना में ही कर्म खप
पनरे दिनांरो संथारो करीने मोक्ष पहुंता
म्हारी वंदणा नमस्कार हुइजो ॥ ६ ॥

धन श्री मेघकुमारजी भगवान सम
आइने भगवानरी वाणी सुणीने दिक्षा ली
चउदे हजार मुनिराजांरे परिवार सुं रात ने सू
रातरा मुनिराज केइ तो मातरो परठण ने उठ

केइ खंखारो थुंकणने उठ्या, कइ नाकरो मेल परिठावण ने उठ्या, ज्युं मेघकुमारजीरे ठोकरां री लागी, मेघकुमारजी मन में रातरा चिंतावना करी सदाइ तो हुं भगवानरे समीपे आवतो जब भगवान मेघजी मेघजी कहकर बतलावता आज कीणही मने मेघलो कहकर बतलायो नहीं मैं कांइ भगवान रो खायो नहीं, पीयो नहीं, लीयो नहीं, दीयो नहीं, ओघो पातरा मुंहपत्ति देइने परभाते म्हारे घरे जासुं, मेघकुमारजी भगवान रे समोसरणमें आया जब भगवान मेघकुमारजी ने बतलावो; आवो मेघ आओ मेघ रात तो तुम्हे दुःखे दुःखे काडी एक रात्रि छत्र महिना जीसी काढी, भगवान मेघकवररे पुर्वले भवरो वृतान्त बतायो, के तैं हाथीरे भवमें ससियेरी दया पाली, श्रेणिक राजारे अधिपर बेटो थयो; हे मेघकुमार, तियंचरे भवमें इतनी वेदना सही तीण आगे इया

वेदना तो कीतिक है, मेघकुमारजी मनमें चिंतवना करीके आज पीछे दोय नेत्र की सार करसु और शरीरकी सुश्रषा नहीं करु इसी क्षमा करीने विजय विमाने गया, वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होयजो ॥ ७ ॥

धन श्री सुबाहु स्वामी सात भवतो तिर्यंचरा किया, सात भव मनुष्य रा किया, सात भव नारकी रा किया सात भव देवतारा करीने सुखे सुखे भोगवीने मुक्ति पधारसे वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होइजो ॥ ८ ॥

धन श्री खंधकजी, जीणांने काया असासती जाणी, सासती जाणी नहीं, दुकर दुकर परिसह सहिने अच्यूत (बारमां) देवलोक पहुंता, चवीने मनुष्य होकर मुक्ति जासी, वांने म्हारी वंदना नमस्कार होइजो ॥ ९ ॥

धन श्री गजसुकमालजी भगवान समीपे आइने दीक्षा लेइने मसाण भूमिका जाइ उभा

काउसग्ग कियो सोमल ब्राह्मण (सुसरे) गजसुकमालजीने देख पुर्वलो द्वेष जाग्यो, म्हारी बेटीने दुःख थासी सो हुं इयरो बैर काढसुं, भीनी माटी लेइने पाल बांधी शिर अंगार धर्या, मुनि माथो धूण्यो नहीं नाके सल घाल्यो नहीं, सगपण दाख्यो नहीं, इसी समता करीने केवलज्ञान उपजाइने मुक्ति पहुंता वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होइजो ।१०।

धन श्री खंधक कुमारजी दीक्षा लेइने विचर्या बेनोइरी नगरीमे गोचरी उठ्या, बेनोइ, खंधकमुनीने देख काचर रे भवरो द्वेष जाग्यो, एडीसुं लगाइने चोटी तांई खाल उतारी, मुनि सगपणदाख्यो नहीं, माथो धूण्यो नही, नाके सल घाल्यो नहीं, इसा दुक्कर दुक्कर परिसा सहिने केवल ज्ञान उपजाइने मुक्ति पहुंता वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होइजो ॥ ११ ॥

धन श्रीकृष्ण महाराजरी आठ अग्र-

महिष्या, ओपमावइ १, गौरी २, गंधारी ३, लक्ष्मणा ४, सूसमा ५, जंबुवती ६, सतभोमा ७, रुक्मणी ८, आठों राण्यां आइने भगवान् समीपे हाथ जोड़ मानमोड़ पूज्य भगवानने नमस्कार करीने चंदनवाला पासे दीक्षा लेइने संजम पालीने मुक्ति पहुंता त्यांने म्हारी वंदना नमस्कार होइजो ॥१२॥

धन श्री श्रेणिक महाराजरी दस अग्र महिष्या—कालि १, सुकालि २, महाकालि ३, किन्हा ४, सुकिन्हा ५, महाकिन्हा ६, वीर किन्हा ७, रामकिन्हा ८, पीउसेण किन्हा ९, महासेण किन्हा १० दसों राण्यां हाथजोड़ मानमोड़ पूज्य भगवान समीपे आइने भगवान ने पूछयो कि अहो भगवान काली आदि कुमारों कोणक और चेड़ाराजारी लड़ाईमां गया छे, जीत्या के हारया, भगवान पीछी फुरमाइ (लही स्फूरठी चंपलेरी डाल परे कमलाइने हेठे पड़ीया)

दसुंइ कवरांने चेडेराजाजीव काया रहीत कीया दसुंइ राणयां सुणीने कह्यो अहो भगवान म्हाने संसाररे अलिते पलितेसुं काढो, भगवान दसों राणयांने संजम देइने चंदनबालाने सुंपी, चंदन बालांनी आज्ञा लेइने काली आर्या रत्नावली तप कियो, दुजी सुकाली आर्या कनकावली तप अंगीकार कियो, तीजी महाकाली लघुसिंघ तप कियो, चौथी किन्हा आर्या महासेन सिंघ तप कियो, पांचमी सुकिन्हा आर्याने सातमीसें दसमी भिक्षुनी पड़िमा तप कियो, छट्ठी महा किन्हा आर्या ने लघु सर्वतोभद्र तप कियो, सातमी वीर किन्हा वृद्ध सर्वतोभद्र तप करीने विचरी, आठमी राम किन्हा महोत्तर तप करीने विचरी, नवमी पीयुसेण कन्हा मुक्तावली तप करीने विचरी, दसमी महासेण कन्हा आंबिल वृद्ध माण तप करीने विचरी, इसी इसी तपस्या करीने मुक्ति पहुंता, वांने म्हारी वंदणा नमस्कार होइजो॥१२॥

१३ तेरमो बोल जाणपणेका—धर्मका जाणपणां होय तो जीवदया पाले १, ज्ञानका बल होय तो थोड़ा बोले २, बुद्धिवन्त होय तो सभा जीते ३, साधुकी संगत होय तो संतोष ऊपजें ४, वैराग्य होय तो पांच इन्द्रि वर्मे ५, सूत्र सिद्धांत सुणता रहे तो धर्म विषे प्रणाम चढता रहे ६, प्राणी जीवकी रचा करे तो निर्भयपणो पामें ७, मोह मछरपणो छोड़े तो देवताको पूजनीक हुवे ८, न्याय-मार्गमें चाले तो शोभा पावे ९, सर्व जीवकुं खमत खामणा करे तो साता पावे १०, गुरुरी सेवा भगती करे, विन्य करे तो ज्ञान पामें ११, विद्वानरो संगत करे, विनो करे तो बुद्धि वधें १२, भगवानकी आज्ञासहित क्रिया करे तो मोच पामें १३ ।

॥ चौदहमो बोल ॥

१४ श्रीनन्दजी सूत्रमें १४ प्रकारके श्रोता कहा है १, चालणी जैसे—जैसे चालणी सार सार पदार्थ अनाजको छोड़ असार तुस कंकर वगैरहको धारण करती है तैसे ही कितने ही श्रोता सद्बोधका सार गुण ग्रहणता छोड़ अवगुण ही धारण करते है २, मजार जैसे—जैसे बिल्ली पहले दूधको जमीन पर ढोल देती है और फिर चाट चाट कर पीती है तैसेही कितने ही श्रोता प्रथम वक्ताका मन दुखायके फिर उपदेश श्रवण करते हैं ३, बुगले जैसे—जैसा बुगला ऊपरसे तो स्वेत अच्छा दिखता है और अन्दरमें दगा रखता है तैसे ही कितने ही श्रोता ऊपरसे तो बुगला भक्ति करते हैं परन्तु अन्तकरणमें मलीन होते हैं जिनसे ज्ञान ग्रहण किया

उनके साथही दगा करते हैं ४, पाषाण जैसे—जैसे पाषाण पर वृष्टी होनेसे ऊपरसे तो तरोतर भीज जाता है परन्तु अन्दर पाणी भेदता नहीं है—तैसे कितनेक श्रोता सद्बोध सुणते तो बड़ाही बैराग्य भाव दरसाते हैं और अकृत करते बिलकुल ही डर नहीं लाते हैं ५, सर्प जैसे—जैसे सर्पकु पिलाया दूध जेहर होजाता है तैसे कितनेक श्रोता जिनके पास ज्ञान ग्रहण किया उनकी तथा उनके धर्मकी निन्दा उथापना करने लग जाते हैं जैसे भैंसा जैसे—पाणीमें पड़कर हंग मूत पाणीको शुद्दला देते हैं फिर आप पीता है तैसेही कितनेक श्रोता सभामें अनेक वीकथा कदाग्रह क्लेशकर गड़बड़ मचा देते हैं फिर सुणता है ७, फूटेघट जैसे ज्यों फूटे घड़ेमें पाणी ठहरता नहीं है, त्यों कितनेक श्रोता उपदेश सुन कर वहांही भूल

जाते हैं विलकुल याद रखते नहीं हैं ८, डांस जैसे—जैसे डांस डंश कर रक्त ग्रहण करता है तैसे कितनेक श्रोता ज्ञानीको कौचवाकर ज्ञान ग्रहण करते हैं ६, जलोक जैसे जोक निरोगी रक्तको छोड़ बिगड़े हुवे रक्त ग्रहण करती है त्यों कितनेक श्रोता सद्बोधको वो सद्बोधकके सद्गुणोका त्याग न कर दुर्गुणो को ग्रहण करे यह नव प्रकारके अधम पाप-चारी (खराव) श्रोता कहे जाते हैं १०, पृथ्वी जैसे, ज्यों पृथ्वीको ज्यादा खोदें त्यों त्यों ज्यादा कोमलता आवे और बीजकी ज्यादा उत्पत्ती हुवे त्यों कितनेक श्रोता बहुत परिश्रम देकर ज्ञान ग्रहण करे परन्तु फिर गुणवंत हो ज्ञानादि गुणोंका परिश्रम भी अच्छा करे ११, अंतर जैसे, ज्यों ज्यों अंतर मसले त्यों त्यों ज्यादा सुगंध देवे तैसे कितनेक श्रोता वहुत प्रेरणासे बहुत होसियार होवे

१४ साता वेदनी बंधणेके १४ कारण—दया १, दान २, क्षमा ३, सत्यव्रत ४, शील ५, इन्द्रिय दमन ६, संयम ७, ज्ञान ८, भक्ति ९, बंदना १०, शास्त्र विचार ११, सद्बोध १२, अनुकंपा १३, सत्य बचन १४ ।

१४ विद्याचवदे लोकोत्तर—गणितानुयोग १, करणानुयोग २, चरणानुयोग ३, द्रव्यानुयोग ४, शिक्षाकल्प ५, व्याकरण ६, छंदविद्या ७, अलंकार ८, ज्योतिष ९, निर्युक्ती १०, इतिहास ११, शास्त्र १२, मिमांस १३, न्याय १४ ।

१४ लोकिक चवदह विद्या—ब्रह्म १, चातुरी २, वल ३, वाहन ४, देशना ५, वाहु ६, जलतरण ७, रसायन ८, गायन ९, वाद्य १०, व्याकरण ११, वेद १२, ज्योतिष १३, वैद्यक १४ ।

१४ अवनीतके १४ बोल—बार बार क्रोध करे ते अवनीत १, प्रतिबंधका क्रोध करे ते अव-

नीत २, मित्रकी मित्राई छाड़े तो अवनीत ३, सूत्र भणी मद करे तो अवनीत ४, आपके ओगुण पारके माथे देवे तो अवनीत ५, मित्र उपरी कोप करे तो अवनीत ६, मित्रकी पूठ पाछे निन्दा करे तो अवनीत ७, असमंदकारी भाषा बोले तो अवनीत ८, द्रोही होय तो अवनीत ६, अहंकारी होय तो अवनीत १०, संविभागी किसीकुं नहीं हुवे तो अवनीत ११, अप्रितीकारीयो होय तो अवनीत १२, लोभी होयतो अवनीत १३, इन्द्रियों मोकली मेले-विषय लालची ते अवनीत १४।

१४ सातावेदनी १४ बोल करी बांधे—दयावन्त होय तो साता वेदनी बांधे १, हर्षसुं दान देवे तो साता वेदनी बांधे २, कषाय घटावे—क्षमा करे तो सातावेदनी बांधे ३, व्रत-पच्चखाण शुद्ध पाले तो सातावेदनी बांधे ४,

आरंभ परिग्रह घटावे—पांच इन्द्रि वश करे तो सातावेदनी बांधे ५, छकायरी रक्षा करे तो सातावेदनी बांधे ६, शुद्ध मन शील पाले तो सातावेदनी बांधे ७, ज्ञानवन्त होय—ज्ञानरो उधम करे तो सातावेदनी बांधे ८, साधुको वंदणा नमस्कार करे तो सातावेदनी बांधे ९, सूत्र सिद्धांत भणे तो सातावेदनी बांधे १०, तिर्थंकरजीने वंदना नमस्कार करे तो सातावेदनी बांधे ११, अनुकंपा करे तो सातावेदनी बांधे १२, धर्मोपदेश देवे तौ सातावेदनी बांधे १३, सत्यवचन बोले तो सातावेदनी बांधे १४ ।

१४ वक्तना चौदह गुण लिखते हैं—प्रश्नव्याकरणोक्त शील बोलनो जाण,पंडित होय १, शास्त्रथी विचार जाणे २, वाणीमांही मिठाश होय ३, प्रस्तावअवसर ओलखे ४, सत्य बोले ५, सांभलने वालाका संशय दूर करे

६, अनेक शास्त्रवेत्ता गीतार्थ उपयोगी होय ७, अर्थने विस्तारी तथा सवरी जाणे ८, व्याकरणरहित कृता कठनी भाषामें पिण अपशब्द न बोले ९, वचनसे सभाजनने हर्ष करे १०, प्रश्नार्थ ग्राहक ११, अभिमान रहित १२, धर्मवन्त १३, संतोषवन्त १४, ए चौदह बोलका जाणकार होय सो वक्ता जाणना ।

श्रोताका १४ गुण—भक्तिवन्त १, मिठाबोला २, गर्वरहित ३, सांभलवा उपर रुचि ४, चंचलतारहित एकाग्रचित्त सुणे और धारे ५, जैसा सुणे वैसा प्रगट अक्षर कहे ६, प्रश्नका जाण ७, घणा शास्त्र सुणया तिणके रहस्य जाणे ८, धर्मके कार्य आलस्य न करे ९, धर्म सुणता निन्द्रा न लेवे १०, बुद्धिवन्त होय ११ दातार रूप गुण होय १२, जिसके पास धर्म सुणे उसका पिछाड़ी गुण वर्णवे

१३, कोइनी निन्दा न करे किसीके साथ वाद विवाद न करे १४ ।

॥ पन्द्रहमों बोल ॥

१५ सिद्ध भगवान १५ भेदे होवे, १ तीर्थंकर की पदवी भोगकर सिद्ध हुवे, २ अतिर्थंकर सिद्धा सामान्य केवली सिद्ध हुवे, ३ तीर्थ सिद्धा तीर्थ साधु साधवी श्रावकश्राविकामेंसे सिद्ध होवे, ४ अतीर्थ सिद्धा तीर्थका विछेद होवे उस वक्त जाति स्मरणादि ज्ञानसे बोध पाकर सिद्ध होवे, ५ स्वयंबुद्ध सिद्धा गुरु विना जाति स्मरणादि ज्ञानसे पूर्व भवका स्वरूप जाणके दिक्षा लेके सिद्ध होवे, ६ प्रत्येकबुद्ध सिद्धा वृषभ वृक्ष स्मशान वा दल वियोग रोग इत्यादि देखके अनित्यादि

भावसे स्वयमेव दिक्षा ले सिद्ध होवे, ७ बुद्ध बोधित सिद्धा आचार्यादिकके प्रतिवोधसे दिक्षा ले सिद्ध हुवे, ८ स्त्रीलिंग सिद्धा स्त्रीवेद वीकारका क्षय करे फक्त अवयवरुप स्त्रीलिंग रहै वो दिक्षा ले सिद्ध होवे, ९ पुरुषलिंग सिद्धा ऐसे ही पुरुष विषय वांछा त्याग दिक्षा ले सिद्ध होवे, १० नपुंसकलिंग सिद्धा ऐसे ही नपुंसक वेद क्षय हुवे फक्त लिंगरूप रहै सो दिक्षा ले सिद्ध होवे, ११ स्वलिंग सिद्धा जो रजोहरण मुहपति आदिक साधूका लिंग धार तुरंत प्रणामकी विशुद्धता होनेसे सिद्ध होवे, १२ अन्यलिंग सिद्धा अन्यमतमे किसीकुं अज्ञान तपसे विभंग ज्ञान उत्पन्न होवे उससे जैन साधुकी क्रिया देख अनु-रागजगे जैनशैली आवे तब विभंग ज्ञान फिरी अवधि ज्ञान होवे ज्यों ज्यों प्रणामकी विशुद्धि होती जाय त्यों त्यों ज्ञानकी वृद्धि

होते होते परम अवधि ज्ञान पाय तुरंत घन-घाति कर्मखपाय केवली होय मोक्ष पधारैं जो आयुष्य जास्ती होता तो लिंग भेष बदलते यह अन्य लिंग सिद्धा, १३ गृहलिंग सिद्धा गृहस्थी धर्म क्रिया करते प्रणामकी विशुद्धता हुवे तुरंत केवल ले मोक्ष पधारैं आयुष्य थोड़ेके कारण भेपलिंग नहीं बदल सके सो गृहलिग सिद्धा, १४ एक सिद्धा एक समय मे एक ही सिद्ध होवे सो एक सिद्ध, १५ अनेक सिद्ध एक समयमें दो से लगाकर एक सो आठतक सिद्ध होवे सो अनेक सिद्धः ।

१५ वीनयवानके १५ लक्षण. १ गतिस्थानक भाषा और भाव इन चारों चपला रहित अर्थात स्थिरस्वभावी, २ सरल, ३ अकुतु-हली (अकतोली), ४ किसीका अपमान व तिरस्कार नहीं करे, ५ विशेप काल क्रोध न

रखे, ६ मित्रोंसे हिल मिल चले, ७ ज्ञानका अभिमान न करे, ८ अपनेसे हुआ अपराध स्वीकार करे परन्तु दूसरेपर नहीं डाले ९, स्वधर्मीयोपर कोप नहीं करे, १० अप्रिय-कारीकेभी गुणानुवाद बोले ,११ रहस्य बात प्रगट नहीं करे, १२ विशेष आडम्बर नही करे, १३ तत्वज्ञ, १४ जातिवंत, १५ लज्जावंत जितेंद्री।

१५ आसाता वेदनी वंधणके १५ कारण, १ जीव घात करे, २ छेदन करे, ३ भेदन करे, ४ परिताप करें, ५ चुगली करे, ६ परायेकुं दुःख देवे, ७ त्रास देवे, ८ आक्रंद करावे, ९ स्वतः दुःख शोक करे, १० द्रोह करे, ११ असत्य बोलै, १२ विरोध करे, १३ क्रोध मान उपजावै, १४ युद्ध झगड़े करावै १५, पर निंदा करे।

१५ योग १५ कहां कहां पावे, १ योग वाटे वहता जीवमें, २ योग तीन विकलेन्द्रि पर्याप्तामें,

३ योग चार थावरमें, ४ योग बादर वायुकायरे पर्याप्तामें, ५ योग एकेन्द्रिमें, ६ योग असन्नीमें, ७ योग तेरमें गुणगणामें, ८ आठ योग मून (मोन) वाली आर्यामें अथवा पंचेन्द्रिरे अलद्धीये आहारीकमें. ९ योग परिहार विशुध सुक्ष्म सपराय चारित्रमें, १० योग मिश्रदृष्टिमें—वेक्रिय, आहारीक शरीरमें, ११ (इग्यारह) योग नारकी देवता यथाख्यात चारित्रमें, १२ योग श्रावकमे, १३ योग स्त्री वेदमें, १४ योग सामायिक छेदोपस्थापनीय चारित्रमें, १५ योग समुच्चय जीवमें पावे।

१५ सुविनीतका १५ बोल—नीचाप्रवर्त्ते १, चपलपणा रहित २, मायारहित ३, कतुहलपणारहित ४, कर्कश वचनरहित ५, दीर्घ रोष (रीस) न करे ६, मित्रसु मित्राइपणो सेवे ७, सूत्र भणी मद न करे ८, आचार्यादिकरी निन्दा न करे ९, मित्रके उपर कोप

न करे १०. मित्रके पूठ पाछे गुण बोले ११, कलह ममनरहित १२, ज्ञानतत्व जाणे १३, अभिजात विनेवत १४, लज्यावत गुप्तइन्द्रि ।

१५ बोल १५ समुद्रनी उपमारा संसार वर्णाव—पूज्य भगवान समुद्रमें पाणी छे, संसाररूपीये समुद्रमें कीसो पाणी छे ? उतर—जन्म जरा मरणरूपीयो तथा मोहरूपीयो पाणी छे १, पूज्य भगवान समुद्रमे कादो छे, संसाररूपीये समुद्रमें कीसो कादो छे ? उतर—कामभोग रूपीयो, राग द्वेष रूपीयो कादो छे २, पूज्य भगवान समुद्रमें तो फेन उठे छे, संसाररूपी समुद्रमें कीसा फेण उठे छे ? उतर—अहंकाररूपी फेण उठे छे ३, पूज्य भगवान समुद्रमें तो दरडा छे, संसाररूपी समुद्रमें कीसा दरडा छे ? उतर—त्रसणारूपी दरडा छे ४, पूज्य भगवान समुद्रमें तो कलस उबके छे, संसररूपी समुद्रमे कीसा कलस

उबके छे ? उतर—नारकी तीर्यंच मनुष्य देवतारूपी कलस उबके छे ५, पूज्य भगवान समुद्रमें मगरमच्छ छे, संसाररूपी समुद्रमें किसा मगरमच्छ छे ? उतर--सबला निबलाने मारे छे ७, पूज्य भगवान समुद्रमें तो डुंगर छे, संसाररूपो समुद्रमें कीसा डुंगर छे ? उतर—आठ करमरूपीया डुंगर छे ८, पूज्य भगवान समुद्रमे तो भवरीया पड़े छे, संसाररूपी समुद्रमे कीसा भवरीया पड़े छे ? उतर—दगाबाजी कपटरूपी भवरीया पड़े छे ६, पूज्य भगवान समुद्रमे तो वायरो छे, संसार रूपी समद्रमें कीसो वायरो छे ? उतर—मिथ्यातरूपी वायरो छे १०, पूज्य भगवान समुद्रमें तो सींगोटीया छे, संसार-रूपी समुद्रमे कीसा सींगोटीया छे ? उतर—तीनसे तेसठ पाखंडरूपीया सींगो-टीया छे ११, पूज्य भगवान समुद्रमें तो

मोती नीकले छे, संसाररूपी समुद्रमें कीसा मोती छे ? उतर—साधु साधवी श्रावक श्राविकारूपीया रत्न पदार्थ मोती छे १२, पूज्य भगवान समुद्रमे कल्लोला छे, ससाररूपी समुद्रमें कीसा कल्लोला छे ? उतर—लोभरूपी तथा स्नेहरूपी कल्लोला छे १३ पूज्य भगवान समुद्रमें तो अग्नि छे, संसाररूपी समुद्रमें कीसी अग्नि छे ? उतर—क्रोधरूपी अग्नि छे १४, पूज्य भगवान समुद्रमें काठो छे, संसाररूपी समुद्रमें कीसो काठो छे ? उतर—मोक्षरूपीयो काठो (कीनारो, छेडो) छे १५ ।

॥ सोलहमो बोल ॥

भांपारा बोल—एक वखत भांपाबोले तब अनंता पुद्गल खेरुकरे १, असंख्यात समा

मांहिला दोय समालागे २, लोकने फरसने अलोकरे छड़े तक ठहरे ३, तीन दीसना पुद्गल आहारी ४, तीन सरीरना पुद्गल साहारी ५, भाषा जीव ६, भाषा रूपी ७, भाषा अजीव ८, भाषा जीवरे केड़ें ६, भाषा थितिया पुद्गल लोके वहता पुद्गल लै अर्थात् थितिया लै १०, भाषा आत्म प्रदेशनै बोले, ११, भाषा बोलता असंख्याता समय लागे १२, विचारने बोलेतो ५ बोलसुं बोले १३, विना विचारी बोलेतो १६ बोलसुं बोले, १४ जीवसु उपनी भाषा छै १५, शरीरसु आद लोकने छेहड़े अंत १६ ।

१६ सोले शीलका गुण—शुद्ध शील पाले तो कलंक लागे नहीं १, शुद्ध शील पाले तो संसार समुद्र रहित हुवे २, शुद्ध शील पाले तो साचो धर्म पावे ३, शुद्ध शील पाले तो लौक में जस होय ४, शुद्ध शील पाले तो देवता,

होय ५, शुद्ध शील पाले तो देवताका पूजनीक होय ६, शुद्ध शील पाले तो रूपवत होय, संपदा पावे ७, शुद्ध शील पाले तो सर्प फूलां की माला होय ८, शुद्ध शील पाले तो अग्नि शीतल होय ९, शुद्ध शील पाले तो विष अमृत होय १०, शुद्ध शील पाले तो सिंह मृग होय ११, शुद्ध शील पाले तो गज वकरी होय १२, शुद्ध शील पाले तो आपदासुं संपदा पावे १३, शुद्ध शील पाले तो टुणो टुमण लागे नहीं १४, शुद्ध शील पाले तो समुद्र मार्ग देवे १५, शुद्ध शील पाले तो मेरु पर्वत टीवे सरीखो होवे १६,

---

॥ सतरहमो वोल ॥

१७ (सत्तदस) विहे मरणे पन्नते तंजाह आवियमरणे कहतां कल्लोलनीय परे मरण १, ओहि

मरणे अवधि मार्यादा पूर्ण करने मरे २, आर्तिक मरणे--नरकादिकना दुःख अत्यन्त भोगवीने मरे देवलोकना सुख अत्यंत भोगवीने मरे ३, वलाय मरणे--व्रतभांजीने मरे ४, वसट्ट मरणे---इन्द्रिने परवसथको मरणपामें ५, अंतोसल्ल मरणे---लज्जादिक आंणी अणआलोयां मरणपामें ६, तब्भव मरणे--जे भव मांहि हुवे तेहिज भवनो आऊषो बांधी मरे ७ पंडिय मरणे---सर्वविरती ज्ञानी-थको मरण पामें ८, बाल मरणे---अविर-तीनो अज्ञान मरण ९ बाल पंडिय मरणे—देश विरती श्रावकनुं मरण १०, छद्मस्थ मरणे—केवल ज्ञान पांम्या विना मरण ११, केवली मरणे—केवल ज्ञान पांमी मरे १२, विहायसि मरणे--आकासने विषै फांसी प्रमुखे (फांसीलगाकर) मरण पामें १३, गिद्ध मरणे—मोटा कोई कलेवर मां प्रवेशकर पंखी

तथा सियाल प्रमुख मरे १४, भत्त पच्चक्काण मरणे---भात (आहार) रा पच्च खाण करी मरण पांमें १५, इंगिणी मरणे—अगनी प्रमुखे वली मरे पाउवगाम मरणे—पादोप-गमन संथारो हाथ पग हलावे नहीं १७, एवं सप्तदश प्रकारा ।

७ सम्यक्त रत्नको संभालकर रखनेके लिये हित शिक्षाके उपदेशक बोल—१ भूत भविष्यत वर्तमान कालके सर्व तिर्थंकरोका एक यह ही उपदेश है कि सर्व प्राण (वेंद्री तेंद्री चोरिन्द्रि) भूत (वनास्पति) जीव (पचेंद्री) सत्व (पृथ्वी पाणी अग्नि वायु) इनकी किंचित मात्र ही हिंसा नहीं होती हो किंचित ही दुःख नहीं उपजाता हो येही सत्य सना तन पवित्र धर्म रागी त्यागी योगी और भोगी को एकसा अंगीकार करने योग्य है, २ ऐसा धर्म ग्रहण कर प्रमादी (आलसी) नहीं

होना इसमें दिढ रहना, ३, मिथ्या-त्वीयोंके ठाठ पाट पाखंड देखकर मोहित नहीं होना, ४ दुनियामें मिथ्यात्वियोंकी देखादेखी नहीं करनी, ५ जो देखादेखी नहीं करता है उससे कुमती दूर रहती है, ६ उपर कहे धर्मपर जिनकी श्रद्धा नहीं है उस जैसा कुमति कोई नहीं है उपरोक्त धर्म प्रभूजीने देखकर सुणकर जाणकर और अनुभव करके फरमाया है ८ संसारमें मिथ्यात्वमें फंसे हुवे जीव अनंत संसार परिभ्रमण करे है, ६ तत्वदर्शी जीव सदा धर्ममें प्रमाद छोड़ कर सदा सावधान पणे विचरते हैं, १० जो कर्मबंधके हेतु हैं वो सम्यक्तिको कर्म तोड़ने के हेतू वक्तपर हो जाते हैं, ११ जो कर्म तोड़नेके हेतु हैं सो मिथ्यात्वियोंको कर्मबंध के हेतु हो जाते हैं, १२ जितने कर्मके हेतु है उतने ही कर्म खपानेके हेतु भी जानना,

१३ कर्मपिड़ित जगत जीवको देखकर कोण धर्मकरने सावधान न होयगा, १४ जिनेश्वरका धर्म विषयाशक्त प्रमादियो भी सुणकर तुरंत ग्रहण कर लेते है, १५ मृत्युके मुखमें रहे अज्ञानी आरंभमें (तलालीन) होके भव भ्रमण वढाते हैं, १६ कितनेंक जीव नर्कके दुःखके भी शोकीन होते है वारवार जानेसे तृप्त नही होते है, १७ कूकर्मी अती दुःख पाते हैं और कुकम नही करे सो सुख पाते है।

॥ अठारहमो बोल ॥

॥ अथ चोरकी १८ प्रसुती लिख्यते ॥ १ चोर के साथ मिलके कहे डरो मत मे तुमारे सामिल हूं काम पड़ेगा तव साज देउंगा, २ चोर मिले तव सुख समाधि पूछे, ३

चोरकुं अंगुली आदि संज्ञा करके कहे कि अमुक ठिकाने चोरी करने जावो, ४ आप प्रतीतदार साहूकार बनके पहिले राजा सेठ के धनादिकके ठिकाना देख आवे और फिर चोरको बतावे कि अमुक ठिकाने धन है, ५ चोरी करनें जावो और कोई पकड़नेवाला मिल जाय तो पहिले उसे छिपनेका ठिकाना बतावै, ६ किसीको चोरकी खबर लगी और वो पकड़ने आवे चोर नहीं मिलनेसे उस जाणपुरुषको पूछे कि-चोर किधर गये पूर्व गया होवे,तो पश्चिममे बतावे पश्चिम गये हुवे तो पूर्व बतावे, ७ चोरी करके आये हुये चोरोंको अपनें घरमें मांचा खाट देवे पलं-गादि आसन बेठने सोनेको देवे; ८ चोर चोरीकरते कहींसे पकड़ गये तथा शस्त्र गोली लगी जिससे अंग-उपांगका भंग हुआ, घाव लगा उसको घर पहुंचाने आप घोड़ा- प्रमुख

वाहन देवे, ९ वाहनपर बैठकर जानेकी शक्ति न हुवे तो आप अपने घरमें गुप्त रखे, १० चोरका भारी भारी माल आप लेकर भरती करे, ११ चोरको ऊंचे आसन बैठावे, १२ चोर अपने घरमें है और उनको पकड़-नेवाले आवे तब आप उनको छिपा करके बोले इहां नहीं है, १३ चोरको खान पान माल मकान आदिक भोजन देकर साता उपजावे जाते वक्त आगे खानेका भाता बधावे, १४ जिस जिस ठिकाणे उनको जो जो वस्तुकी चाहना होवे सो उन को गुप्तपणे पहोंचावे. १५ चोर थकके आया होय उसको तैलादिक मर्दन करावे उष्णोदिक पाणीसे न्हवावे गुड़ प्रमुख खवावे, अग्निसे तपावे घाव लगा होवे वहां मलहम पट्टी बांधे इत्यादि साता उपजावे, १६ रसोई निप जाने, अग्नि पानी प्रमुख आप लाय देवे,

१७ घबराकर आये उसे हवा कर शांति करे १८ चोर के लाये हुये धन धान पशु प्रमुखको अपने घरमें बंदोवस्तके साथ रखे जो चाहिये सो देवे यह १८ प्रकारसे चोरको साज (मदत) देनेसे चोर ही कहना यह अठारे काम करने वाला राज दरवारमें सजा पाता है और भी चोरको कहे कि बैठे बैठे क्या करते हो बहुत दिन हुवे चोरी करने क्यों नहीं जाते हो जावो अब तो कुछ माल लावो हम सब तुम्हारा माल खपाय देवेंगे कुछ फिकर मत करो तथा अमुक ठिकाणे कल गये थे कुछ हाथ लगा की नहीं बताइये और भी कूदाली कुस प्रमुख उनको चाहिये सो शस्त्रका साज देवे इत्यादि सब काम करनेवालेको चोर ही कहना यह काम श्रावकको करने उचित नहीं है इस लाल-चसे विवेकवंत अवश्य बचेंगे ॥ इति ॥

॥ उनैसमो बोल ॥



१६ ज्ञाता सूत्र का अध्ययन—१ मेघकुमारको, २ धना सार्थवाह अने विजय चोर को, ३ मोरड़ीके इंडेको, ४ काछवा (कुर्म काछवा) को, ५ शैलक राज ऋषिको (थावच्चापुत्रको) ६ तुंबड़ीको, ७ रोहणीको (सार्थवाह अने- च्यार बहुको) ८ मल्ली भगवती (मल्लीनाथ)को ९ जिनपाल जिनऋषिको, १० चन्द्रमाकी कलाको, ११ द्रावानलको, १२ जितशत्रु राजा अने सुबुद्धि प्रधानको, १३ नंद मणि- कारको, १४ तेतली पुत्र प्रधान अने पोटला सोनारके पुत्रको, १५ नंदी वन फलको, १६ द्रौपदी (अवर कंकानगरी) को, १७ काली द्वीप घोड़े (समुद्र अश्व) को, १८ सुसमा दारिकाको, १९ पुंडरीक कुंडरीकको।

१९ कात्रसग्गरा १९ दोष---गोडे उपर पग

राखे १, काया आघी पाछी डोलावे २, उ-ठंगण लेवे ३, माथो नमाय उभो रहे ४, दोनुं हाथ ऊंचा राखे ५, घुंघटो काढे ६, पगरे उपर पग राखे ७, वांको आडो रहे ८, साधुनी बरोबर रहे ९; गाडीनी ओघणानी परे रहे १०, खड़ो वांको रहे ११, रजोहरण ऊंचो राखे १२, एक आसण न रहे १३, आंख एक ठाम न राखे ०४; माथो हलावे १५, कुंकुकार करे १६, डील चलावे १७, आलस मोडे १८, सुन्य चित्त करे १९ ।

इये उगनीस दोष काउसग्गमे वर्ज्या ।

॥ बीशमां बोल ॥

२० वीस असमाधिया दोष--दवदव करतो चाले तो १, विना पूंजे चाले तो २, पूंजे कहां पग धरे कहां तो ३, मर्यादासुं अधिका पाट पाटला

शज्या भोगवे तो ४, गुरुके बडोंके सामो बोले तो ५, बहुश्रुतिजीकी घात चिंतवे तो ६, एकेंद्रियादि जीवने शाता, रस, विभूषा निमत हणे तो ७, वार वार क्रोध करे तो ८, पीठ पूठे गुणवन्तका अवगुणवाद बोले तो ९, निश्चेकारी भाषा बोले तो १०, नवो कलह करे तो ११, जमाया हुवे कलहकुं वार वार उधेड़े (फिर फिर उदीरे) तो १२, अकाले सिझाय करे तो १३, सचित्त रजसुं खरड्यो होय विना पूंजे ऊठै वैठै चले, अने आहारादि लेणे जाय तो १४, पहर रात्री उपरांत गाढे शब्दे बोले तो १५, वारवार च्यार तीर्थमे कलह करे, गच्छ माहि भेद उत्पन्न करे तो १६, रे तुं बोले तो १७, छवकायके जीवांकुं असमाधि उपजावे तो १८, सवेरेका आहार लावे सामतांइ भोगवे तो १९, एपणा कुमती आहार भोगवे तो २० ।

२० वीस बोले करी जीव तीर्थंकर गोत्र कर्म वांधे, अरिहंतजीरो जाप करे तो जीव कर्मरी कोड खपाते उत्कृष्टी भावना आवे तो तीर्थंकर गोत्र वांधे १, सिद्धारा गुणग्राम करे तो तीर्थंकर गोत्र वांधे २, सूत्र सिद्धांतरा गुणग्राम करे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ३, गुरुना गुणग्राम करे तो तीर्थंकर गोत्र वांधे ४, थिवरना गुणग्राम करे तो तीर्थंकर गोत्र वांधे ५, बहुश्रुतीना गुणग्राम करे तो तीर्थंकर गोत्र वांधे ६, तपस्वीना गुणग्राम करे तो तीर्थंकर गोत्र वांधे ७, ज्ञान उपर उपयोग देतो थको तीर्थंकर गोत्र वांधे ८, सम्यक्त पालतो थको तीर्थंकर गोत्र वांधे ९, विनय करतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र वांधे १० दोय वेला आवसग्ग करतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र वांधे ११, व्रत पच्चक्काण चोखा पालतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र

बांधे १२, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यावतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १३, बारे भेदे तपस्या करतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १४, सुपात्रने दान देवतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १५, वेयावच्च करतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १६, सर्व जीवाने सुख उपजावतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १७, अपूर्वज्ञान पढ़तो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १८, सूत्रनी भक्ति करतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे १९, तीर्थंकरनो मार्ग दीपावतो थको जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

॥ एकईसमां बोल ॥

२१ इकवीस सबला दोष (सबल कर्म) हस्त कर्म करे तो सबलो दोष १. मैथुन सेवे तो २,

रात्रो भोजन भोगवे तो ३, आधाकर्मी आहार भोगवे तो ४, राजपिंड आहार भोगवे तो ५, उद्देशी १, क्रीय २, पामीचे ३; अछिजे ४ अणिसट्टेय ५, अभ्यायरे ६, उदगमनरा ए छव दोप आहार भोगवे तो ६, वारवार पच्च-खकाण लेवे छोडे तो ७, छव महीनामांही नयो टोलो बदले तो ८, एक मासमें ३ नदीके पाणीरो लेप लगावे तो ९, एक मासमें ३ माया थानक सेवे तो १०, सिज्झातरनो आहार भोगवे तो ११, जाणपूछने प्राणातिपात सेवे तो १२, जाणपुछ मृषावाद बोले तो १३, जाण पुछ अदत्तादान लेवे तो १४, सचित्त उपरे ऊठै बैठै तो १५, सचित्त संनिग्ध माटी उपर ऊठै बैठै हले चले तो १६, इन्डा जाला सहित पाट पाटलाभोगवे तो १७, मूल १ कंद २ खंध ३ त्वचा ४ शाखा ५ पलव (प्रवाल) ६ फूल ७ फल ८ बीज ९

हरा पत्र १० ए दश प्रकारनी हरीकाय भोगवे तो १८, एक सालमें दस नदीरो लेप लगावें तो १६, एक वर्ष मध्ये दश माया थानक सेवे तो २०, सचित सेती हाथ पग खरड्या होय जिसके हाथसुं आहार पाणी वेहरावे साधु लेवे तो सबलो दोष लागे २१।

१ श्रावकना इकवीस गुण—अक्षुद्र १, जसवंत २, सोम प्रकृति ३, लोकप्रिय ४, आकरो स्वभाव नही ५, पापसे डरे ६, श्रद्धावत ७, लक्षलक्ष ८, लज्यावंत ६, दयावंत १०, मध्यस्थ ११, गंभीर १२, सोमदृष्टि १३, गुण रागी १४, धर्मकथी १५, साचो पक्ष करे १६, शुद्ध विचारी १७, वृद्धोकी रीत चाले १८, विनयवन १६, किया गुण माने २०, परहितकारी २१।

१ श्रावकके इकवीस गुण—नवतत्त्वका स्वरूप जाणे १, धर्म करणीमें सहाय (सहायता) वंछे

कीर्त्ति नो टोटो पड़े, ११ चिना उच्चाट सोग, संकल्प विकल्प मन राखे तो अकल, बुद्धिको टोटो पड़े, १२ साधु साधवी ग्राम नगर विहार न करे तो धर्म कथारो टोटो पड़े, ज्ञान सीखे सिखावे नही तो जिन शासन तथा सिद्धांतको टोटो पडे, १४ कठिन, कुल्यभाव कठोर परणाम राखे तो शीतलता पणा, सरल पणाका टोटो पड़े. १५ स्त्रीरो लालची होय, स्त्री री अभीलापा वांच्छा करे, राग रागणीं सुणे तो शील व्रत-ब्रह्मचर्यरो टोटो पडे, १६ साधु साधवी श्रावक श्राविका च्यार तीर्थ मांहो मांही हेत मिलाप न राखे तो जैनमार्गरो टोटो पड़े, १७ व्रत पच्चख्काणमें दोप लगावे, आलोवे नहीं, निंदै नहीं, प्राय-च्छित्त लेवे नहीं, तपस्या करे नही, सलेपणा करे नही तो मोक्ष मार्गनो टोटो पड़े, १८ श्री अरिहंतजी रा तथा अरिहंत भापा धर्मरा तथा

ऊंचे से परठे, परठीने तीन वार वोसरे वोसरे नही कहे सो दोष ।

१२ संसारकी चरचा, संसारको नातो करे तथा प्रमाद सेवे तो दोष ।

१३ परठीने आयकर तथा निंद्रासे ऊठकर तथा पडिलेहणा कीये वाद चोविसस्तव (चोई-स्थवो) न करे सो दोष ।

१४ शरीरका मैल उतारे या पुंजे विना खाज खुने निंद्रा लेवे तो दोष ।

१५ विकथा या पर निंदा करे सो दोष ।

१६ कलह या मश्करी करे तो दोष ।

१७ अव्रतीको आदर देवे और आसनका आमंत्रण करे तो दोष ।

१८ भाषा सुमति रखे विना वोले खुले मुंढे वोले सो दोष ।

१९ दो घड़ी व्यतीत होने के पेश्तर स्त्रीके आसन पर (जिस जगह स्त्री वैठी हो उस जगहपर)

पुरुष और पुरुष के आसन पर स्त्री बैठे तो दोष,

२० पुरुष स्त्री को और स्त्री पुरुष को विषय दृष्टि से देखे तो दोष।

२१ अपनी मालकीयती (अपना रख्याहुया) पोषा के उपकरण के सिवाय अन्य चीजे अव्रतीकी आज्ञा लिये विना लेवे या अव्रती (खुले आदमी) के पास कोई भी चीज मंगवावे तो दोष।

श्रावकके २१ लक्षण---१ 'अल्प इच्छा'-थोड़ी इच्छा-विषय तृष्णा शब्द रुपादिकका विषय कमी करे,विषयमें अत्यंत ग्रधी न होवे लुख वृत्ति रहे।

२ 'अल्पारंभ' छव कायका अरंभ बढावे नहीं, अनर्था दंड सेवन करे नही, जितना आरंभ घटता हो उतना घटानेका उद्यम करे।

३ 'अल्पपरिग्रही' धनकी तृष्णा थोड़ी, कुकर्म कुव्यापारकी इच्छा नहीं, जितना प्राप्त हुवा

है, उतनेही पर संतोष रक्खे; मर्यादा संकोचे।
४ 'सुशील' ब्रह्मचर्यवंत, तथा आचार गोचार प्रशंनिय रक्खे।
५ 'सुव्रत्ति' व्रत प्रत्याख्यान शुद्ध निरतीचार चढते प्रणामसे पाले।
६ 'धर्मिष्ठ' नित्यनियम प्रमाणे धर्म क्रिया करे।
७ 'धर्म वृत्ति' मन वचन कायाके योग सदा धर्म मार्गमें प्रवृतता रहे।
८ 'कल्प उग्रविहारी' जो जो श्रावकके कल्प (आचार) है उसमें उग्र विहार करनेवाले अर्थात् उपसर्ग उत्पन्न हुये भी स्थिर प्रणाम रक्खे।
९ 'महासंवेग विहारी' सदा निवृत्ति (निर्दोष) मार्गमें तल्लीन रहे।
१० 'उदासी' संसारके कार्यमें सदा उदासीन व्रत्ति यूक्त रहे।
११ 'वैराग्य वंत' सदा आरंभ परिग्रहसे निवर्तने

की अभीलाषा रक्खे ।

१२ एकांत आर्य निष्कपटी-सरल- बाह्याभ्यंतर एक सरीखे रहे ।

१३ 'सम्यग मार्गी' सम्यक् ज्ञान दर्शन चरीता चरीते मे सदा प्रवृते ।

१४ 'सु साधु' धर्म मार्गमें नित्य वृद्धि करते आत्म साधन करे, प्रणामसे अवृत सर्वथा बंध करदी है, फक्त संसार व्यावहार साधने द्रव्यसे हिंशा करनी पड़ती है ※ इसलिये भाव श्रावकका लक्षण साधु जैसे ही है ।

१५ 'सुपात्र' ज्ञानादि वस्तुका विनाश न होवे तथा दान फली भूत होवे ।

※ हिंशाकी चौभङ्गी—१ द्रव्यसे हिंशा और भावसे हिंशा, जो कषाइ आदिक जीवका बधकरे सो, २ द्रव्यसे हिंशा और भावसे अहिंशा, जो हिंशाके त्यागी मुनीराजको आहार विहार आदिकसे बिन उपयोग हिंशा निपजे सो ३ भावसे हिंशा और द्रवसे दया द्रव लिंगी तथा अभव्यी साधू करे, ४ और द्रवसे भावसे दोनोमे अहिंशा जोके अप्रमादि तथा केवल ज्ञानी मुनिराज पालते है ।

१६ 'उत्तम' सम्यक्त्वी आदिकसे गुणाधिक श्रेष्ठ है ।

१७ 'क्रिया वादी' पुन्य पापके फलको माननेवाले शुद्ध क्रिया करनेवाले ।

१८ 'आस्तिक्य' दृढ श्रद्धावंत जिनेश्वरके या साधुके वचनपर पूर्ण प्रतीतवंत आसतावंत ।

१९ 'आराधिक' जिन वचन अनुसार करणी करनेवाले, शुद्ध वृत्ति ।

२० 'जैन मार्ग प्रभावक' तन, मन, धन, करके धर्मकी उन्नती करे ।

२१ 'अर्हंतके शिष्य' साधु जेष्ट शिष्य, और श्रावक लघू शिष्य, ऐसे अनेक उत्तमोत्तम गुणके धरण हार श्रावक होते हैं ।

ऐसे अनेक गुणके धारक श्रावकजी बारह व्रत ग्रहण कर अव्रत को रोकते है ।

॥ बाईसमां बोल ॥



२२ परिसहः—(१) "क्षुधा परिसह" क्षुधा उत्पन्न होनेसे मुनीश्वर भिक्षावृत्तीसे अपना निर्वाह करे, परन्तु जो कभी आहारका जोग न बने और मरणांत कष्ट आपड़े तो भी अन्न, हरीलीलोती प्रमुख सजीव पदार्थ लेवे नहीं, और पकानादिक क्रिया करके किवां करायके ऐसा सदोष आहार भोगवनेकी इच्छा भी करे नहीं, (२) "पिवासा परिसह" प्यास लगे तो अचित जलकी याचना करे परन्तु जोग न मिलनेसे सचेत जलकी इच्छा भी करे नहीं, (३) "सीय परिसह" शीत निवर्तन करनेके लिये अग्निसे शरीर तपाने की, या मर्यादा उपरांत वस्त्र भोगवनेकी, या मर्यादा के अंदर भी सदोष-अकल्पनीय वस्त्र ग्रहण करनेकी इच्छा करे नहीं, (४)

"उसिन (उष्ण) परिसह"—उष्णता तापसे आकूल व्याकुल होने पर भी साधु स्नान करे नही, और पंखा आदिसे हवा लेवे नहीं, (५) "दश मस परिसह"--वर्षा ऋतुमें डांस--मच्छर खटमल इत्यादि जीवोंकी पीड़ा होनेसे उनको समभावसे सहन करे (६) "अचेल परिसह"—वस्त्र फट जानेसे और जीर्ण होनेसे भी मुनीदीन--पणे वस्त्रकी याचना करे नहीं, तथा सदोष वस्त्र भोगवने की इच्छा करे नहीं, (७) "अरइ परिसह"-अन्न वस्त्रादिक का जोग नहीं बननेसे भी साधुको अरति (चिंता) उत्पन्न नही होनी चाहिये, नरक तिर्यंचादि गतिमें जो दुःख परवश्य पणे सहे हैं उनको याद करके परिसह समभावसे सहन करे, (८) "इत्थी (स्त्री) परिसह" कोई दुष्टा (स्त्री) साधुको विषयकी आमंत्रणा करे, किंवा हाव-भाव-

कटाक्षसे मन खैंचनेकी युक्ती करे, तो भी
साधु अपने मनकी लगाम बराबर पकड़
रक्खे और इस तरह विचार करे कि :—

काव्य—समाइ पेहाए परिव्वयंतो,
सियामणो निस्सइ बहिद्धा।
न सा महं नोवि अहपितीसे,
इच्चेवताओ विणइज्ज रागं॥

अर्थात्-- श्री दशवेकालीक सूत्रमे ऐसा
कहा है कि यदि स्त्री आदिकको देखनेसे
साधुका मन संयमसे भ्रमीत हो जावे तो,
ऐसा चितवन करना कि--ये स्त्री मेरी नही
है, और मैं उनका नहीं हूं, ऐसा विचारके
स्नेह राग निवारना, ऐसा करने पर भी जो
मन शांत न होवे तो :—

आया वया ही चय सोगमल्लं,
कामे कमाही कमियं खू दुखं।
छिंदाहिं दोसं विणाइज्ज राग,
एवं सुही होइसि संपराए॥५॥

अर्थात्-शरीरका सुखमालपणा छोड़कर सूर्यकी आतापना लेना, उणोदरी प्रमुख बारह प्रकारके तप करना, आहार कमी करता जाना, क्षुधा सहन करना, ऐसा करनेसे शब्दादिक काम भोग और उनसे उत्पन्न होनेवाले राग द्वेष दूर रहेगा और जिवको सुख मिलेगा, (६) "चरिया (विहार) परिसह"—प्रेमफासमें नहीं फसनेके लिये साधूको ग्रामानुग्राम विचरना पड़ता है, नवकल्पी (८ महीनेके ८, और चौमासैका १, ऐसे ६ कल्पी) विहार करना पड़ता है, वृद्ध-थीवर-रोगी तपस्वी या उन्होंकी सेवा करनेवालेको तथा ज्ञाननिमित्त गुरुकी आज्ञासे एक ग्राम रहनेमें अटकै नहीं, (१०) "निसीया परिसह" चलते चलते साधूको रास्तेमे विश्रामके लिये एक ठिकाने बैठना पड़े और वहां समविषम भूमिका

मिले तो राग द्वेष नही करे, (११) " सिज्जा परिसह "—कहीं एक रात्री और कहीं चातुर्मासादिक अधिक काल रहना पडे और वहां मनोज्ञ सेज्जा (शय्या)-स्थान क रहनेका मकान) नहीं मिले—टूटाफूटा इत्यादि, उपद्रवकारी मकानका संयोग बने तो मनमें किलामना नही पावे, (१२) "अक्कोस (रीस) परिसह" ग्रामादिकमें रहते साधुका भेष—क्रिया प्रमुख देखकर कोई इर्षावंत या मताभिमानी मनुष्य कठोर वचन कहे-निंदा करे--अछता आल देवे-ठग पाखंडी बतावे तो भी साधू समभावसे सहे —(१३) "वध परिसह --कोई मनुष्य कोपात्र होकर ताडन कर बैठे तो भी मुनी सम भावसे सहे, (१४) " याचना परिसह "— औषधादिक री जरूर पडनेसे याचना करनां पडे ता ' मै मोटे घरका होकर कैसे मांगू ?

ऐसा अभिमान न लावे, साधुका तो निर्वाह याचनापर है, (१५) " अलाभ परिसह " याचना करने पर भी इच्छित वस्तु न मिले तो खेद नहीं लाना, (१६) "रोग परिसह" शरीरमें कोई प्रकारका रोग उत्पन्न होनेसे " हाय, हाय ! त्राह, त्राह ! " ऐसा न करे, (१७) " तृण फास परिसह " रोगसे दुर्बल हुवा शरीरको पृथ्वीका कठण स्पर्श सहन न होवे तब कुछ गादी तकीए तो साधूके कामको आवेहीं नहीं शाल (चावल) इत्यादिकका नरम पराल (घास) का बिछाना उपर शयन करे जब उसका स्पर्श शरीरको कठिन (करड़ा) लगे तो गृहस्थावासको न सभाले, (१८) " जल मेल परिसह"—मेल और परसीनेसे घबराया हुवा साधु स्नानकी अभीलाषा न करे, (१६) "सत्कार परिसह"— साधुको सत्कार वंदना नमस्कार न करे तो

इससे साधुको बुरा न मानना चाहिये, (२०) "पन्ना परिसह"—साधुके पास ज्ञान ज्यादा होनेसे बहोत जणे सूत्रकी वांचना लेनेको आवे, कितनेक प्रश्न पूछनेके लिये आवे, तब कोचवाकर (कन्टाल कर) घबराकर ऐसा न चिंतवे कि मैं मूर्ख रहता तो ऐसी तकलीफ नही पड़ती, (२१) "अन्नाण परिसह" बहुत परिश्रम उठाने पर भी ज्ञान न मिले तो खेदित नही होना चाहिये, अकेले ज्ञानसे मोक्ष नही है, ज्ञान और क्रिया दोनोंकी जरुरत है, (२२) "दंशण परिसह"—ज्ञान थोड़ा होनेसे जिन वचनमें शंका आदि उत्पन्न हुवे तो समकितको दूषण (अनाचार) लगावे नहीं, परन्तु शास्त्र वचनपर पूर्ण श्रद्धा रक्खे।

२२ परीसह (परीषह) विचार—गाथा पन्ना अन्नाण परीसह नाणावरणम्मिहूंति दोचेव

एकोअ अंतराए अलाभ परीसहोचेव, १ अरइ अचेल ईर्या निसहीया जायणाय उक्कोसा सक्कार परीसहे एए चरित्तमोहम्मिसत्तेव दंसण मोहे दंसण परीसहो नियम सो हवंइ एको सेसा परीसाहा खलु एकारस वेय-णिज्जम्मि, २ बावीस परीसह चारकर्म थी उपजै, ज्ञानावरणी थी बे परीसह उपजै, तेहना नाम प्रज्ञा १ अज्ञान २ परीसह, वेदनी थी ११ परीसह ते केहा (किसा) क्षुधा १, तृषा २, शीत ३, उष्ण ४, डांस मसा ५, चर्या ६, शिज्जा ७, वध ८, रोग ९, तृण स्पर्श १०, मल ११, मोहनी थी ८ परीसह उपजै दर्शन मोहनी थी दर्शन परीसह चरित्र मोहनी थी सात उपजै ते केहा? १ अरति २ अचेल ३ स्त्री ४ निषेध ५ याचना ६ आक्रोश ७ सत्कार अंतरायथी १ ऊपजै अलाभ एवं २२ परीसह छद्मस्थ एकै समें

२० परीसह वेदै शीत अथवा उष्ण चालवो अथवा बैसवो केवलीनें इग्यार परीसह होय तिणमे एकै समय ६ वेदै शीत अथवा उष्ण चालवो तथा बैसवो वीयराग संयमें एकै समय १२ परिसह वेदे द्वाविंश तिरपि परीषहा वादर संपराय नाम्नि गुणस्थानके कोऽर्थोऽनिवृत्ति वादर सपराये नवमं गुणस्थानं यावत् सर्वेपि परीषहा भवंति चतुर्दश संख्या एव क्षुत्पिपासा शीतोष्ण दंशमसक चर्य्या शय्या वधा लाभ रोग तृण स्पर्शमल प्रज्ञा अज्ञान परीसहा सूक्ष्म संपराये उदय मासादयंतीति तथा आठकर्मनो वधतेहनि २२ परिसह बीस एकै समय बंध छविहबंध सराग छद्मस्थनें १४ परीसह उदय १२ नौ एकविहबंधक वीतराग छद्मस्थनें १४ उदय १२ नौ एकविह बधक सयोगीनें ११ परीसह अयोगिनें ११ परीसह उदये

६ होइ पूर्ववत् युग्म परीसहाभावः इति २२ परीषहाधिकारः ।

२२ वाद, २२ जणासुं वाद न कीजे—१ धनवन्त सेती वाद न कीजे, २ वलवन्त सेती वाद न कीजे, ३ घणे परिवाररे धणीसुं वाद न कीजे, ४ तपस्वीसुं वाद न कीजे, ५ नीचसुं वाद न कीजे, ६ अहंकारीसुं वाद न कीजे, ७ गुरांसुं वाद न कीजे, ८ थिवरसुं वाद न कीजे, ९ चोरसुं वाद न कीजे, १० जुवारीसुं वाद न कीजे, ११ रोगीसुं वाद न कीजे, १२ क्रोधीसुं वाद न कीजे, १३ झुठबोले जिणसुं वाद न कीजे, १४ कुसंगतीसुं वाद न कीजे, १५ राजा सेती वाद न कीजे, १६ शीतल लेश्यारे धणीसुं वाद न कीजे, १७ तेजु लेश्यारे धणीसुं वाद न कीजे, १८ मुख मीठा पेटे दगो लिणसुं वाद न कीजे, १९ दानेसरीसुं वाद न

कीजे, २० ज्ञानीसुं वाद न कीजे, २१ गणिकासुं वाद न कीजे, २२ बालकसुं वाद न कीजे।

॥ तेइसमो बोल ॥



२३ तेवीस बोल वेगा (जल्दी) मोक्ष जाणेका, १ आकरो (कठिन) तप करे तो जीव वेगो (शिघ्र) मोक्ष (मुक्ति) जावे, (जाय) २ मोक्ष-कार्य करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ३ शुद्ध प्रणामसे सूत्र सिद्धांत सुणे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ४ शुद्ध मनसुं सूत्र ज्ञान भणे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ५ पांच इन्द्रीयोंना विषय त्यागे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ६ छव काय जीवांरी दया पाले तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ७ भण्या हुवा ज्ञान चार

वार चितारे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ८ साधु साधवीरी भक्तिभाव राखे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ९ तीन योगसे जैसे करणो करावणो अनुमोदनो यह नव कोटी शुद्ध पच्चक्खाण करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १० धर्मको संवन्ध साचो जाणे (सद्दहे) तो जीव वेगो मोक्ष जावे, ११ कषायका त्याग करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १२ क्षमा करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १३ लाग्या दोष का प्रायश्चित लेवे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १४ लीये हुवे व्रत पच्चक्खाण निर्मला पाले तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १५ शुद्ध प्रणामसुं शील पाले तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १६ च्यार तीर्थने साताउपजावे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १७ निरवद्य भाषा बोले तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १८ संजम लेकर अंत तक शुद्ध पाले

तो जीव वेगो मोक्ष जावे, १६ धर्मध्यान
शुक्ल ध्यान ध्यावे तो जीव वेगो मोक्ष जावे,
२० महीनेमें छव पोसा करे तो जीव वेगो
मोक्ष जावे २१ पाछली रात्रीरा धर्म जागरणा
करे तो जीव वेगो मोक्ष जावे, २२ उभय टंक
कालो प्रतिक्रमण करे, सामाइक करे तो जीव
वेगो मोक्ष जावे, २३ आलोयणा लेइ संथारो
करी पंडित मरण हुवे तो जीव वेगो मोक्ष
जावे।

॥ चौवीसमां बोल ॥

॥ वर्तमाने चौवीसी ॥

२४ तिर्थंकरांका नाम---१ श्री ऋषभदेवजी,
श्री अजितनाथजी, ३ श्री संभवनाथजी,
श्री अभिनंदनजी, ५ श्री सुमतिनाथजी,
श्री पद्मप्रभुजी, ७ श्री सुपार्श्व नाथजी,

श्री चंद्रप्रभुजी, ९ श्री सुविधिनाथजी, १० श्री शीतलनाथजी, ११ श्री श्रेयांसजी, १२ श्री वासपूज्यजी, १३ श्री विमलनाथजी, १४ श्री अनन्तनाथजी, १५ श्री धर्मनाथजी, १६ श्री शांतिनाथजी, १७ श्री कुंथुनाथजी, १८ श्री अरनाथजी, १९ श्री मल्लीनाथजी, २० श्री मुनि सुव्रतजी, २१ श्री नमिनाथजी, २२ श्री रिष्ठनेमिनाथजी, २३ श्री पार्श्वनाथजी, २४ श्री महावीर स्वामीजी।

२४ भगवती सूत्र शतक १९ उद्देसे नवमें बोल २४—मनुष्य तिर्यंचमें बैठा थकां नारकीमें जाणेवाले कुं भव द्रव्य नेरीया कहीजे १, भव द्रव्य नारकीयारी (नेरियारी) स्थिति जघन्य अंतर्मुहुर्तकी उत्कृष्टी कोड पूर्वकी मनुष्य तिर्यंचमें बैठा थकां देवतारो आउखो बांधे तिके भव द्रव्य देवकी स्थिति असुर-कुमारादि १० भुवनपती, वाणव्यंतर, जोतषी,

वैमानीकरी स्थिति जघन्य अंतर्मुहुर्त उत्कृष्टी ३ पल्यकी मनुष्य तिर्यंच देवतामे वैठा थकां पृथ्वी १, पांणी २, वनस्पतीमें जाणे-वालेकी स्थिति जघन्य अंतर्मुहुर्त उत्कृष्टी २ सागर झाझेरी मनुष्यमे तिर्यंचमें वैठा थकां तेऊ १ वायु १ तीन विकलेन्द्रिमे जाणेवालागी स्थिति जघन्य अंतर्मुहुर्त उत्कृष्टी कोडपूर्वकी च्यारु गतीमें वैठा थकां मनुष्य १ तिर्यंचमें जाणेवालेकी स्थिति जघन्य अंतर्मुहुर्त उत्कृ-ष्टी ३३ सागरकी।

२४ दंडकका बोल—साधु आर्याजीमें १ दंडक पावे, सरावगमें २ दंडक पावे, विकलेन्द्रिमें ३ दंडक पावे, सत्तकहताप्रथ्वीयादिकमें ४ दंडक पावे, एकेन्द्रिमे ५ दंडक पावे, घ्राणेन्द्रिके अलद्धियेमे ६, चक्कु इन्द्रिके अलद्धियेमे ७, असन्नीयेमे ८, तिर्यंचमें ९, भवन पतीमें १० नपुंसकमें ११ तीरछेलोकमें

१२, देवतामें १३, नोगर्भजरे मनयोगीमें १४, पुरुषवेदमें १५, पंचेन्द्रिमें १६, वैक्रीये शरीरमें १७, तेजुलेश्यामें १८, त्रसकायेमें १६, सत्यरे अलद्धियेमें २०, नीचे लोकमें २१, माठीलेश्यामें २२, पृथ्वी पांणी तेईसरी आगतमें २३, सिद्धांरे अलद्धियेमें दंडक २४, पावे।

॥ पचीसमो बोल ॥

२५ में बोले सामायिकरा २५ भेद—१ द्रव्यथकी निकट भवी, २ क्षेत्रथकी त्रसनाडी, ३ कालथकी देसउणो अर्द्ध पुद्गलीक, ४ भावथकी क्षय उपशम, ५ पुनःद्रव्यथकी ५ आश्रवरात्याग ६ खेत्रथकी आखेलोकमें, ७ कालथकी इतर आवत, ८ ।

जोग ६ द्रव्यशुद्धि-भडउपगरणनिरविकार, १० क्षेत्र शुद्धि-चित्रामादिकरो मकान नहीं होवे अथवा राजादिकरो कोई काम नहीं हुवे, १२ भाव शुद्धि-शुद्ध श्रद्धा, १३ सामान्य-समभाव, १४ विशेष च्यार भेद-सूत्र सामायिक समकित सामायिक देशवृति सामायिक सर्ववृत्ति सामायिक १५ नाम निक्षेपाकरी किसी जीव अजीवरो नाम सामयिक देवे १६ स्थापना निक्षेपाकरी अक्षर लिख दीया-- "सामायिक" अथवा पुतली रख दीवी १७ द्रव्य निक्षेपाकरी-सुन्यचित्त १८ भावनिक्षेपा उपयोग सहित १९ नेगमनय सामायिकरा भाव हुआ, २० सग्रह नय सामायिकरा भंड उपगरणका संग्रह किया, २१ व्यवहार नय सावद्य योगका त्याग करे २२ ऋजुसूत्र नय बत्तीस दोष टाले २३ शब्द नय आत्मा और जीवने मित्र पणेमाने २४ समभिरूढ नय

श्रद्धा उपर आरुढ हो गया २५ एवंभूत नय-निज आत्मरूपकुं सामायिक माने अन्य नहीं (अन्यने नहीं माने),

२५ वक्ता उपदेशकके गुण—१ दृढ श्रद्धावंत होवे क्योंकि जो आप पक्के श्रद्धावंत होंगे वोही श्रोताकी श्रद्धाको निशंकितसे दृढ कर सकेंगे, २ वाचनाकलावंत हुवे किसी भी प्रकार के शास्त्रको पढते हुये जरा भी अटके नही शुद्धता और सरलतासे शास्त्र सुणावे; ३ निश्चय व्यवहारके जाण होवे जिस वक्त जैसी परषदा और जैसा अवसर देखे वैसा ही सद्बोध करे की जो श्रोता गुणधारण करे उनको आत्मामें रुचे, ४ जिनाज्ञा भंगका डर होवे यथार्थात् एक देशके राजाकी आज्ञाका भंग करनेसे सजा मिलती हैं तो त्रिलोकी नाथ तिर्थंकर भगवानकी आज्ञाका भंग करेगा उसका क्या हाल होवेगा ऐसा जाण

आज्ञाविरुद्ध विपरीत परुपणा न करे, ५ क्षमा वंत हुवे क्योंकि क्रोधी होवेगा वो अपणे दुर्गुणसे डरता क्षमादि धर्मकी यथातथ्य परुपणा नहीं कर सकेगा और वक्तपर क्रोध उत्पन्न होवेगा रंगमें भंग कर देवेगा इस लिये वक्ता क्षमावंत चाहिये, ६ निराभिमानी अर्थात् विनयवानका बुद्धि प्रवल रहती है वो यथातथ्य उपदेश कर सकते है और जो अभिमानी होता है वो सत्यासत्यका विचार नहीं करते अपने खोटी बातको भी अनेक कुहेतु करके सिद्ध करेंगे और दुसरेकी बात को भी उत्थापन करेंगे, ७ निष्कपटी होवेगा जो सरल होवेगा सोही यथातथ्य बात प्रकाशेगा कपटी तो अपणे दुर्गुण ढकनेके लिये बातको पलटावेगा ८, निर्लोभी होवे सो वेपरवाइ रहते है वो राजा रंक सबको एक सा सत्य उपदेश कर सकते है और

लोभी खुशामदी करनेवाले होते हैं, वो श्रोताका मन दुःखा जानके वातको फिरा देते हैं, ६ श्रोताके अभिप्रायका जाण होवे अर्थात् जो जो प्रश्न श्रोताके मनमें उठें उनकी मुखमुद्रासे जाण उनका आप ही समाधान कर देवे, १० धैर्यवंत होए कोईभी बात धीरजसे श्रोताके समझमें आवें वैसी ही करै तथा प्रश्नका उत्तर श्रोताके समझमें बेठे ऐसा मधुरतासे थोड़ेमें देवे, ११ हटग्राही नही होवे अर्थात् किसी प्रश्नका उत्तर आपको न आवो तो उसकी झुठी स्थापना नहीं करे नम्रतासे कहै कि मेरेको उत्तर नहीं आता है मैं किसी गुरुसे पूछकर निश्चय करूंगा १२ सद्गुणी-निंद्यकर्मसे बचा हुवा होवे सो अर्थात् राजारी विश्वास-घात इत्यादि कर्म जिसने नहीं किये होवे वो जो के किसीसे दबता नही है, १३

कुलहीण नहीं होवे क्योंकि कुल हीणकी श्रोता मर्यादा नहीं रख सक्ते है, १४ अंग हीण न होवे क्योंकि अंगहीण शोभता नहीं है १५ कुस्वरी न होए क्योंकि खोटे स्वरवाले का वचन सुहाता नहीं है १६ बुद्धिवंत होवे १७ मिष्टवचनी होवे, १८ कांतिवंत होवे, १६ समर्थ होवे उपदेश देता थके नहीं २० बहुत ग्रन्थ अवलोकन (देखे) हुए होय २१ अध्यात्म अर्थका जाण होवे, २२ शब्दका रहस्यका जाण होवे २३ अर्थ संकोचन विस्तार कर जाणे २४ अनेक युक्तियों, तर्कों का जाण होवे, २५ सर्वशुभ गुण युक्त होवे यह २५ गुण युक्त होगा सोही असर कारक सद्उपदेश कर सकेंगे ।

२५ मे बोल—पांच महाव्रतकी पचीश भावना, पहिले महाव्रतकी पांच भावना—इर्याभावना १, मनभावना २, वचनभावना ३, एषणा-

॥ २५॥ साढ़ा पचीस आर्य देश ॥



१ मगध देश राजगृहीनगरी १ कोड ६६ लाख ग्राम ।
२ अंग देश चंपानगरी ५ लाख ग्राम ।
२ वंग देश ताम्रलिप्तीनगरी १८ लाख ग्राम ।
४ कलिंग देश कंचनपुर नगर २० लाख ग्राम।
५ काशी देश वाणारसी नगरी १ लाख ६० हजार ग्राम ।
६ कोशल देश साकेत (अजोध्या) नगर ६६ हजार ग्राम ।
७ कूरू देश गजपुर नगर (हथीणापुर) ८ लाख २३ हजार ४२५ ग्राम ।
८ कूशार्त्त देश सौरीपुर नगर १ लाख ४३ हजार ग्राम ।
९ पांचाल देश कपिलपुर नगर ३ लाख ६३ हजार ४

२० सिंधू देश वीतभय (पाटण) नगर ६ लाख
 ८० हजार ५०० ग्राम ।
२१ सौवीर देश मथुरा नगरी ८ हजार ग्राम ।
२२ सूरसेन देश पावा नगरी ३६ हजार ग्राम ।
२३ भंग देश मासपुरी नगरी ५२ हजार ४५०
 ग्राम ।
२४ कुणाल देश सावत्थी नगरी ६३ हजार ग्राम ।
२५ लाट देश कोटीवर्ष नगरी ७ लाख १३
 हजार ग्राम ।
२५॥ केकय (अर्द्ध कैकेइ) अर्द्ध देश श्वेतंविका
 नगरी १ लाख २६ हजार ग्राम आर्य्य
 १ लाख २६ हजार ग्राम अनार्य्य
 ७ हजार ग्राम खालसे ।
ग्राम सख्या श्रीपनणाजी सुत्रके अर्थमे है।

१४॥ (साढापचीस) आर्य देश १, मगध देश राजगृह नगरी १ कोड ६६ लाख गाम २, अंगदेश चंपानगरी ५, लाख गाम ३, वंग देश तामलीसी नगरी १८ लाख गाम ४. कलिंग देश कंचणपूर नगर २० लाख गाम ५, काशी देश वाणारसी नगरी १ लाख ६० हजार गाम ६, कोसल देश साकेत नगर (अयोध्या नगरी) ६६ हजार गाम ७, कुरू देश गजपुर नगर (हथीनापुर नगर) ८ लाख २३ तेवीस हजार ४२५ गाम ८, कुशार्त्त (कुशावर्त्त) देश सोरीपुरी नगर १ लाख ४३ हजार गाम ६, पंचाल देश कंपिलपुर नगर तीन लाख ६३ हजार गाम १०, जंगल देश अहिछत्ता नगरी ७ लाख ४५ हजार गाम ११, वत्थ (कछ) देश कोशंबी नगरी २८ हजार गाम १२, सांडिल देश नंदीपुर नगरी २१ हजार गाम १३. मालय देश भद्दिलपुर

नगरी ७० हजार गाम १४, वच्छ देश वेराट नगरी (वेराटदेश वच्छपुर) २ लाख ८८ हजार गाम १५, दशार्ण देश मृत्तिकावती नगरी १८ हजार गाम १६, वरण देश अत्थापुर नगरी चोवीस २४ हजार गाम १७, विदेह (वेदि) देश शौक्तिकावती नगरी ४२ हजार गाम १८, सिंधू देश वीत भय पाटण (नगर) ६ लाख ८० हजार पांचसो गाम १९, सौवीर देश मथुरा नगरी ८ हजार गाम २०, विदेह देश मिथिला नगरी ८ हजार गाम २१, सुरसेन देश पापा नगरी (पावापुरी) ३६ हजार गाम २२, भंग देश मासपुर नगर ५२ हजार चार सो पचास गाम २३, लाट देश कोटोवर्ष नगरी (कादा वर्ती नगरी) ७० लाख १२ हजार गाम २४, कुणाल देश सावत्थी नगरी ६३ हजार गाम २५, सोरठ देश द्वारा नगरी ६८

हजार पांचसो २६ गाम २५॥, केकेई अर्द्ध (केकेय) देश श्वेतविका नगरी १ लाख २६ हजार आर्य देश १ लाख २६ हजार अनार्य देश ७ हजार खालसे।

॥ पाठन्तर ॥

अथ आर्य देश १ मगध देश राजगृही नगरी पूर्व देश प्रसिद्ध मुनिसुव्रत जन्म २ अंगदेश चंपा नगरी राजगृहीथकी पूर्वदेशे कोश ६० श्री वासुपूज्य पंचकल्याणक वंगदेश तामलिप्ता नगरी सम्मेत शिखरथी दक्षिण दिशे उड़ीसा जगन्नाथपुरी पासे ४ कालिंग देश कंचणपुर नगरी हाजी पुर थी पूर्व दिशे ३० कोस, कोशलदेश अयोध्या नगरी खइराबादथी कोश ६० उत्तर दिशें इस समय आहिज प्रसिद्ध छै ६ कुरुदेश हस्तिनापुर नगर दिल्लीथी

कोस ४० इशानकुणै शांति कुंथु अरि जन्म कल्पाणक ७ कुशावर्त्त देश सोरीपुर नगर आगराहूंती कोश १८ अग्निकूणैं नेमिजिन जन्मकल्पाणक ८ पंचालदेश (पंजाव) कांपिल्यपुर नगर आगराहूंती कोश ५० उत्तर दिशैं श्री विमलनाथ जन्म ९ जंगलदेश अहिछत्ता नगरी सांभलि थकी कोस ४० उत्तर दिशी १० सोरठ देश द्वारिका नगरि गुजरात परै प्रसिद्ध ११ काशी देश वणारसी नगरी जुणपुरथी कोश १८ अग्निकुंणे १२ विदेह देश मिथिला नगरी हाजीपुरथी कोश ४० उत्तर दिशैं गंगापार मल्लिनमि जन्मः १३ बच्छ (वत्स) देश कोशंबी नगरी जुणपुरथी कोस ५० पूर्व दिशैं पद्म प्रभु जन्मः १४ शांडिल्य देश नंदिपुर झाड़ खंड मांहि १५ मलय देश भद्दिल पुर समेत शिखरथी कोश २५ उत्तर पासैं शीतल जन्मः १६ वैराट देश वच्छपुर

सांभरपासै १७ वरण देश अच्छापुर (अत्थापुर) १८ दशार्ण देश मृत्तिकावती नगरी गया थी २५ कोस १६ वेदीदेश श्रुक्ति नगरी हाजीपुरथी कोश ५० उत्तर दिसै २० सिंधू देश वीतभय पाटण जेसल मेरथी पश्चिम दिशै २१ सोवीर देश मथुरा, राजगृही पासै २२ वंगदेश पावापुरी राजगृही पासै २३ वत्त देश (भंगदेश) मासपुर ४२ कुणाल देश सावथी नगरी खेराबादथी ६० कोस २५ लाटदेश कोडीवर्ष नगर उड़ीसा पासे २५॥ कैकेई देशार्द्ध श्वेतांविका नगरी च्त्रीकुंडथी कोस ५० इति साडापच्चीस आर्य देश जाणना ॥

॥ छवीसमां बोल ॥

२६ प्रकारे दशाश्रुत स्कंध, बृहत् कल्पने व्यवहारनां अध्ययनः—(१) दस दशाश्रुत

स्कंधना, (२) छ बृहत् कल्पना, (३) दश व्यवहारनां अध्ययन छे (१०—६—१०=२६)।

॥ सातावीसमां बोल ॥

२७ प्रकारे अणगारना गुण— (१) सर्व प्राणातिपातथी विराम, (निवर्ते) (२) सर्व मृषावादथी विराम, (३) सर्व अदत्तादानथी विराम, (४) सर्व मैथुनथी विराम (५) सर्व परिग्रहथी विराम, (६) श्रोत्रेन्द्रिय निग्रह, (७) चक्षुरेन्द्रिय निग्रह, (८) घ्राणेन्द्रिय निग्रह, (९) रसेन्द्रिय निग्रह, (१०) स्पर्शेन्द्रिय निग्रह, (११) क्रोध विजय, (१२) मान विजय, (१३) माया विजय, (१४) लोभविजय, (१५) भाव सत्य, (१६) करण सत्य, (१७) योग सत्य, (१८) क्षमा, (१९) वैराग्य, (२०) मनसमा-

धारणता, (२१) वचन समाधारणता, (२२) काय समाधारणता, (२३) ज्ञान, (२४) दर्शन (२५) चारित्र, (२६) वेदना सहिष्णुता, (२७) भरण सहिष्णुता,

---

॥ पाठन्तर ॥

पंच महव्वय जुतो, पचिंद्रिय समरणो। चउविह कषाय मुको, तउसमाधारणीया॥
तिउसच्च संपन्न तिउ, खंती संवेगरउ। वेयणामच्चू भयगयं, साधुगुण सत्तवीसं॥

अर्थ—५ महाव्रत (पच्चीस भावना युक्त) शुद्ध निर्दोष पाले, ५ इन्द्रियों २३ विषयसे निवर्ते, ४ क्रोधादि कषायसे निवर्ते।

१५ 'मन समाधणिया' पापसे मन निवर्तोके धर्म मार्गमे प्रवर्तावे, १६ 'वय समाधारणिया' निर्दोष कार्य उपने बोले १७ 'काय समाधर-

णिया कायाकी चपलता रुंधे १८ 'भाव सच्चे
अंतःकरणके प्रणामकी धारा सदा निर्म
शुभ वर्धमान धर्मध्यान शुक्र ध्यान युक्त र
१६ 'करण सच्चे' करण सित्तरीके ७० गु
युक्त, तथा साधुको क्रिया करनेकी वि
शास्त्रमें फरमाइ है वैसी सदा योग्य वक्त
करें, पिछलि प्रहर रात बाकी रहे तब जाग्र
होके आकाश दिशा प्रतिलेखे (देखे) वि
किसी प्रकारकी असभ्भाइ तो नहीं है? जो
निर्मल दिशा होय तो सास्त्रकी सज्भाय क
फिर असभ्भाइकी (लाल दिशा) हो त
प्रतिक्रमण करे, सूर्योदय पीछे प्रतिलेहन
करे, अर्थात् वस्त्रादिक सर्व उपकरणको देखे
फिर प्रहर दिन आवे वहां तक स्वाध्याय
करे, तथा श्रोतागणका योग्य होय तो धमो
पदेश करे—व्याख्यान बांचे, फिर ध्यान करे
शास्त्रके अर्थकी चितावना करे, और जो

भिक्षाका काल हो तो गौचरी निमीत्त जाकर शुद्ध आहार विधियुक्त लाकर आत्माको भाड़ा देवे, चौथे आरेमें तीसरा प्रहर भिक्षा के लिये जाते थे क्योंकि उस वक्त सबलोग एक ❋ ही वक्त भोजन करते थे और एक घर में ३२ स्त्री और २८ पुरुष होते सो घर गिणतीमें था, इस लिये ६० मनुष्यका भोजन निपजाते सहज दो प्रहर, दिन आ जाता था, शास्त्रमे कहा है कि 'कालं काल समाचरे,' अर्थात जिस क्षेत्रमें जो भिक्षा का काल होय, उस वक्त गोचरी जाय जो जलदी जाय अथवा देरसे जाय, तो बहुत घूमना पड़े, इच्छित आहार न मिले, शरीर को किलामना उपजे, लोकोंमें निंदा होवे कि वक्त वे वक्त साधू क्यों फिरता है? तथा

❋ पहिले आरेमें ३ दिनके अंतरे, दूसरेमें २ दिनके अंतरे, तीसरेमें एक दिनके अंतरे, चौथेमें दिनमें एक वक्त भोजनकी इच्छा होती थी।

स्वाध्याय ध्यानकी अंतराय पड़े इत्यादि दोष जाण कालोकाल भिक्षाके लिये जाय, फिर शास्त्रोक्त विधीसे आहार करे, फिर ध्यान करे, फिर चौथे प्रहर प्रति लेखन कर स्वाध्याय करे, असझाइकी वक्त देवसी प्रतिक्रमण करे असाझइ निवर्तनेसे सझाय करे दूसरे प्रहर ध्यान करे, तिसरे प्रहर निद्रामुक्त होवे, ये दिनरात्रीकी साधूकी क्रिया श्री उत्तराध्ययन सूत्रके २६ वे अध्ययनमें कही है और भी अंतर विधि बहुत हे सो गुरू आमनासे धारे)।

२० 'जोग सचे'—मन-वचन-कायाके योगकी सत्यता-सरलता रखे, योगाभ्यास-आत्म-साधन-सम-दम उपसम इत्यादि, साधना की प्रति दिन वृद्धि करे।

'संपन्नतिउ'—साधु तीन वस्तु संपन्न है, नाण-सपन्न, दंशण संपन, चारित्र संपन्न।

२१ नाण सपन्न—मति, श्रुत, अंग उपांग पूर्वादिक जिस कालमे जितना ज्ञान हाजिर होवे उतना उमंग सहित अभ्यास करे, वांचना-पृच्छना-परंटना आदि करके, दृढ करे, अन्यको यथायोग्य ज्ञान दे वृद्धि करे।

२२ 'दंशण संपन्न'—१ कषाय, २ नोकषाय, ३ मोहनीय इत्यादि दोष रहित शुद्ध सम्यक्त्ववंत होवे, देवादिक भी चलावे तो चले नहीं, शकादि दोष रहित निर्मल सम्यकत्व पाले।

२३ 'चारित्र संपन्न'—सामायिक-छेदोपस्थापनी-परिहार विशुद्ध सूक्ष्म संमपराय-यथाख्यात ये पांच चरित्रयूक्त, (इसकालमें पहिले २ चारित्र हैं)।

२४ 'खंती'—क्षमावन्त।

२५ 'संवेग'—सदा वैराग्यवन्त रहै।

श्लोक--'सरीर मनसोगंन्तु, वेदना प्रभवाद्भवात्'
स्वप्नेन्द्र जाल सङ्कल्पाद्भितिःसंवेग उच्यते ॥

अर्थात् इस संसारमें शारीरिक और मानसिक वेदनासे अति ही पीडा हो रही है जिसको देखकर, और सर्व संयोग इन्द्रजाल और स्वप्नवत् जानकर, संसारमें डरना उसका नाम 'संवेग' है ।

२६ 'वेदनी सम अहीया सणीयाए'—क्षुदादिक २२ परिसह उत्पन्न होवे तो सम प्रमाणसे सहन करे ।

२७ 'मरणातिय सम--अहीया सणीयाये' मरणांतिक कष्टमें तथा मरणसे डर नहीं परन्तु समाधि मरण करे ।

२७ सताइस बोले करी त्रस कायकी हिंसा टले १ प्रहर रात गये पीछै और दिनऊगे पहिले जोरसे बोलना नहीं क्योंकि विसमरी जागकर, मक्खी प्रमुख जीवोंका भक्षण

कर जाय तथा पाडोसी जाग्रत होय तो मैथुन पचन खंडन पीसनादि अनेक क्रिया करे, १ रातको छाछ [म्ही] करना नहीं, २ लीपणा नहीं वुहारना (झाडना) नही भोजन (आहार) नहीं निपजाना ४ मार्गमे रातकुं (विनउपयोग) नहीं चलना ५ वस्त्र नही धोवना ६ स्नान नहीं करना ७ भोजन नहीं करना इतने काम रातको नही करना इनसे त्रस जीवकी घात और आत्महत्या होनेका कारण होता है ८ जंगल, मैदान, खुली जागा मीलतां पायखानामे दिशा (टट्टी) नही जाना क्योंकि उसमें असंख्य छमोछम (चम्मुच्छन) मनुष्य पैदा होकर मरजाते हैं ९ खाडेमांही फाटी जमीन ऊपर या तुस राखके ढगलेपर दिशा नही जाना उस मे जीव मृत्यु पाते हैं; १० खुली जागा मीलतां मोरीमे नालीमे पेशाव नही करना

तथा स्नान नहीं करना ११ देखे विना धोबीको कपड़ा धोणे नही देना १२ खाट पिलंगको पाणीमें नही डुबाना तथा ऊपर गरम गरम पाणी नहीं डालना १३ दीवाली प्रमुख पर्वको जो घरमें खटमलादिक जीव होय तो लीपणा छापणा नहीं करना १४ सड़ा धान सड़ी हुई कोई भी वस्तुको धूप (तड़के) में नहीं धरना, १५ आटा दाल शाग लकड़ी छाणा घट्टी ऊंखल वर्तन इत्यादि कोई वस्तु देखे विना वापरनी नहीं १६ आटा दाल शाग गोबर वगेरे वहुत दिन तक संग्रह करके नहीं रखना १७ चोमासेके कालमें घरमें वरतनादि सुकमाल सर्णकी तथा ऊनकी पूजणीसे पूंजे विन नही वापरना क्योंकि कुंथूवादिक जीव वहुत पेदा होते हैं १८ चूला पलीन्डा घट्टी ऊंखलादि चदरवा (छत) विन नही राखना १९ पाणी छाणे

विना नही वापरना २० पांणीका जीवाणी जो जागाका पाणी होय उस जागाका पाणी सिवाय दूसरे सरोवरमें तथा विना पाणीके ठिकाणे नहीं नाखना २१ वने वहां तक हिंसक व्यापार जैसे दाणे धानका किराणेका मिल (गिरनी) विगेरह का नही करना २२ दूधका दहीका घीका तैलका-रसका छाछका पांणी विगेरह पतले पदार्थ वस्तुके वर्त्तन खुला नहीं राखना २३ दीवा पिलसोद चूला खुला नही राखना २४ सडेहुये धानको पांणीमें धोणा नही २५ वोर भाजी भूट्टे प्रमुख जोजो त्रस जीवकी वस्तु नजर आवे सो नही खाना २६ गायादिकके वाडेमें तथा जिहां मच्छरादिक जीवोंकी उत्पत्ति होवे वहां धूंवा नहीं करना २७ जूतेमें नाल खीले लगाना नहीं और पहले लगेहुये होवे वो नही पहरना उपयोग राखकर हिंसा टालना।

॥ अठाइसमो बोल ॥



२८ प्रकारे आचार कल्प—(१) मास प्रायश्चित, (२) मासने पांच दिवस, (३) मासने दश दिवस, (४) मासने पन्नर दिवस, (५) मासने वीश दिवस, (६) मासने पचीस दिवस, (७) बे मास, (८) बे मासने पांच दिवस, (९) बे मासने दश दिवस, (१०) बे मासने पन्नर दिवस, (११) बे मासने वीश दिवस, (१२) बे मासने पचीस दिवस, (१३) त्रण मास, (१४) त्रण मासने पांच दिवस, (१५) त्रण मासने दश दिवस, (१६) त्रण मासने पन्नर दिवस, (१७) त्रण मासने वीश दिवस, (१८) त्रण मासने पचीस दिवस, (१९) चार मास, (२०) चार मासने पांच दिवस, (२१) चार मासने दश दिवस, (२२) चार मासने पन्नर दिवस, (२३) चार मासने

त्रीश दिवस, (२४) चार मासने पचीस दिवस (२५) पांच मास, ए पचीस उपघातिक छे, (२६) अनुघातिकरोपण, (२७) कृत्स्न (संपूर्ण) (२८) अकृत्स्न (असंपूर्ण)।

॥ उनतीसमो बोल ॥

२९ प्रकारे पापसूत्र—१ भूमिकंप शास्त्र, (२) उत्पात शास्त्र, (३) स्वप्न शास्त्र, (४) अन्तरिक्ष शास्त्र, (जेमां आकाशना चिन्हो समाय छे), (५) अंग फरकवानां शास्त्र, (६) स्वर-शास्त्र, (७) व्यंजन शास्त्र, (मिसा, तिल वगेरे समाय छे) (८) लक्षण शास्त्र ए आठ सूत्रथी आठ वृत्तिथीने आठ वार्तिकथी कुल चौविश, (२५) विकथा-अनुयोग, (२६) विधा अनुयोग, (२७) मंत्र अनुयोग, (२८)

योग अनुयोग, (२६) अन्य तीर्थिक प्रवृत्त अनुयोग ।

॥ तीसमां बोल ॥

३० तीस बोल करी जीव महा मोहनी कर्म बांधे, त्रस जीवने पाणी मांहि डबोयने मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बांधे १, मुख भिंचीने (पांधी) गला घोंटीने (सास रोकीने) मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बांधे २, अग्निमें प्रजालि धुंवामें घोटीने मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बांधे ३, माथे घाव घालीने मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बांधे ४, आला चांवडासे बांधीने धुप तावडामें बेठाइने मारे तो जीव महा मोहनी कर्म बांधे ५, गेहला गूंगाने मारीनें हंसे तो महा मोहनी कर्म बांधे ६, अणाचार सेवीने गोपवे तो महा मोहनी

कर्म बांधे ७, आपणो सेव्यो पाप पारके माथे डाले तो महा मोहनी कर्म वाधे ८, भरी पर्षदा मे मिश्र भाषा बोले तो महा मोहनी कर्म बांधे ६, राजाका बुरा चिंतवे राजमें धन आवतां रोके राजारी राणीने भोगवे तो महा मोहनी कर्म बांधे १०, वाल ब्रह्मचारी नहीं बाल ब्रह्मचारी कहावे (कवावे) तो महा मोहनी कर्म बांधे ११, ब्रह्मचारी नहीं और ब्रह्मचारी कहावे तो महा मोहनी कर्म बांधे १२, गुमास्तो साह (सेठ) रो बुरो चिंतवे सेठ रो धन उडावे, खंडावे साहकी स्त्रीने भोगवेतो महा मोहनी कर्म बांधे १३, पंचानु बुरा चिंतवे तो महा मोहनी कर्म बांधे १४, चाकर ठाकुरने, प्रधान राजाने, स्त्री भरतारने मारे सांपण आपणे इन्डाने गले तो महा मोहनी कर्म बांधे १५, पृथ्वीपति राजाकी घात चिंतवे तो महा मोहनी कर्म वां,

१६, एक देशरा राजा तथा साध, साधवीकी घात चिंतवे तो महा मोहनी कर्म बांधे धर्मि पुरुषने धर्म करता डिगावे तो महा मोहनी कर्म बांधे १८, तिर्थंकर देवके अवगुण वाद बोले तो महा मोहनी कर्म बांधे १६, चतुर्विध संघका अवर्णवाद बोले तो महा मोहनी कर्म बांधे २०, आचार्य उपाध्यायजीका अवर्णवाद बोले तो महा मोहनी कर्म बांधे २१, आचार्य उपाध्याय-जीको सामनो करे तो महा मोहनी कर्म बांधे २२, बहु सूत्री नहीं अरु बहुसूत्री कहावे तो महा मोहनी कर्म बांधे २३, तपस्वी नहीं तपसी कहावे तो महा मोहनी कर्म बांधे २४, रोगी गीलाणकी छती-शकती वेयापच्च न करे तो महा मोहनी कर्म बांधे २५, टोला मांहि भेद पाडे तो महा मोहनी कर्म बांधे २६, हिंस्याकारी शास्त्र परुपे तो महा मोहनी

कर्म बांधे २७ देवताके मनुषके अछते काम भोगकी वंछा करे तो महा मोहनी कर्म बांधे २८, ब्रह्मचर्य पाली तपस्या करी आलोइ निन्दि देवता थया छे तेहनी जो निन्दा करे तो महा मोहनी कर्म बांधे २९, देवता आवे नहीं अरु कहे म्हारे पास देवता आवे छे इम कहे तो महा मोहनी कर्म बांधे ३० ।

पाठन्तर ।

त्रीस प्रकारे मोहनीयनां स्थानक—(१) स्त्री, पुरुष, नपुंसकने अथवा कोई त्रस प्राणीने जलमां पेसारीने जलरूप शस्त्रे करीने मारे ते महामोहनीय कर्म बांधे ।

२, हाथे करी प्राणीना मुख प्रमुख बांधी, श्वास रुंधी जीवने मारे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

३, अग्नि प्रजली, वाडादिकमां प्राणी रोकी धूमाडे करी, आकुल व्याकुल करी मारे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

४, उत्तमांग जे मस्तक तेने खडगादिके करी भेदे-छेदे-फाडे तो महामोहनीय कर्म बांधे।

५, चामडा प्रमुखनी वाधरीए करी मस्तकादिक शरीरने ताणी बांधी वारंवार अशुभ परिणामे करी कदर्थना करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

६ विश्वासकारी वेष करी-मार्ग प्रमुखने विषे जीवने हणे-ते लोकमां उपहास्य थाय तेवी रीते तथा पोते कर्तव्य करी आनंद माने ते महामोहनीय कर्म बांधे ।

७, कपटे करी पोतानो दुष्ट आचार गोपवे तथा पोतानी मायाए करी अन्यने, पण, पाश (फास) मां नाखे, तथा शुद्ध सूत्रार्थ गोपवे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

८, पोते अनेक चोरी बालघात (अन्याय) प्रमुख कर्म कीधां होय, ते दोष निर्दोषी पुरुष उपर नांखे, तथा यशस्वीनो यश घटाडवा माटे अछता आल आपे तो महामोहनीय कर्म बांधे।

९ परने रुडुं मनाववा माटे द्रव्य भाव थी झगड़ा (कलेश) वधारवा माटे, जाण तो थको सभा मध्ये सत्य मृषा (मिश्र) भाषा बोले, तो महामोहनीय कर्म बांधे।

१०, राजनो भंडारी प्रमुख ते, राजा प्रधान तथा समर्थ कोई पुरुषनी लक्ष्मी प्रमुख लेवा चाहे, तथा तेनी स्त्री विणसाडे, तथा तेना रागी पुरुषोनां मन फेरवे, तथा राजने राज्य कर्तव्यथी बहार करे तो महामोहनीय कर्म बांधे।

११, स्त्रीओने विषे गृद्ध थई परणया छतां कुमारपणानुं (हुं कुंवारो छुं) विरुद (नाम) धरावे तो महामोहनीय कर्म बांधे।

१२ गायोनी मध्ये गर्दभ माफिक स्त्रीना विषय विषे गृद्धथको आत्मानुं अहित करनार मायामृषा बोले, अब्रह्मचारी छतां ब्रह्मचारीनुं बिरुद धरावे तो महामोहनीय कर्म बांधे (लोकमां धर्मनो अविश्वास थाय, धर्मी उपर प्रतीत न रहे, ते माटे)।

१३, जेनी निश्राए आजुविका करे छे तेनी लक्ष्मीने विषे लुब्ध थई तेनी लक्ष्मी लूंटे तथा पर पासे लूंटावे तो महामोहनीय कर्म बांधे "चिलाती चोरवत्"।

१४, जेणे दारिद्र पणुं (निर्धनपणुं) मटाडी मापदार (होदादार) कर्यो, ते महर्द्धिकपणु पाम्या पछी, इर्ष्यादोषे करी, कलुषित चित्ते करी, ते उपकारी पुरुषने विपत्ति आपे तथा धन-प्रमुख आववानी अंतराय पाडे तो महा मोहनीय कर्म बांधे।

१५ पोतानु भरणपोषण करनार राजा प्रधान प्रमुखने तथा ज्ञान प्रमुखना अभ्यास करावनार गुर्वादिने हणो तो महामोहनीय कर्म बांधे (सर्पणी जेम इंडाने हणो तेम)।

१६ देशनो राजा तथा वाणीयाना वृंदनो प्रवर्त्तावक (व्यवहारियो) तथा नगरशेठ ए त्रण घणा यशना धणी छे, तेने हणे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

१७ जे घणा जणने आधारभूत (समुद्रमां द्वीप समान) छे तेमने हणे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

१८, संयम लेवा सावधान थयो छे तेने, तथा संयम लीधेलो छे तेने, धर्मथी भ्रष्ट करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

१९, अनंत ज्ञानी तथा अनंतदर्शी एवा तीर्थंकर देवना अवर्णवाद बोले तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२०, तीर्थंकर देवना प्ररुपित न्याय मार्गनो द्वेषी थई अवर्णवाद बोले, निंदा करे अने शुद्ध मार्ग थी लोकोनां मन फेरवे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२१, आचार्य उपाध्याय जे सूत्र प्रमुख शिखवे छे, भणावे छे तेवा पुरुषने हीले निंदे, खीसे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२२, आचार्य उपाध्यायने साचे मने आराधे नहीं, तथा अहंकार थको भक्ति न करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२३, अबहुश्रुत (अल्पसूत्री) थको शास्त्रे करी पोतानी श्लाधा करे तथा स्वाध्यायनो वाद करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२४, अतपस्वी थको तपस्वीनुं बिरुध (नाम) धरावे (लोकोने छेतरवा माटे) तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२५, उपकारने अर्थे गुर्वादिनो तथा स्थाविर ग्लान प्रमुखनो छती शक्तिए विनय वेयावच्च न करे (कहे जे म्हारी सेवा एणे पूर्वे करी नहोती एम ते धूर्त मायावी मलिन चित्तनो धणी पोताना बोध बीजनो नाश करनार अनुकंपारहित होय) तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२६, चार तीर्थनो भेद करे एवी कथा वार्त्ता प्रमुख (क्लेशरूप शास्त्रादिक) नो प्रयोग करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२७, पोतानी श्लाघा वधारवा तथा बीजा साथे मित्रता करवा अधर्मयोग एवा वशीकरण निमित्त मंत्र प्रमुख प्रयोजे, तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२८, जे कोई मनुष्य संबंधी भोग तथा देव संबंधी भोगने अतृप्तपणे गाढे परिणामथी आशक्त थई आस्वादन करे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

२६, महर्द्धिक महाज्योतिवान् महायशस्वी देवोना बल वीर्य प्रमुखनो अंवर्णवाद बोले तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

३०, अज्ञानी थको लोकमां पूजा (श्लाघा) नो अर्थी वैमानिक व्यंतर प्रमुख देवने नहीं देखतो थको कहे जे हुं देखुं छुं, तेवुं कहे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

१० बोल तपस्या फलका पंचगुणो फल १ (एक) उपवासे एक (उपवास) नो फल २ (दोय) उपवासे पांच (उपवास) नो फल ३ (तेलानो) पचीसनो फल ४ (चोलानो) एकसो पचीस (उपवास) नो फल ५ (पांच) नो छव सें पचवीसनो फल, ६ (छत्र) नो इकतीससें पचीसनो फल ७ (सात) नो पनरे सहस्र (हजार) छव सें पचीसनो फल ८ (आंठ) नो अट्ठोतर सहस्र एक सो पचीसनो फल ६ (नव) उपवासे तीन लाख नेउ सहस्र छवसें

॥ शुद्धि पत्र ॥

३० बोल तपस्याका फलका ।

१४ उपवासे १२२ क्रोड ७ लाख ३१२५ उपवासरो फल जाणजो ।

१७ उपवासे- १५ हजार क्रोड २५८ क्रोड ७८ लाख ६० हजार ६२५ उपवासरो फल जाणजो ।

१८ उपवासे ७६ हजार क्रोड २६३ क्रोड ६४ लाख ५३ हजार १२५ उपवासरो फल जाणजो ।

२० उपवासे—१६ लाख ७ हजार ३४८ क्रोड ६३ लाख २८ हजार १२५ उपवासरो फल जाणजो ।

२२ उपवासे---४ क्रोडाक्रोड ७६ लाख क्रोड ८३ हजार क्रोड ७१५ क्रोड ८२ लाख ३१२५ उपवासरो फल जाणजो ।

२४ उपवासे---११६ क्रोडाक्रोड २० लाख

२६, महर्द्धिक महाज्योतिवान् महायशस्वी देवोना बल वीर्य प्रमुखनो अवर्णवाद बोले तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

३०, अज्ञानी थको लोकमां पूजा (श्लाघा) नो अर्थी वैमानिक व्यंतर प्रमुख देवने नहीं देखतो थको कहे जे हु देखु छुं, तेवुं कहे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

३० बोल तपस्या फलका पंचगुणो फल १ (एक) उपवासे एक (उपवास) नो फल २ (दोय) उपवासे पांच (उपवास) नो फल ३ (तेलानो) पचीसनो फल ४ (चोलानो) एकसो पचीस (उपवास) नो फल ५ (पांच) नो छव सें पचवीसनो फल, ६ (छव) नो इकंतीससें पचीसनो फल ७ (सात) नो पनरे सहस्र (हजार) छव सें पचीसनो फल ८ (आंठ) नो अट्ठोतर सहस्र एक सो पचीसनो फल ६ (नव) उपवासे तीन लाख नेउ सहस्र छवसें

॥ शुद्धि पत्र ॥

३० बोल तपस्याका फलका ।

१४ उपवासे १२२ क्रोड ७ लाख ३१२५ उपवासरो फल जाणजो ।

१७ उपवासे- १५ हजार क्रोड २५८ क्रोड ७८ लाख ६० हजार ६२५ उपवासरो फल जाणजो ।

१८ उपवासे ७६ हजार क्रोड २६३ क्रोड ६४ लाख ५३ हजार १२५ उपवासरो फल जाणजो ।

२० उपवासे—१६ लाख ७ हजार ३४८ क्रोड ६३ लाख २८ हजार १२५ उपवासरो फल जाणजो ।

२२ उपवासे---४ कोडाक्रोड ७६ लाख क्रोड ८३ हजार क्रोड ७१५ क्रोड ८२ लाख ३१२५ उपवासरो फल जाणजो ।

२४ उपवासे---११६ क्रोडाकोड २० ला

२६, महर्द्धिक महाज्योतिवान् महायशस्वी देवोना बल वीर्य प्रमुखनो अवर्णवाद बोले तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

३०, अज्ञानी थको लोकमां पूजा (श्लाघा) नो अर्थी वैमानिक व्यंतर प्रमुख देवने नहीं देखतो थको कहे जे हु देखु छुं, तेवुं कहे तो महामोहनीय कर्म बांधे ।

३० बोल तपस्या फलका पंचगुणो फल १ (एक) उपवासे एक (उपवास) नो फल २ (दोय) उपवासे पांच (उपवास) नो फल ३ (तेलानो) पचीसनो फल ४ (चोलानो) एकसो पचीस (उपवास) नो फल ५ (पांच) नो छव सें पचवीसनो फल, ६ (छत्र) नो इकतीससें पचीसनो फल ७ (सात) नो पनरे सहस्र (हजार) छव सें पचीसनो फल ८ (आंठ) नो अट्ठोतर सहस्र एक सो पचीसनो फल ९ (नव) उपवासे तीन लाख नेउ सहस्र छवसें

पचीस नो फल १० (दश) उपवासे उग-णीस लाख त्रेपन सहस्र एकसो, पचवीसनो फल ११ (इग्यारे) उपवासे सतांणु लाख पैसट्ठ सहस्र छवसें पचवीसनो फल १२ (बारे) उपवासे चार कोड अठासी लाख अठावीस सहस्र एकसो पचीसनो फल १३ (तेरे) उपवासे चोवीसक्रोड एकतालीस लाख चालीस सहस्र छवसे पचवीसनो फल १४ (चवदे) उपवासे एकसो बावीस कोड सतरे लाख इकतीससो पचीस नो फल १५ (पनरे) उपवासे छवसो दश कोड पैत्रीस लाख पनरे सहस्र छवसो पचवीसनो फल १६ (सोले) उपवासे त्रिण सहस्र कोड एकावन कोडि पचोहत्तर लाख ७८ हजार १२५ नो फल १७ (सतरे) उपवासे पनरे सहस्र कोड वे सें कोड अट्ठावन कोड ७८ लाख ६० हजार छवसेंनो फल १८ (अट्ठारे)

क्रोड ६२ हजार क्रोड ८६५ क्रोड ५० लाख ७८ हजार १२५ उपवासरो फल जाणजो।

२८ उपवासे—७४ हजार क्रोडाक्रोड ५०५ क्रोडाक्रोड ८० लाख क्रोड ५६ हजार क्रोड ६६२ क्रोड ३८ लाख २८ हजार १२५ उपवासरो फल जाणजो।

३० उपवासे (याने मास खामणरी तपस्या)—१८ लाख क्रोडाक्रोड ६२ हजार क्रोडाक्रोड ६४५ क्रोडाक्रोड १४ लाख क्रोड ६२ हजार क्रोड ३०६ क्रोड ६७ लाख ३ हजार १२५ (१८६२६४५१४६२३०६६७३१२५) उपवासरो फल जाणजो।

तेवीसे कोडाकोड चोरासी लाख कोड अट्ठारे सहस्र कोड पांचसे कोड उगणयासी कोड दश लाख पन्नरे सहस्र छवसें पचवीसनो फल २४ (चोवीस) उपवासे एक सो उगणीस कोडाकोड वीस लाख कोड वाणुसहस्र कोड आट्ठ सें कोड पचाणु कोड पचीस लाप अट्ठोतर सहस्र एकसो पचवीसनो फल २५ (पचीस) उपवास पांच सो छिन्नु कोडाकोड चार लाख चोसट्ठ सहस्र कोड चारसें कोड सतोतर कोड त्रेपन लाख नेउ सहस्र छवसे पचवीसनो फल २६ (छावीस) उपवासे गुणत्रीतसे असीकोडाकोड तेवीस लाप कोड चावीस सहस्र कोड त्रिणसें कोडि सत्यासी कोड उगणोत्तर लाख त्रेपन-सहस्र एकसो पचवीसनो फल २७ (सतावीस) उपवासे चवदे सहस्र नवसे एक कोडा कोड सोले लाप कोड इग्यारे सहस्र कोड नवसे कोड अड़तीस

उपवासे छीयंतर सहस्र कोड दोयसो कोड त्रिण कोड चोराणु लाख त्रेपन हजार एक सो पचवीसनो फल १९ (उगणीस) उपवास तीन लाख कोड इक्यासी सहस्र कोड चार सें कोड गुणतरकोड बहोतर लाख पैसट्ट सहस्र छवसें पचवीसनो फल २० (वीस) उपवास उगणसट्ठ लाष सात सहस्र त्रिणसें अडतालीस कोडि तेसट्ठ लाख अठावीस सहस्र एकसो पचवीसनो फल २१ (इकवीस) उपवास पचाणु लाख कोडि छतीस सहस्र कोडि सात सें कोडि तयालीस कोड सोले लाख चालीस हजार (सहस्र) छव सें पचीसनो फल २२ (बावीस) उपवासे च्यार कोडाकोड बहोतर लाख कोड त्रयासी सहस्र कोड सातसें कोड पनरे कोड वयासी लाष एकतीससें पचवीस वास (उपवास) नो फल २३ (तेवीस) उपवासे

॥ एकतीसमो बोल ॥

१ प्रकारे सिद्धना आदि गुण—आठ कर्मनी एकत्रिश प्रकृतिनो विजय ते एकत्रिश गुण, ते एकत्रिश प्रकृति नीचे मुजब.—

१ ज्ञानावरणीय कर्मनी पांच प्रकृति—१ मति ज्ञानावरनीय, २ श्रुत ज्ञानावरनीय, ३ अवधि ज्ञानावरनीय, ४ मनःपर्यव ज्ञानावरनीय, ५ केवल ज्ञानावरनीय ।

२ दर्शनावरनीय कर्मनी नव प्रकृति—१ निद्रा, २ निद्रानिद्रा, ३ प्रचला, ४ प्रचला प्रचला, ५ थीणद्धी (स्त्यानर्द्धि), ६ चक्षु दर्शनावरनीय, ७ अचक्षु दर्शनावरनीय, ८ अवधि दर्शनावरनीय, ९ केवल दर्शनावरनीय ।

३ वेदनीय कर्मनी बे प्रकृति—१ शाता वेदनीय, २ अशाता वेदनीय ।

४ मोहनीय कर्मनी बे प्रकृति—१ दर्शन मो-

कोड सेंतालीस लाख पैसट्ठ सहस्र छवसें
पचवीसनो फल २८ (अट्ठाइस) उपवासे
बहोत्तर सहस्र पांच सें पांच कोडाकोड असी
लाख कोड उगणसट्ठ सहस्र कोड छवः को
घाणुकोड अडतीस लाख अट्ठावीस सहस
एकसो पचवीसनोफल २९ (उगणतीस
उपवासे तीन लाख बहोतर हजार पांचसें
उगणतीस कोडाकोड दोय लाख कोड अट्ठाण
सहस्र कोड च्यारसें कोड इकसट्ठ कोड एकाणु
लाख चालीस हजार छवसें पचवीसनो फल
३० (तीस) उपवासे अट्ठारे लाख कोडाकोड
बासट्ठ सहस्र कोडाकोड छवसें कोडाकोड
पैंतालीस कोडाकोड चवदे लाख कोड बाणु
सहस्र कोड तीनसे कोड सतानुं लाख तीन
सहस्र एकसो पचवीसनो फल। इति तपस्या
पंचगुणा गुणाकारनो फल जांणवो ॥

मायासे भेदाय नहीं, २ 'शंख इव' जैसे शंख रंगाय नहीं, त्यों मुनी स्नेहसे रंगाय नही, ३ 'जीव गई इव' जैसे जीव परभवमे जावे उसकी गतिका कोई भंग कर सके नहीं, तैसे मुनी अप्रतिबंध विहारी होते हैं, ४ 'सुवर्ण इव' जैसे सोनेको काट (कीट) लगे नही, तैसे साधूको पाप रूप काट लगे नहीं, ५ 'भिंग इव' जैसे आरीसे (कांच) में रूप देखाय, तैसे साधु ज्ञान करके निज आत्मरूप देखे, ६ 'कुम्मो (काछवा) इव' जैसे किसी वनके सरोवरमें बहुत काछवे रहते थे, वो आहार करनेको बाहिर आते तब वनवासी बहुत जम्बुक (सियाल उनको भक्ष करने आते थे, तब कितनेक काछ तो ढाल नीचे अपने पाच ही अंग (चार प पांचमा सिर) दबा लेते थे, जो होशियार थे सर्व रात्रि अपनी ढालके नीचे स्थिर र थे, और कितनेक पांच अंगमेका एक वा

हनीय, २ चारित्र मोहनीय ।

५ आयुष्य कर्मनी चार प्रकृति—१ नरक आयुष्य, २ तिर्यंच आयुष्य, ३ मनुष्य आयुष्य, ४ देव आयुष्य ।

६ नाम कर्मनी बे प्रकृति—१ शुभ नाम, २ अशुभ नाम ।

७ गोत्र कर्मनी बे प्रकृति—१ उच्च गोत्र, २ नीच गोत्र ।

८ अन्तराय कर्मनी पांच प्रकृति—१ दानांतराय, २ लाभांतराय, ३ भोगांतराय, ४ उपभोगांतराय, ५ वीर्यांतराय ।

॥ बत्तीसमो बोल ॥

साधुजीकी ३२ औपमा।

३२—१ "कांसी पत्र इव"-जैसे कांसीके कटोरेमें पाणी भेदाय नहीं, तैसे मुनी मोह

भी सदा फिरते रहे, १० 'चन्द्रइव' चन्द्रमा जैसे सदा निर्मल हृदयके धरणहार और शीतल स्वभावी होवें ११ 'आइच्चइव' जैसे सूर्य्य अन्धकारका नाश करे तैसे साधु मिथ्यांधकारका नाश करे, १२ 'समुद्रइव' जैसे समुद्रमें अनेक नदियोंका पाणी जाता है तोभी झलकता नहीं है; तैसे साधु, सबके शुभाशुभ वचन सहे, परन्तु कोप नहीं करे, १२ 'भारन्ड इव' भारन्ड पक्षीके दो मुख और तीन पग होते हैं, वो सदा आकाशमें रहता है, फक्त आहार निमित्त पृथ्वीपर आता है, तब पांखा फैलाकर बैठता है, और एक मुखसे चारोंही तरफ देखता है, कि कहीं मुझे किसी तरफसे उपसर्ग न हो जाय। और दूसरे मुखसे आहार करता है थोड़ी भी शंका पडनेसे तत्क्षण उड जाता है, तैसेही साधु सदा संयममें रहे, फक्त आहार प्रमुख निमित्त गृहस्थके घरको जावे,

निकालके देखने की जंबुक गये क्या ? उतनेमें ही वो छिपे हुवे पापी सियाल उसका अंग तोड़ उसे मार खा जाते थे, और जो स्थिर रहते वो दिन उदय भये सियाल गये पीछे, अपने ठिकाणे—सरोवरमें जाकर सुखी होते थे इसी तरह साधु पांच इंद्रीको ज्ञान रूपी ढाल नीचे, जीवे वहां तक दाब रखे, स्त्रीयादि भोगरूप सियालके तावेमें नहीं पडे, और आयुष्य पूर्ण करके मोक्ष रूप सरोवर प्राप्त करे, ७ 'पद्मकमल इव' जैसे पद्म कमल कीचड़में उत्पन्न हो, जलमें वृद्धि पाकर पीछा पाणीसे लेपाय नहीं; तैसे साधु संसारमें पैदा होते हैं परन्तु संसारके भोगोंका त्याग किये पीछे संसारके भोगमें लिपाय नहीं, ८ 'गगणइव' जैसे आकाशको स्थंभ नहीं, निराधार ठेहरा है, तैसे साधु किसीका आश्रय इच्छे नहीं, ९ 'वायूइव' हवा एक ठिकाणे रहे नहीं, फिरती रहती है तैसे साधु

जादा सूरा होकर कर्म शत्रुका पराजय करे, १८ 'वृषभ इव' जैसे मारवाडका दोरी दल, लिया हुवा भार प्राण जाते भी बीचमें डाले नही तैसे साधु पांच महाव्रत रूप महा भार प्राण जाते भी जीवे वहां तक फेंके नही १६ 'सिंह इव' जैसे केशरी सिह किसी पशुका डराया डरे नही, तैसे साधु किसी पापडियोंसे चलायमान होवे नही, २० 'पृढवी इव' जैसे पृथ्वी शीत, ऊष्ण, अच्छा, बुरा सब समभाव सहन करे तथा पूजनेवाले और खोदनेवालेकी तर्फ समभाव रखे, तैसे साधु शत्रु मित्र पर समभाव रखे निंदक वंदनीकको एकसा उपदेश करके तारे, २१ 'वन्ही इव' घृतके सींचनेसे अग्नि जैसे दिप्त होती है, तैसे साधु ज्ञानादि गुण करके दिप्त होवे, २२ 'गोशीष चंदन इव' जैसे चन्दन काटे तथा जलाने उसको जास्ती सुगंध देवे, तैसे साधु परिसह

तब द्रव्य दृष्टी तो आहारके सन्मुख रखे, और अन्तर दृष्टीसे अवलोकन करता रहे कि, 'मुझे किसी प्रकारका दोष न लग जायं, जो किंचित् ही दोष लगने जैसा देखे तो तत्त्वण वहांसे चले जावें, १४ 'मंदरइव' जैसे मेरूपर्वत हवासे कंपायमान न होवे तैसे साधु परिसह उपसर्गसे चलायमान न होवे, १५ 'तोय इव' जैसे शरद ऋतुका पाणी निर्मल रहे तैसे साधुका हृदय सदा निर्मल रहे, १६ 'खड़गीहत्थि इव' जैसे गेंडा हाथीके (गेन्डके) एकही सिंग रहता है, उससे वो सबका पराजय कर सक्ता है, तैसे साधु एक निश्चय नयमें स्थिर हो कर सर्व कर्म शत्रुओंको पराजय करते हैं, १७ 'गंधहत्थि इव' जैसे गंध हस्तीको संग्राममें ज्यों ज्यों भालेका प्रहार लगता है, त्यों त्यों जास्ती जास्ती सूरा हो कर शत्रु को पराजय करता है, तैसे साधु पर ज्यों ज्यो परिसह पड़े, त्यों त्यों जादा

अखूट होता है, तैसे साधु भी अखूट ज्ञानके धारक (धरणहार) होते है, २४ 'खिल्लीइव' जैसे खुंटा ठोकते एकही दिशामे प्रवेश करे. तैसे साधु एकांत मोक्ष मार्गके सन्मुख होकर प्रवर्ते, २५ 'शून्यगृहइव' जैसे गृहस्थ शून्य (सुने) घरकी संभाल नही करे तैसे साधु शरीरकी संभाल नहीं करे, २६ 'दीवेइव' जैसे समुद्रमें पड़े हुये प्राणीको द्वीप का आधार होता है, तैसेही संसार समुद्रमे पड़े हुये प्राणीको त्रस-स्थावर सब जीवोका साधु आधारभूत अनाथों के नाथ होते हैं, २७ 'शस्त्रधारइव' जैसे पाछणे (शस्त्र)की धार एकही दिशा विघ्न निवारके आगे चढती है, तैसे साधु कर्म शत्रुका निकंदन करते एकांत आत्मकल्याणके मार्गमें चलते हैं, २८ 'सप्पइव' जैसे सर्प कांटेसे डरे, तैसे साधू कर्मबंधके कारणसे डरे, २९ 'सकूणइव' जैसे पक्षी रातको वासी न रखे, तैसे साधू चार

ही आहार रातको पास न रखे, ३० 'मिग्गइव' जैसे मृग नित्य नवे स्थान भोगवे, शंकाके ठिकाणे विश्वास न करे, तैसे साधू नित्य विहारी रहे, और शंकाके ठिकाणे दोष लगने के स्थान किंचित ही विश्वास नहीं करे, ३१ 'कठइव' जैसे लकड, काटनेवालेको और पूजने वालेको दोनोको एक माफक (सम) जाने तैसे साधू शत्रु मित्रको सम (एक सरषा) जाणे, ३२ 'स्फटिक रयणइव' जैसे स्फटिक रत्न वाहिर मीतर एकसा निर्मल तैसे साधू बाह्य अभ्यतर सरीखी वृत्ति रखे, कपट किया न करे, ऐसी और भी अनेक उत्तम पदार्थोंकी ओपमा साधुको दी जाती है, जैसे पारशमणि, चिंतामणी, काम कूंभ, कल्पवृक्ष, चित्रवेली, (चित्रवेल) इत्यादि पदार्थ जिसके पास होय, उसका मनोरथ सिद्ध करे, तैसे साधूजी भी भव्यजीवों को ज्ञानादि गुण ... ३

सिद्ध करे, जैसे विन छिद्र (छेद) की भाझमें जो वैठे उसको वा पार पहुचाती है, तैसे साधु कनक कांतारूप छिद्र करके रहित हैं वो, उनके आश्रितोको, संसार समुद्रके पार करते हैं, जैसे फलित भाडको पत्थर मारनेसे वो फल देता है, तैसे साधू अपकारियों पर ही उपकार करते हैं, इत्यादि अनेक औपमा दी जाती हैं, इत्यादि अनेक शुभ उपमा युक्त, आत्मार्थी, लुखवर्ती, महा पडित, धर्म मंडित सुर-वीर-धीर सम—दम—यम—उपममवत, अनेक तपके करनहार, अनेक आसनके साधणहार, संसार को पीठ देकर मोक्षके सन्मुख हुवे सर्व जीवों के हितार्थी, अनेका अनेक गुणके धारी, साधुजी महाराजको मेरा त्रिकाल त्रिकरण शुद्ध नमस्कार हो जो।

बत्रिश प्रकारे योग संग्रह—(१) जे कांई पाप लाग्युं होय तेनुं प्रायश्चित लेवानो संग्रह

ही आहार रातको पास न रखे, ३० 'मिग्गइव' जैसे मृग नित्य नवे स्थान भोगवे, शंकाके ठिकाणे विश्वास न करे, तैसे साधू नित्य विहारी रहे, और शंकाके ठिकाणे दोष लगने के स्थान किंचित ही विश्वास नहीं करे, ३१ 'कठइव' जैसे लकड, काटनेवालेको और पूजने वालेको दोनोको एक माफक (सम) जाने तैसे साधू शत्रु मित्रको सम (एक सरषा) जाणे, ३२ 'स्फटिक रयणइव' जैसे स्फटिक रत्न वाहिर भीतर एकसा निर्मल तैसे साधू बाह्य, अभ्यंतर सरीखी वृत्ति रखे, कपट क्रिया न करे, ऐसी और भी अनेक उत्तम पदार्थोंकी ओपमा साधुको दी जाती है, जैसे पारशमणि, चिंतामणी, काम कूंभ, कल्पवृक्ष, चित्रवेली, (चित्रवेल) इत्यादि पदार्थ जिसके पास होय, उसका मनोरथ सिद्ध करे, तैसे साधूजी भी भव्यजीवो को ज्ञानादि गुण देकर उनके मनोरथ

राखवानो संग्रह करवो, (१६) सुविधि-सारा अनुष्ठाननो संग्रह करवो. (२०) आश्रव रोकवानो संग्रह करवो, (२१) आत्माना दोष टालवानो संग्रह करवो (२२) सर्व विषयथी विमुख रहेवानो संग्रह करवो, (२३) प्रत्याख्यान करवानो संग्रह करवो, (२४) द्रव्यथी उपाधि त्याग, भावथी गर्वादिकनो त्याग करवो (२५) अप्रमादी थवा संग्रह करवो (२६) काले काले क्रिया करवानो संग्रह करवो, (२७) धर्मध्याननो संग्रह करवो, (२८) संवर योग नो संग्रह करवो (२९) मरण आतंक (रोग) उपज्ये मनने क्षोभ न करवानो संग्रह करवो, (३०) स्वजनादिकनो त्याग करवानो संग्रह करवो, (३१) प्रायश्चित लीधुं होय ते करवानो संग्रह करवो, (३२) आराधिक पंडितनु मृत्यु थाय तेम आराधना करवानो संग्रह करवो।

करवो, (२) जे कोई प्रायश्चित ले तो बीजने नहि कहेवानो संग्रह करवो, (३) विपत्ति आए धर्मविषे दृढ़ रहेवानो संग्रह करवो, (४) नेश्रा रहित तप करवानो संग्रह करवो, (५) सूत्रार्थ ग्रहण करवानो सग्रह करवो, (६) शुश्रूषा टालवानो संग्रह करवो, (७) अज्ञात कुलनी गोचरी करवानो संग्रह करवो, (८) निर्लोभी थवानो संग्रह करवो, (९) बावीस परिसह सहवानो संग्रह करवो, (१०) सरल निखालस स्वभाव राखवानो संग्रह करवो, (११) सत्य संयम राखवानो संग्रह करवो, (१२) सम्यकत्व निर्मल राखवानो संग्रह करवो, (१३) समाधिथी रहेवानो संग्रह करवो (१४) पंच आचार पालवानो संग्रह करवो, (१५) विनय करवानो संग्रह करवो, (१६) धृति राखवानो संग्रह करवो, (१७) वैराग्य रखवानो संग्रह करवो, (१८) शरीरने स्थिर

राखवानो संग्रह करवो, (१९) सुविधि-सारा अनुष्ठाननो संग्रह करवो, (२०) आश्रव रोकवानो संग्रह करवो, (२१) आत्माना दोष टालवानो संग्रह करवो (२२) सर्व विषयथी विमुख रहेवानो संग्रह करवो, (२३) प्रत्याख्यान करवानो संग्रह करवो, (२४) द्रव्यथी उपाधि त्याग, भावथी गर्वादिकनो त्याग करवो (२५) अप्रमादी थवा संग्रह करवो (२६) काले काले क्रिया करवानो संग्रह करवो, (२७) धर्मध्याननो संग्रह करवो, (२८) संवर योग नो संग्रह करवो (२९) मरण आतंक (रोग) उपज्ये मनने क्षोभ न करवानो संग्रह करवो, (३०) स्वजनादिकनो त्याग करवानो संग्रह करवो, (३१) प्रायश्चित लीधुं होय ते करवानो संग्रह करवो, (३२) आराधिक पंडितनुं मृत्यु थाय तेम आराधना करवानो संग्रह करवो ।

पाठान्तर।

१ जो दोष लगा होय सो तुर्त गुरुके आगे कहदे, २ शिष्यका दोष गुरु दूसरेके आगे प्रकाशे नहीं, ३ कष्ट पड़े धर्ममें दृढ़ रहे, ४ तपस्या करके इस लोकके (यश महिमादिक) और परलोकके (देवपद राज्यपदादिक) सुखकी वाञ्छा करे नहीं, ५ असेवन (ज्ञानाभ्यास संबन्धी) ग्रहना (आचार गोचार संबन्धी) शिक्षा (शिखामण) कोई देवे तो हितकारी माने, ६ शरीरकी शोभा विभूषा नहीं करे, ७ गुप्त तप करे (गृहस्थको मालम न पड़ने देवे) तथा लोभ नहीं करे, ८ जिन जिन कुलमें भिक्षा लेनेकी भगवानकी आज्ञा है उन सब कुलोंमें गोचरी (भिक्षा लेने) जावे, ९ परिसह उत्पन्न हुए चढ़ते प्रणामसे सहन करे, क्रोध न करे, १० सदा सरल-निष्कपटपणे प्रवर्ते ११ संयम

आत्मदमन) करता रहे, १२-समकित-(शुद्ध
द्धा) युक्त रहे, १३ चित्तको स्थिर रखे, १४-
ानाचार—दर्शनाचार—चारित्राचार--तपाचार
-विर्याचार, इन पंचाचारमें प्रवर्ते, १५-विनय
(नम्रता) सहित प्रवर्ते, तप--जप--क्रियानुष्टान
मे सदा वीर्य--पराक्रम फोड़ता रहे, १७ सदा
वैराग्य-सहित-रहे, १८ आत्मगुण- (ज्ञानदर्शन
चारित्र) को निध्यान (द्रव्यके खजाना) जैसा
बंदोवस्त करके रखे १९ पासथ्था (ढिला--
शिथिल) के परिणाम न लावे सदा, वर्धमान
रिणामी रहे, २० उपदेश द्वारा सदा सम्वर
की पुष्टी करे, २१ अपनीआत्माके-जो-जो दुर्गुण
दृष्टि आवे उनको टालने (निकालने) का उ-
पाय करता रहे, २२ काम-(शब्द—रूप) भोग
(गंध--रस--स्पर्श-) का संजोग मिले लुब्द न
होवे, २३ नित्य यथाशक्ति नियम, अभिग्रह
त्याग वैराग्यकी वृद्धि करते रहै, २४ उपधी

(वस्त्र—पात्र—सूत्र—शिष्य इत्यादिकका) अहंकार—अभिमान नहीं, २५ पांच प्रमाद १ मद (जातिमदादि आठ मद) २ विषय (पांच इंद्रीका २३ विषय २४० या २५२ विकार) ३ कषाय (क्रोधादि कषायके ५२०० भांगे) ४ निंद्रा नीद कमी लेवे, ५ विकथा (स्त्रीकी-राजाकी—देशकी-भोजनकी ए ४ प्रकारकी कथा नहीं करे) यह पांच ही प्रमादको सदा वर्जे, २६ थोड़ा बोले और कालोकाल क्रिया करे, २७ आर्त ध्यान और रौद्र ध्यान वर्जकर, धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान ध्यावे, २८ मन—वचन—काया सदा शुभ काममें प्रवर्तावे, २९ मरणांतिक वेदना प्राप्त हुए भी प्रणाम स्थिर रखे, ३० संसारसुं विरक्ति भाव आये सर्व स्वजनादिक का त्यागन करे, ३१ सदा आलोयणा—निंद-णा (गुरु आगे गुप्त पाप प्रकाशके अपनी आत्माकी निंदा करे, ३२ अंत अवसर जाण

संथारो करे, आहार और शरीरका त्याग कर समाधि भावसे देहोत्सर्ग करे,

३२ दोष टालीने गुरु महाराजने वंदणा करणी ते दोष कहे छे :—

१ उकडुं बेठो वांदे तो दोष २ नाच तो वांदे तो दोष ३ सघलाने एकठा वांदे तो दोष ४ रजो हरणो अकुंस जिम राखे वांदे तो दोष ५ अही कपड़ा उंचा करीने वांदे तो दोष ६ चपल पणे वांदे तो दोष ७ माछलानी परे उलट पलट होयने वांदे तो दोष ८ मनमे गुण छांडी अवगुणी होय वांदे तो दोष ६ कपटपणो सुं वांदे तो दोष १० डर तो वांदे तो दोष ११ जे मुझने असुको मान देसे यह कारण वांदे तो दोष १२ साख करी वांदे तो दोष १३ गर्व करी वांदे तो दोष १४ इह लोकने हितकारी वांदे तो दोष १५ चोरनी परे वांदे तो दोष १६ प्रतग्या हेते वांदे तो दोष १७ ॥

सासतां वांदताही जाय (वे रीतीसे) तो दोष १८
विश्वास उपजावा हेते(अर्थे) वांदे तो दोष १६
वचन हिल-तो वांदे तो दोष २० विकथा करते
वांदे तो दोष २१ दृष्टी तिरछी राखतां वांदे तो
दोष २२ कोइ साधु देखे कोइ न देखे वांदे तो
दोष २३ क्या करिये वांदिया बिना छुटतानथी
एसी जाण कर वांदे तो दोष २४ एकने घाट वांदे
एकने जादागीतसुं वांदे तो दोष २५ गुरु तो नीचे
आसण अने वंदणा करणे वालो उंचे आसण
बेठो वांदे तो दोष २६ बेठो बेठो वांदे तो दोष
२७ हस्तो हस्तो वांदे तो दोष २८ रजोहरण
आगो पाछो कर तो वांदे तो दोष २६ अस-
माधीयो होयने वांदे तो दोष ३० गुरुनेका-
वस्सग्गमें बेठाने वांदे तो दोष ३१ पेली समाधी
साता पूछे पछे वांदे तो दोष ३२ गुरु महाराजने
रसते चालता उभा राखी वांदे तो दोष ॥

॥ तेंत्रीसवां बोल ॥

३३ प्रकारे आशातना—(१) शिष्य, रत्नाधिक (वड़ा) गुरूनी आगल अविनयपणे चाले ते आशातना, (२) शिष्य वडानी (गुरुनी) बराबर चाले ते आशातना, (३) शिष्य वड़ानी पाछल अविनयपणे चालेतेआशातना, (४) (५) (६) ए प्रमाणे वड़ानी आगल, बराबर ने पाछल अविनयपणे ऊभो रहे ते आशातना, (७) (८) (९) ए प्रमाणे वड़ानी आगल बराबर ने पाछल अविनयपणे वेसे ते आशातना, (१०) शिष्य वड़ानी साथे बाहिर भूमि जाय ने वडा पहेलां शुचि थई आगल आवे ते आशातना (११) वडा साथे बहिर (बाहिर) भूमि जई आवी इरियापथिका पहेलां प्रतिक्रमे ते, आशातना (१२) कोई पुरुष आवे ते वड़ाने बोलाववा योग्य छे तेवुं जाणीने पहेलां पोते

बोलावे ने पछी वडा बोलावे ते आशातना (१३) रात्रिए वडा बोलावे के अहो आर्य ! कोण निद्रामां छे ने कोण जग्रत छे ? तेवुं बोलतां सांभलीने उत्तर न आपे ते आशातना (१४) अशनादि वेहरी लावीने प्रथम अन्य शिष्यादिनी आगल कहे पछी वड़ा आगल कहे तो आशातना (१५) अशनादि लावीने प्रथम अन्य शिष्यादिने बतावे पछी वड़ाने बतावे ते आशातना (१६) अशनादि वहोरी (वेहरी) लावीने प्रथम अन्य शिष्यने आमंत्रण करे पछी वड़ा ने आमंत्रण करे ते आशातना (१७) वड़ा साथे अथवा अन्य साधु साथे अन्नादि वहोरी लावी वड़ाने के वृद्ध साधूने पूछया विना पोतानो जेना उपर प्रेम छे तेओने थोडुं थोडुं वहेंची आवे ते आशातना (१८) वड़ा साथे जमतां त्यां सारुं सारुं पत्र, शाक, रससहित मनोज्ञ,

उतावल थी जमे (जीमे) तो आशातना (१६) वडाना बोलाव्या छतां सांभलीने मौन रहे ते आशातना (२०) वडाना बोलाव्या छतां पोताना आसने रही हा कहे, परन्तु काम बतलावसे तेवा भय थी वडा पासे जाय नहीं ते आशातना, (२१) वडाना बोलाव्या थी आवे ने कहे के शु कहो छो? एवुं मोटासाथे अविनय थी कहे ते, आशातना (२२) वडा कहे के आ कार्य तमे करो, तमोने लाभ थसे त्यारे शिष्य वडाप्रति कहे के तमेज करो तमोने लाभ थाशे ते आशातना, (२३) शिष्य वडा प्रत्य कठोर, कर्कश भाषा वापरे ते आशातना, (२४) शिष्य वडाने, जेम वडा शब्द वापरे तेवा शब्दो तेवीज रीते वापरे ते आशातना (२५) वडा धर्म व्याख्यान आपता होय त्यारे सभामां जाई बोले के तमो कहो छो ते क्यां

छे? एम कहे ते आशातना, (२६) वडा धर्म व्याख्या कहेतां शिष्य कहे के, तमो भूली गया छो ते आशातना, (२७) वडा धर्म व्याख्या आपतां शिष्य पोते सारु न जाणी खुश न रहे ते आशातना (२८) वडा धर्म व्याख्या आपतां सभामां भेद थाय तेम, अवाज करी बोली उठे के वखत थई गयो छे, आहारादि लेवा जवानु छे विगेरे, कही भंग करे ते आशातना; (२९) वडा धर्म व्याख्या आपतां श्रोताओनां मनने नाखुशी उत्पन्न करे ते आशातना (३०) वडानु धर्म व्याख्यान बंध थयुं न होय तेटलामां शिष्य पोते व्याख्यान शरु करे ते आशातना (३१) वडानी शय्या-पथारीने पगे करी घसे, हाथे करी आस्फालन करे ते आशातना

वडानी शय्या...

सूवे ... आशा ... वडा

आसने के वरावर आसने वेसवुं, उभा रहेवुं, सूवुं वगेरे करे ते आशातना, यह ३३ गुरु आसातना जाणीजे।

पाठन्तर।

गुरुकी आशातना—तीन चालणेकी—गुरुके आगे चाले १, गुरुके वरोवर चाले २, गुरुके पाछे अडतो चाले ३, ऐसी तीन आशातना खडे रहणेकी ६, ऐसी तीन वेसणकी ६, दिशा गए गुरुसुं पहला हाथ धोवे तो आशातना १०, घडासाथ वाहारली भूंमीका जायकर आयां, गुरुके पहली इरियावही पडिकमें तो आशातना ११, गुरु प्रश्न करता होय विचमें बोले तो आशातना १२, गुरुके पास सुता होय गुरु बोलावे जागता न बोले तो आ-

शातना १३, आहार पाणी ल्यायकर गुरु थकी पहली छोटा जतिकुं देखावे तो आशातना १४, गुरु पहली छोटा जति (शिष्य) कने आलोवे तो आशातना १५, गुरु पहली छोटा शिष्य (यति) कुं आमंत्रे तो आशातना १६, गुरुकी आज्ञाविना छोटा यति तथा अनेरा साधुकुं आहार पाणी देवे तो आ-शातना १७, गुरु शिष्य आहार पाणी करता होय सरस सरस आपखावे निरस, निरस गुरुकुं देवे तो आशातना १८, गुरु बुलावे बोले नहीं तो आशातना १६, गुरु बुलावे आसण बेठां जवाब देवे तो आशातना २०, गुरु बुलावे तो कहे तुं क्या कहे छे तो आ-शातना २१, गुरुने तुंकारा देवे तो आशातना २२, गुरुने रे तुं अयोग वचन बोले तो आशातना २३, गुरुने उत्तर पडुत्तर देवे तो आशातना २४, गुरु अर्थ करता होवे तिवारे

भरी सभामें कहे इम छे इम नहीं तो आशातना २५, गुरु सूत्र पाठ कहेता हुवे तिवारे भरी सभामें कहे इम नहीं इम छे तो आशातना २६, गुरु कथा कहेता हुवे चेलो भली नहीं जाणे खुशी न हुवे तो आशातना २७, गुरु कथा कहेता परखदामे भेद पाडे तो आशातना २८, गुरु कथा कहेतां हुवे शिष्य कहे आहारकी वेला थइ छै वखान उठा दो क्युं नहीं? इम कहे तो आशातना २९, गुरु कथा कही चाही कथा वणाय वणाय कर आछीतरेसुं कहे तो आशातना ३०, गुरुके आसणसुं ऊंचा आसण वैठै तो आशातना ३१, गुरुके वरोवर आसण करे तो आशातना ३२, गुरुके आसणकुं पग लगावे तो आशातना ३३।

२ वोल परम कल्याणका—१ तपस्या करीने नीयाणो न करे तो जीवरो परम कल्याण हुवे

किणनी परे तामलीतापसनी परे, २ समकित नीरमल पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे श्रेणिक राजानी परे, ३ मन वचन कायानो योग शुभ प्रवरतावे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे गजसुकमालनी परे, ४ छती सक्ती क्षमा करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे परदेशी राजानी परे, ५ पांच महाव्रत निरमला पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे गौतमस्वामीनी परे, ६ कायरपणो छोडे सुरपणो आदरे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे सेलक मुनीराजनी परे, ७ पांच इन्द्रियोंने वस करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे हरिकेसी मुनिराजनी परे, ८ माया कपटाई छाडे (छोडे) तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे मल्लीनाथजीना छए मित्रनी

परे, ६ खरे धर्मनी आस्ता राखे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे 'वर्ण नामे नटनी परे, १० चरचा वारता करीने सर-दहणा सुद्ध करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे केसीमुनी, गौतमस्वामीनी परे ११ दुखी देखीने करुणा करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे मेघरथ राजा मेघ कुमाररे पाछले हाथीरे भवनी परे १२ खरे वचनरी आसता राखे तो जीवरो परम कल्यान होवे किणनी परे आणंदजी कामदेव श्रावकनी परे, १३, अदत्तादान त्यागे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे अमरजीरे सातसे शिष्यनी परे, १४ शुद्ध मन सील पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे सुदरशण शेठनी परे, १५ ममता छोडीने समता आदरे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे कपील

किणनी परे तामलीतापसनी परे, २ समकित नीरमल पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे श्रेणिक राजानी परे, ३ मन वचन कायानो योग शुभ प्रवरतावे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे गजसुकमालनी परे, ४ छती सक्ती क्षमा करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे परदेशी राजानी परे, ५ पांच महाव्रत निरमला पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे गौतमस्वामीनी परे, ६ कायरपणो छोडे सुरपणो आदरे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे सेलक मुनीराजनी परे, ७ पांच इन्द्रियोंने वस करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे हरिकेसी मुनिराजनी परे, ८ माया कपटाई छाडे (छोडे) तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे मल्लीनाथजीना छए मित्रनी

तीजे देवलोकरे इन्द्ररे पाछले भवनी परे, २४ उत्कृष्टो वीनो करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे बाहुबलजीनी परे, २५ उत्कृष्ट दलाली करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे कृष्ण महाराजनी परे, २६ उत्कृष्टो अभिग्रह करे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे ढंढण मुनिराजनी परे, २७ शत्रु मित्र उपर सरिषा भाव राखे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे उदाइ राजानी परे, २८ अनर्थरो हेतु जाणीने दया पाले तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे धर्मरुची अणगारनी परे, २९ कष्ट पड्या शीलमें दृढ रहे तो जीवरो परम कल्याण होवे किणनी परे चन्दनबाला वा उणकी मातानी परे, ३० रोग आया हायओह न करे तो आत्मारो परम कल्याण होवे किणनी परे अनाथिजीनी

राज्य मृत्यु टाली है, थानकमें मरयो पड्यो पंचेंद्री कलेवर, ए बीस वोल टाल कर ज्ञानी आज्ञा पाली है, असाढ, भादु, आसु, काती, चैती, पुनम जाण। इणथी लगती टालीये, पड़वा पांच वखाण॥ पड़वा पांच वखाण सांज सवेर मध्य न भणीये, आधी रात दोप हर, सर्व मिल चौतीस गिणिये॥ चौतीस असभाइ टालके सूत्र भणसी सोय। ऋपि लालचंद इणपरि कहे ताके विघन न व्यापे कोय ३४। (

१४ असभाईके नाम १ उकावाय कहता तारा तुटे तो एक पोहर असभाई २दिशादाहा कहता फजर और शामको दिशा लाल रंगकी रहे वहां तककी असभाई ३ गजिया कहता गर्जना होवे तो एक मुहूर्तकी असभाई ४ विज्जुए कहता विजली होनेसे दोय पोहर (प्रहर) असभाई परंतु गाज और विजलीको

आद्रा नक्षत्रसे स्वाति नक्षत्र तक असझाई
नगिणना और सदा गिणना. ५ निग्घाए
कहता कड़केतो आठ प्रहर की असझाई ६
जुवे कहता बालचंद्र शुक्ल पक्षकी पडिवा
द्वितीया त्रितीया ए तीन रातमें, चंद्रमा
रहे वहांतकको असझाई ७ जरकाले कहता
आकाशमें मनुष्य पशु पिशाचादिक के चिन्ह
दिखे वहांतक असझाई ८ धुम्मीए कहता
काली धूंहर पड़े वहांतक असझाई ९ महिये
कहता श्वेत धूंवर (मेगरवा) पड़े वहांतक
असझाई १० ऊधाए कहता आकाशमें
धूलका गोटा (दोटा) चढ़ा हुवा दिखे वहांतक
असझाई ११ मंस० कहता मांस दृष्टिमें
आवे वहांतक असझाई १२ सोणी कहता
रक्त (लोही) दृष्टिमें आवे वहांतक अस
झाई १३ अठी कहता अस्थी (हडी) दृष्टि
में आवे वहांतक असझाई १४ उच्चार कहता

भिष्टा दृष्टिमें आवे वहांतक असझाई १५ सुसांण कहता श्मशानके चारो तरफ १००, १०० हाथ असझाई १६ राय मरणे कहता राजाके मृत्युकी दूसरो राजा बैसे उटेतक हड़ताल रहै वहांतक असझाई १७ रायवुगय कहता राजाओंका युद्ध होवे वहांतक असझाई १८ चंदवरागे कहता चंद्रग्रहण होय तो जगन ४ उत्कृष्टी ८ प्रहर खग्रास होनेसे १२ प्रहर थोड़ा ग्रहण होनेसे कमी काल समझना १६ सुरोवरागे कहता सूर्य्य ग्रहण होय तो १२ प्रहर २० उवसंतो कहता पंचेंद्रियका कलेवर निर्जीव देह पड़ा होवे तो चारो तरफ १००-१०० हाथ असझाई २१ आश्विन सुदि पूर्णीमा असझाइ २२ कार्तिक वदी प्रतिपदा (प्रथमा) असझाइ २३ कार्तिक सुदि पूर्णीमा असझाई २४ मृगशीर्ष प्रतिपदा असझाइ २५ चैत्र सुदी पूर्णीमा

आद्रा नक्षत्रसे स्वाति नक्षत्र तक असझाई नगिणना और सदा गिणना ५ निग्घाए कहता कड़केतो आठ प्रहर की असझाई ६ जुवे कहता बालचंद्र शुक्ल पक्षकी पडिवा द्वितीया त्रितीया ए तीन रातमें चंद्रमा रहे वहांतककी असझाई ७ जरकाले कहता आकाशमें मनुष्य पशु पिशाचादिक के चिन्ह दिखे वहांतक असझाई ८ धुम्मीए कहता काली धूंहर पड़े वहांतक असझाई ९ महिये कहता श्वेत धूंवर (मेगरवा) पड़े वहांतक असझाई १० ऊधाए कहता आकाशमें धूलका गोटा (दोटा) चढ़ा हुवा दिखे वहांतक असझाई ११ मंस० कहता मांस दृष्टिमें आवे वहांतक असझाई १२ सोणी कहता रक्त (लोही) दृष्टिमें आवे वहांतक असझाई १३ अठी कहता अस्थी (हड्डी) दृष्टिमें आवे वहांतक असझाई १४ उच्चार कहता

भिट्टी दृष्टिमें आवे वहांतक असझाई १५ सुसाण कहता श्मशानके चारो तरफ १००, १०० हाथ असझाई १६ राय मरणे कहता राजाके मृत्युकी दूसरो राजा बैसे उटेतक हडताल रहे वहांतक असझाई १७ रायवुगय कहता राजाओंका युद्ध होवे वहांतक असझाई १८ चंदवरागे कहता चंद्रग्रहण होय तो जगन ४ उत्कृष्टी ८ प्रहर खग्रास होनेसे १२ प्रहर थोडा ग्रहण होनेसे कमी काल समझना १९ सुरोवरागे कहता सूर्य्य ग्रहण होय तो १२ प्रहर २० उवसंतो कहता पचें-द्रियका कलेवर निर्जीव देह पड़ा होवे तो चारो तरफ १००-१०० हाथ असझाई २१ आश्विन सुदि पूर्णीमा असझाइ २२ कार्तिक वदी प्रतिपदा (प्रथमा) असझाइ २३ कार्तिक सुदि पूर्णीमा असझाई २४ मृगशीर्ष प्रतिपदा असझाई २५ चैत्र सुदी पूर्णीमा

असझाइ २६ वैसाख वदी प्रतिपदा असझाइ २७ आषाढ सूदी पूर्णीमा असझाइ २८ श्रावण वदि प्रतिपदा असझाइ २९ भाद्र सुदि पूर्णीमा असझाइ ३० आश्विन वदि प्रतिपदा ये १०, दिन और रात संपूर्ण असझाइ पालना ३१ प्रभात ३२ दो प्रहर (मध्यान) ३३ शाम ३४ मध्य रात्री ये ४ वक्त शेपकी (छेहली) ३१-३२-३३-३४ वीं, एकेक मुहूर्त असझाइ ये ३४ असझाइ टालकर सूत्र भणता ।

॥ पैंतीसमा बोल ॥



अर्हंतकी वाणी के ३५ गुण ※।

१ संस्कारयुक्त वचन बोले, २ उच्च स्वरसे बोले, जिसको एक योजन तक बैठी हुई परिषदा अच्छी तरहसे श्रवण करती हैं, ३ सादी भाषामें परन्तु मानपूर्वक शब्दोंमें बोले; "रे,तु!" इत्यादि तुच्छकार वाचक शब्द नहीं बोले, ४ जैसे आकाशमें महा मेघका गर्जारव होता है, ऐसे ही प्रभुकी वाणी भी गंभीर होती है; और वाणीका अर्थ भी गंभीर-गहन-उंडा होता है, अर्थात उच्चार और तत्व दोनोंमें गंभीर वाणी बोलते हैं, ५ जैसे गुफामें व शिखरबंध

नोट— ※ प्रभुकी वाणीके ये गुणोंकी तरफ हरएक उपदेशक को ध्यान लगाना चाहिये, युरोपीयन वक्ताओं श्रोतागणपर प्रबल असर करते हैं उसका सबब यह है कि वे लोग उपदेश देनेकी रितीका अभ्यास करते हैं।

पुरा कर दे, तथा निःसार बात संसारीक क्रियादिककी थोड़ेमें पुरी करे विस्तार नहीं करे १८ बात रूप कहे-ऐसा खुला अर्थ प्रकाश करे कि छोटासा बालक भी मतलब समझ जाय, १६ स्वश्लाघा और परनिंदा रहित प्रकाशे, देशनामें अपनी स्तुती और अन्यकी निंदा नहीं करे, ('पाप'की निंदा करे परंतु 'पापी'की निंदा नहीं करे) २० मधुर वाणीसे उपदेश करे, दूध और मिश्रीसे भी अधिक मिष्टता-माधूर्यता प्रभुकी वाणीमें है, इसलिये श्रोता जन व्याख्यान छोड़कर जाना पंसद नहीं करते, २१ मर्मकारी वचन न कहे, जिससे किसीकी छानी बात खुली होवे ऐसी बात न करे, २२ योग्यता देखकर गुणकी प्रसंसा करे, खुशामद न करे, योग्यतासे अधिक गुण न कहे, २३ सार्थ धर्म प्रकाशे, जिससे उपकार होवे, तथा आत्मार्थ सिद्ध होवे ऐसा कहे, २४ अर्थका

तुच्छपणा न करे अर्थात् छिन्न भिन्न करके न फरमावे, २५ शुद्ध वचन कहे, व्याकरणके नियमानुसार शुद्ध भाषा प्रकाशे, ❋ २६ मध्यस्थपणे प्रकाशे अर्थात् बहुत जोरसे भी नहीं, बहुत जलदीसे भी नहीं, और बहुत धीरेसे भी नहीं, इस तरह बोले, २७ श्रोताजनोंको प्रभुकी वाणी चमत्कारी लगे कि "हा हा। प्रभूके फरमानेकी क्या चतुरताई और क्या शक्ति है।" २८ हर्षयुक्त कहे, जिससे सुननेवालेको हूबहु (वैसाका वैसाही) रस प्रगमें २९ विलंब रहित कहे, बिचमें विश्राम नहीं लेवे, ३० सुननेवाला जो प्रश्न मनमें धारकर आया होवे, उसका विना पूछे ही खुलासा हो जावे इस तरह प्रकाशे, ३१

नोट— ❋ व्याकरणकी कितनी जरूरत है सो इस परसे ध्यानमे लेना चाहिये, अशुद्ध वाणीमें अर्थ हितकारक होनेपर भी श्रोतागणके हृदयमे बात जचती नहीं है, इस लिये उपदेशक वर्गको लाजिम है कि भगवानके गुणोंका अनुकरण करना और गुरुकी आज्ञानुसार व्याकरण भी पढना ।

अपेक्षा वचन कहे; एक वचनकी अपेक्षासे दूसरा वचन कहे, और जो फरमावे वो श्रोताके हृदयमें ठसता जावे, ३२ अर्थ—पद-वर्ण-वाक्य सर्व जुदे जुदे फरमावे, ३३ सात्विक वचन प्रकाशे इंद्रादिक बड तेजस्वी प्रतापी आ जावे सो भी डरे नहीं, ३४ जो अर्थ फरमाते हैं, उसकी सिद्धी जहांतक न होवे वहांतक दूसरा अर्थ निकाले नहीं, एक बात दृढ़ करके दूसरी बात पकड़े, ३५ चाहे कितना लंबा समय उपदेशमें चला जावे तो भी थके नहीं, उत्साह बढ़ता ही रहे।

॥ छत्तीशमां बोल ॥

३६ आचार्यके छत्तीस गुण—पांच महाव्रत पाले ५, पांच इन्द्रि जिते १०, च्यार कषाय निवारे

पण) दो प्रकारका, १ द्रव्यसे तो उपधी-भंड उपगरण थोडी रखे और भावे कषाय कम करे, ११ उयंसी कहता उपसर्ग उत्पन्न हुये धीर्य धरे, १२ तेयंस कहता महातेजस्वी १३ वच्चंसी कहता चतुराइसे बोले किसीके छलमें आवे नहीं, १४ जसंसी कहता यश-वन्त आचार्यके यह च्यार बोल स्वभाविक पाते हैं, १५ जिये कोहे, १६ जिय माणे, १७ जीये माये, १८ जिये लोहे, १९ जिये इन्द्रिय अर्थात् क्रोधमान माया लोभ और श्रोतादिक पांच इन्द्रिय रुप महासत्रुओंको जीतते हैं, २० जिये निंदा कहता दूसरेकी निंदा करनेसे निर्वत्तते हैं पापको निंदे परंतु पापीको नहीं तथा निद्रा अल्प, २१ जिये परिसह कहता क्षुधादिक परिसह उत्-पन्न हुवे चलायमान न होवे, २२ जीविय आसमरणभय विप्पमुक्का कहता बहुतकाल

जीणेकी आश नही और मरनेका डर नही, २३ वयपहाणे महा व्रतादि वृत करके प्रधान होवे, २४ गुणपहाणे कहता चाती आदि गुण करके प्रधान होवे, २५ कारण पहाणे कहता क्रियावन्तके ७० गुण करके प्रधान होवे, २६ चरण पहाणे कहता चारित्रके ७० गुण करके प्रधान होवे, २७ निग्गह पहाणे कहता अनाचारका निषेध करनेमे प्रधान होवे, अखलित जिनकी आज्ञा प्रवर्तें, २८ निच्छय पहाणे कहता षट् द्रव्यादिकका निश्चय करनेमे प्रधान होवे, राजादिक की सभामे क्षोभ न पामे, २६ विद्या पहाणे कहता रोहिणी प्रमुख विद्यामे प्रधान होवे, ३० मंत पहाणे कहता विष परिहार व्याधी निवार व्यंत्रोप सर्ग नाशक इत्यादि मंत्रसे प्रधान होवे, ३१ वेय पहाणे कहता यजुरादिक चारही वेदके जाण होवे, ३२ वंभ पहाणे

कहता ब्रह्मचर्यमें प्रधान होवे, ३३ णय-पहाणे कहता नेगमादि सातनय स्थापनेमें प्रधान होवे. ३४ नियम पहाणे कहता अभिग्रहादि नियम तथा प्रायश्चित विधि जाणनेमें प्रधान होवे, ३५ सच्च पहाणे कहता महासत्यवन्त, ३६ सोय पहाणे कहता शुची दोय प्रकारकी १ द्रव्यतो लोकमें अपवाद होय ऐसा वस्त्रादि न पहरे और भावे पाप मेलसे न खरडाय।

॥ दोहा ॥

बारबार कर जोरिकें, गुणवंतसूं अरदास।
अल्पबुद्धि मोहि जाणके,मति कीज्यो कोईहास्य॥
बोल लिखी ऐसे करू, पंडित सुं अरदास।
हीण जो मैं, कह्यो सुध भांति प्रकाश॥

॥ ओछो अधिको आगो पाछो लिख्यो होय तेनो मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ सेव भते सेवं भते ॥

॥ तेमत्र सच्चम् ॥

शान्तिः। शान्ति.॥ शान्तिः॥।







॥ श्री सर्वज्ञाय नमः ॥

अर्हंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्व साधूभ्योनमः

॥ दोहा ॥

पर द्रव्यन तैं प्रीति, है संसार अबोध।
ताको फलगति चारिमें, भ्रमण कह्यो श्रुतबोध ॥
निर्मल है निज आत्मा, देह अपावन गेह।
जानि भव्य निज भावकुं यासुं तजो सनेह ॥
धर्म करत संसार सुख, धर्म करत निर्वान।
धर्म पंथ साधे बिना, नर तिर्यंच समान ॥
धर्म विना सुण जीवड़ा, तुं भम्यो भव्य अनंत।
मुढ पणे भव्य ते किया, इम बोले भगवंत ॥

॥ अथ ११ गणधरोंके नाम ॥

१ श्री इन्द्रभूतिजी
२ श्री आग्नभूतिजी (श्री अग्निभूतिजी)
३ श्री वायभूतिजी
४ श्री विगतस्वामीजी
५ श्री सुधर्मास्वामीजी
६ श्री मंडी पुत्रजी
७ श्री मोरीपुत्रजी
८ श्री अकम्पितजी
९ श्री अचलभूतीजी
१० श्री मेतारजजी
११ श्री प्रभासजी

॥ अथ १६ सतियोंके नाम ॥

१ श्री ब्राह्मीजी
२ श्री सुंदरीजी
३ श्री कौशल्याजी
४ श्री सीताजी
५ श्री कुंतीजी
६ श्री द्रोपदीजी
७ श्री राजमतिजी
८ श्री चदनबालाजी
९ श्री सुभद्राजी
१० श्री चेलणाजी

ी शिवाजी (सेवाजी) १४ श्री सुलसाजी
्री पद्मावतीजी १५ श्री दमयंतीजी
्री मृगावतीजी १६ श्री प्रभावतीजी

इति ११ गणधर ।

१६ सतीयोंके नाम समाप्तम्।

, यह ११ गणधर, १६ सतीयो उत्तम पुरुषो
ो हमारी त्रिकाल वारम्वार वंदणा नमस्कार
ीजो ॥

॥ नीतिके दोहा ॥

जो तोकूँ कॉटा बोवे, ताहि बोइ तू फूल ।
तोकों फूलके फूल है. वाको है तिरसूल ॥
दुरवलको न सताइये, जाकी मोटी हाय ।
मुई खालके स्वांस से, सार भसम हो जाय ॥
ऐसी वानी बोलिये, मनका आपा खोय ।
औरनको शीतल करे, आपो शीतल होय ॥

जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ क्षमा तहँ आप।
साँच बरोबर तप नही, झूठ बरोबर पाप।
जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप॥
झूठ कबहुँ नहिं बोलिये, झूठ पाप को मूल।
झूठेकी कोउ जगतमें, करैप्रतीति न भूल॥
संगति कीजे साधु की, हरै और की व्याधि।
ओछी संगति क्रूर की, आठों पहर उपाधि॥
बुरा जो देखन मै चला, बुरा न दीखे कोय।
जो दिल खोजो आपना, मुझसा बुरा न कोय।
दुखमें सुमिरन सब करें सुखमें करे न कोय।
सुखमें जो सुमिरन करे, दुख काहेको होय॥
संचय करिबो है भलो, सो आवे बहु काम।
पाप न संचय कीजिये, जो अपयश को धाम।
बुरो माँगिबो जगत में, जाते हो अपमान।
क्षमा माँगिबो ईश तें, भलो यहीं कर ज्ञान॥
श्रम से विद्या पाइये, श्रम ही से धन होइ।

अपनी पहुँच विचारीके, करतव करिये दौर।
तेते पॉव पसारिये, जेती लॉवी सौर॥
देवो अवसर को भलो, जासों सुधरै काज।
खेती सूखे बरसिबो, धनको कौने काम॥
प्रकृति मिले मन मिलत है, अनमिलते न मिलाय
दूध दही ते जमत है, कॉजी ते फटि जाय॥
जो समझै जिहि बातको सो तिहि कहै विचार।
रोग न जानै ज्योतिषी, वैद्य ग्रहनकी चार॥
मूरख को पोथी दई, बांचन को गुन गाथ।
जैसे निर्मल आरसी, दई अंध के हाथ॥
बुरे लगत सिखके बचन, हिये विचारो आप।
कड़वी भेषज विन पिये, मिटै न तनकी ताप॥
करै बुराई सुख चहै, कैसे पावै कोय।
रोपै विरवा आक को, आम कहां ते होय॥
"रे मन" रहिवो वा भलो, जौ लौं शील समूच।
शील ढील जब देखिए, तुरत कीजिए कूच॥
॥ संग्रहकर्त्ता उदेकर्ण सेठिया

अहिर धाम मदिरा पिवे, दूध जानिये तात ॥
असत संगके वास सों, गुन अवगुन ह्वै जात।
दूध पिवै कलवार घर, मदिरा सबहिं बुझात॥
विद्यावन्तहि चाहिए, पहिले धर्म-विचार।
तासों दोउ लोक को, सधत शुद्ध व्यवहार॥
प्रातहि उठिके नित्त नित, करिये प्रभुको ध्यान।
जाते जगमें होय सुख, अरु उपजे सतज्ञान॥
काहू तें कडवो वचन, कहौ न कबहूँ जान।
तुरत मनुजके हृदयमें, छेदत है जिमि बान॥
पढ़िवे में कबहूँ नहीं, नागा करिये चूक।
कुपढ लोग माँगत फिरहिँ, सहहिँ निरादर भूक॥
मीठी बोली बोलिए, करके सब सों प्रीति।
करे प्रेम तासों सकल, लखि शुक सारिक रीति॥
सुनिके दुर्जनके वचन, हो रहिये चुपचाप।
करै जो समता तासुकी, नीच कहावै आप॥
होय शुद्ध मिटि कलुषता, सत्संगतिको पाय।
जैसे पारसको परस, लोह कनक ह्वै जाय॥

प्रेम भाव परकासीया, सब कुछ गया वगोय ॥
भक्ति प्रान से होत है, मन दे कीजे भाव।
परमारथ परतीति में, यह तन जाय तो जाव ॥
साहेब को घर दूर है, जैसी लम्बी खजूर।
चढ़े तो चाखे प्रेम रस, गिरे तो चकना चूर ॥
पढ़ पढ़ के कितने मूये, पण्डित भया न कोय।
ढ़ाई अच्छर प्रेमका, पढ़े सो पण्डित होय ॥
जब लगे मरने से डरे, तब लग प्रेमी नाँहि।
बड़ी दूर है प्रेम घर, समझ लो मन माँहि ॥
पानी मिले न आपको, औरन बखसत खीर।
आपन मन निश्चल नहीं औरन बंधावत धीर ॥
गजल—जगदीश गुण गाया नहीं,
गायक हुआ तो क्याहुआ।
पितु मात मन भाया नहीं,
लायक हुया तो क्या हुआ ॥
खाकर नमक निज सेठ का,
सेवा से जो मुँह फेरता।

॥ दोहा ॥

फल कारन सेवा करे, तजे न मनसे काम।
कहे कबीर सेवक नहीं, छै चौगुना दाम॥
सेवक सेवा में रहे, अन्त कहीं न जाय,
दुःख सुख सिर ऊपर सहे, कहें कबीर समझाय।
सेवक सेवा में रहे, सेवक कहिये सोय।
कहे कबीर सेवा विना, रसिक कमीन होय।
मेरा मुझ पर कुछ नहीं, जो कुछ है सब तोर।
तेरा तुझ को सौंपते, क्या लागेगा मोर।
दुःख सुख एक समान कर, हर्ष शोक नहीं व्याप
परोपकारी नहीं कामता, उपजे शोक न ताप।
प्रेम भाव इक चाहिये, भेष अनेक बनाय,
चाहे घर में वास कर, चाहे बन में जाय॥
जोगी जंगम सेवड़ा, सन्यासी दरवेश।
विना प्रेम पहुंचे नहीं, दुर्लभ सत्गुरु देश॥
जहां बाज बासा करे, पंछी रहे न कोय।

भवसागर तर जाय ॥

कहना था सो कह चुके
अब कुछ कहा न जाय ।
एक रहा दूजा गया,
दरिया लहर समान ॥

॥ संग्रह किया ॥
॥ जुगराज सेठिया बाल अवस्थामें ॥

॥ ३६ बोल मूर्खरा ॥

१ विना भूख खाय सो मूरख ।
२ अजीर्णथका खाय सो मूरख ।
३ कर्जा करके बे मुतलबी चीज खरीदे ते मूर्ख ।
४ लाभके समय आलस तथा कलहादि करे ते मूर्ख ।

चाकर नहीं वह चोर है,
खाया नमक तो क्या हुआ ॥
मात पिता की जीते जी,
जो सेवा कुछ न बन पड़ी ।
तब मूओं के पीछे,
श्राद्ध ओ तर्पण किया तो क्या हुआ ॥

दोहा—जिस जोबन के कारणे,
इतना करे गरूर ।
वह जीवन पल मात्र है,
अन्त धूर की धूर ॥
अन्याई राजा मिला,
जैसे पेड़ खजूर ।
प्रजाको छाया नहीं,
फल लागे अति दूर ॥
सुख दानी जग तारनी,
जापर होत सहाय ।
बड़ भागा वह जन बसे,

भवसागर तर जाय ॥

कहना था सो कह चुके
अब कुछ कहा न जाय ।
एक रहा दूजा गया,
दरिया लहर समान ॥

॥ संग्रह किया ॥
॥ जुगराज सेठिया बाल अवस्थामें ॥

॥ ३६ बोल मूर्खरा ॥

१ विना भूख खाय सो मूरख ।
२ अजीर्णथकां खाय सो मूरख ।
३ कर्जा करके वे मुतलवी चीज खरीदे ते मूर्ख ।
४ लाभके समय आलस तथा कलहादि करे ते मूर्ख ।

५ कर्जा देती वखत इतनी वाते विचारने योग्य है हैसियत संपदा धन नफा या टोटा क्षेत्र राजाका कानून चलण संगत साख सोभा प्रकृति पक्ष संपत परिवार नियत काम करता पुरुष इत्यादिक तपास करयां विगरउधार याने कर्जा देवे ते मूर्ख ।

६ सामान्य वात करते कठिन भाषा वोले ते मूर्ख ।

७ अपणी वुद्धिका गर्व कर दुसरेकी हित शिक्षाका वचन सुनके क्रोध करे ते मूर्ख ।

८ कुलमद करि (कुलका मद करके) किसी का विनय न करे ते मूर्ख ।

९ सरीर नीरोग थकां औषध (दवा) लेवे ते मूर्ख ।

१० वुढापेमें विवाह करे सो मूर्ख ।

११ निर्बुद्धि होय बडे अधिकारकी (अधिकारी होनेकी) इच्छा करे ते ।

१२ अन्याय करी महत्व (बडपन) चाहै ते मूर्ख।

१३ अपने स्वामीकी पीठ पीछे निन्दा करे ते मूर्ख।

१४ सुखके भोगनेके समय दुख और दरिद्रताको भुल जाय ते मूर्ख।

१५ वस्तु परीक्षार्थ जहर खाय ते मूर्ख।

१६ कषायके वश आत्म घात चिंतवे ते मूर्ख।

१७ धनवानसे और पण्डितसे वाद करे ते मूर्ख।

१८ प्रमादि हो देवका आश्रय ले उद्यम न करे ते मूर्ख।

१९ पराया वल, धन, रूप, विद्या देखके हर्ष या ईर्षा करे ते मूर्ख।

२० प्रत्यक्ष दोषी मनुष्यका वखांण करे ते मूर्ख।

५ कर्जा देती वखत इतनी बाते विचारने योग्य है हैसियत संपदा धन नफा या टोटा चेत्र राजाका कानून चलण संगत साख सोभा प्रकृति पत्त संपत परिवार नियत काम करता पुरुष इत्यादिक तपास करयां विगरउधार याने कर्जा देवे ते मूर्ख ।

६ सामान्य बात करते कठिन भाषा बोले ते मूर्ख ।

७ अपणी बुद्धिका गर्व कर दुसरेकी हित शिक्षाका वचन सुनके क्रोध करे ते मूर्ख ।

८ कुलमद करि (कुलका मद करके) किसी का विनय न करे ते मूर्ख ।

६ सरीर नीरोग थकां औषध (दवा) लेवे ते मूर्ख ।

१० बुढापेमें विवाह करे सो मूर्ख ।

११ निर्बुद्धि होय बडे अधिकारकी (अधिकारी होनेकी) इच्छा करे ते मूर्ख ।

२१ हिंसा करी धर्म माने ते मूर्ख ।

२२ रोगी होय कुपथ्य करे ते मूर्ख ।

२३ निर्धन और कर्जदार इनकी परीक्षा किये विगर विश्वास करे ते मूर्ख ।

२४ लौकिक व्यवहार न जाणे ते मूर्ख ।

२५ द्रव्य कमती होयके वडोंकी वरावरी करे ते मूर्ख ।

२६ पिता, सेठ काम करे याने काम करता थकां बेटा, गुमास्ता बैठा देखे और उनकी मर्जी माफक कामकी मदद न देवे, उनकी भक्ति विनय न करे, आला टाला करे लुकता छिपता फिरे तो मूर्ख, ऐसाही वड़ेके आगे छोटा और सासुके आगे वहु जाणना ।

॥ १७ वोल प्रस्ताविकका ॥

१ जो तुमकुं दुःखोका भय होय और

सुखकी अभिलाषा होय तो धर्मरूपी कल्पवृक्ष सेवो ।

२ धर्मकी जड़ विनय और पापकी जड़ व्यसन (कुव्यसन) है, यह क्रोड ग्रंथका सार है ।

३ जिसके पास नित्य क्षमारूपी खड्‌ग है उसका क्रोधरूपी वैरी कुछ नही कर सक्ता ।

४ शोकरूपी वैरीकुं ज्यादा पास रखोगे तो तुम्हारी बुद्धि, हिम्मत और धर्म ए तीनोका जड़से नाश हो जावेगा ।

५ जैसे पुत्र विगर पालणो और वींद विगर (विना)जान शोभती नहीं तैसे ही धर्म विगर आत्मा शोभती नहीं ।

६ जिके (जो जो) मनुष्य परस्त्रीकुं माता तथा बहनके सदृश (समान) समझता है और सर्व जीवोंकुं अपणी आत्मा समान गिणता है वह दुःखी नहीं होता यह बात शास्त्र द्वारा सिद्ध है ।

७ शास्त्रका श्रवण श्मशान (मशान) भूमि और रोग पीडा ए तीन स्थान वैराग्य उपजणेका मुख्य कारण है ।

८ वेसमजका अर्थ करनेवालेकुं शास्त्र भी शस्त्रकी तरह हो जाता है ।

९ बुद्धि बढ़नेका और नया तर्क उत्पन्न होणेका मुख्य कारण मनकी शुद्धि है ।

१० तुमको दुःख पड़े उस वक्त चिंता त्याग कर धैय राखो क्युंकि चिंता कुछ दुःख हरणेकी दवाई नहीं है । चिंतासे चतुराई घटेगी और चतुराईके अभावे (नहीं रहनेसे) तप जप और नियम किसके आधार रहेगे सम दम और समाधि किसकुं अवलम्बन करेंगे वास्ते उस वक्त धैर्य राखकर धर्म सेवण करना एहीज उत्तम है ।

११ जो तुमको सब दुनियाको वशकरणा होय तो पराया औगुणमें प्रवेश न कर गुण

ग्रहण करो मीठा और हितकारी वचन बोलो और उदारता गुणकी वृद्धि करो।

१२ अपणे हसते हसते कहते हैं कि क्या तुम्हारा हाथ टूट गया? क्या तुं अंधा हो गया? ऐसे ऐसे कटु (कड़वा) वाक्य कहकर चीकणे कर्म बांधते हैं वो जब कर्म उदय आवेंगे तब रोय रोय कर भी छूटना मुश्किल हो जायगा वास्ते वचन निकालती वक्त खूब शोच कर बोलना क्युंकि छुरीका तथा तरवारादि शस्त्रका घाव दवाइसे अच्छा होय जावे परंतु वचनका घाव मिलना कठिन है सो हरेक वक्त विचार पूर्वक बोलना।

१३ सामायिक करती वखत जिसका प्रणाम स्वजनोंके उपर और परजनोंके उपर और निंदा तथा प्रशंसामें समभाव रखेगे उसी ही का सामायिक मोक्षदायक होवेगा।

१४ जैसे राजाकी आज्ञाका भंग करणेसे

इस लोकमें मनुष्यको धन वगेरेका दड होता है तैसें ही सर्वज्ञ भगवानकी आज्ञा भंग करने से जीवको परभवमे अनंता भवभ्रमणरूप दंड (डंड) होता है ।

१५ जो तुम, तुमारे प्रिय मित्र और सगा तथा संबंधीके साथ प्रेम रखणा चाहते हो तो जिस वखत वह क्रोध करे तब तुम क्षमा धारण करो ।

१६ जो तुमको धर्मकी जल्दी उत्पति करणी होय तो शास्त्रका बहुमान करो और अच्छा आचरण राखो ।

१७ कडवा वचन कुमती, कृपणता और कुटिल स्वभाव ए च्यार दुर्गण त्यागोगे तब ही निश्चय धर्मकी प्राप्ति होवेगी ।

॥ नं० १ ॥

॥ बोल शिखावणारा ॥

१ माता पिता गुरु तथा मोटा पुरुषनं
विनय करवु ।

२ क्लेशने थानके मौनपणुं धारण करवु ।

३ इन्द्रियों सर्वथा वश राखवी ।

४ एक अक्षर शीखावानारने पण गुरु कर
मानवु ।

५ पोताना अवगुण शोधी काढवु ।

६ महोटा पुरुष घेर (घर) आवे तो उभ
थइ सन्मान देवु ।

७ दोस्तदारी मित्राचारी पण्डितो साथे
राखवी ।

८ नवांनवां शास्त्र वांचवानो अभ्यास रा-
खवु ।

९ जे आपणी सगी थती नथी तेनी साथे

बाइ अथवा बेहन वा माता कहीने बोलवानो रीवाज राखवुं ।

१० पुत्र पुत्रीने नानपणाथीजसारी संगत राखवी सद्विद्या तथा धर्मना मूलतत्त्व शिखाववुं ।

११ जवान अवस्थामां पांचे इन्द्रियोने वश करवी तथा राग द्वेष विषय अने कषायादिक जीतवुं ।

१२ हुं मृत्युना मुखमां रह्यो छुं मारु आयुष्य क्षणमात्र नथी एम जाणी धर्म आचरवुं ।

१३ सर्व वस्तुनो नाश थतो होय तो पण पोतानुं वचन (सत्त वचन) अवश्य पालवुं ।

१४ करवुं होय ते बनते प्रयत्ने ज्ञाननी अने ज्ञानीनी विनय भक्ति करवुं अने लघुनीति वडीनीति स्नान मैथुन अने भोजन करती वखते शब्द उच्चारण न करवुं ।

॥ न० २ ॥
॥ बोल शिखावणरा ॥



१ रुप क्रोध छक अंध न वहीजे ।
२ भांग तमाखुं अमल तजीजे ।
३ बुरीगार रो संग न कीजे
४ वेर बुराई कदे न लीजे ।
५ न्यात जातमें फंद न पाड़ीजे ।
६ सात कुव्यसनसुं अलगा रहीजे ।
७ चोरी जारीझूठ तजीजे ।
८ खोटा दगा रा वणज न कीजे ।
९ मोह मायामें निपट न कलिजे ।
१० अथिर संसार सुं विरक्त रहीजे ।
११ गृहस्थ धर्म बारे व्रत धारीजे ।
१२ हकमें चाल खरो जस लीजे ।
१३ निरलोभी निग्रंथ गुरु कीजे ।
१४ साचा सुख मोक्षरा लीजे ।

॥ न० ३ ॥

॥ बोल शिखावणरा ॥



१ आवसग्ग करे तो पच्चक्खाण उपयोग हुवे ।

२ मनमें संदेह होय सो पूछने टाले ।

३ साधर्मिकु दोष लाग्या हुवे तो एकांत सिखामण दे ।

४ सांज सवेरे व्रत पच्चाखाण चितारे (संभाले) ।

५ जेसा प्राच्छित्त लाग्या होय तेसा दंड लेवे ।

६ साधर्मिसु चरचा करतां विचमे वाद न करे ।

७ भगवंतका मार्गमे खेंचाताण नकरे ।

८ पक्खी (पखी) चोमासी नफो टोटो विचारे ।

९ विनय सहित अक्षर पढे तथा पढावे ।

१० तीर्थंकरनी आज्ञा सहित कोई सिखावण देवे तो सत्य माने ।

११ धर्मके ठिकाणे आयके संसारकी बात न करे।

१२ धर्मी धर्मी आपसमें कलह राड न करे।

१३ धर्मी धर्मके ठिकाणे छोड़के और ठिकाणे जाय नही ।

१४ साधर्मीकुं डिगतेकुं थिर करे ।

१५ रोगी गिलाणोकी वेयावच्च करे ।

॥ न० ४ ॥

॥ बाल शिखावणरा ॥

॥ धर्मी पुरुषके योग्य ॥

१ बडोंके बीचमे न बोले ।

२ मर्मको वचन नही बोले ।

३ माया कपटाईरा वचन नहीं बोले ।

४ हिंसाकारक वचन छाना या उघाडा नहीं बोले।

५ दुर्वचन नहीं बोले।

६ भूंडा वचन नहीं बोले।

७ तूंकारा देकर नहीं बोले।

८ अणसुहातो (अणगमतो) नहीं बोले।

९ मारकूट पड़े क्रोध नहीं करे शुभ मन वर्तावे।

१० दुर्वचन बोले तो क्रोध न करे।

११ कोलाहल शब्द ऊपर क्रोध न करे।

१२ गुरुकी आज्ञामें चले आपरे छंदे नहीं चाले।

१३ गुरुरी सेवा करतो थको गुरुरे पास रहे

१४ गुरुरी सेवा करे तेने भली प्रकारो घणो भलो तपस्वी शूरवीर कहीये।

१५ पांच इंद्रियोंके विषयपर तथा आरंभ वेपे गृद्धी नहीं आणे।

॥ नं० ५ ॥

॥ बोल शिखावनरा ॥



१ मित्रसे कपट रखणो नहीं।

२ स्नेहवान स्त्रीको भी विश्वास न करनो।

३ अन्याय मार्गसे द्रव्य पैदा न करणो।

४ बड़ोंके साथे वेर करणो नहीं।

५ नीच पुरुषके संग विवाद करणो नहीं।

६ वैरीके ऊपर पण निर्दयी न होणो।

७ समर्थ होकर दूसरेकी आशा भंग नहीं करणी।

८ किसीकुं झुठो कलंक न देनो,

६ किसीकुं खराब मालूम होय ऐसो वर्तात्र नहीं रखणो।

१० जिस ठिकाणे दुश्मन ज्यादा होय वहां नहीं जाणो।

११ चोरीकी चीज मोल लेणी नहीं।

१२ कार्य तथा सत्कार विगर किसीके घर जाणो नहीं।

१३ माता पितानी आज्ञा लोपणी नहीं।

१४ सगां साथे कदापि विरोध रखणो नहीं।

१५ कपटीके आडम्बरको विश्वास न करणो।

१६ अति कष्ट पड्यां थकां भी आत्मघात करणी नहीं।

१७ हांसी करतां किसी पर क्रोध करणो नहीं।

१८ कोई क्रोधरे वश हो कर कड़वा वचन आय कर कहै तो भी न्यायमार्ग छोडणो नहीं।

१९ माता पिता गुरु सेठ स्वामी और राजा इणाका अवगुण बोलणा नहीं।

२० स्नेहराग समान दुसरो उत्कृष्टो बंधन नहीं और प्राणीकी हिंसा समान मोटा पापनहीं।

२१ माता बहन और पुत्री साथे एक आसण वेठणो नहीं।

२२ क्रोधी कृपण आलसी और व्यसनीकी संगत करणी नहीं।

२३ धनसे बहोत प्यार होय तो भी अन्याय सु उपार्जन करणो नहीं कारण सोनेरी छूरी कोइ पेटमें मारे नहीं।

२४ कदापी सत्य छोडना नहीं।

॥ नं० ६ ॥

॥ बोल शिखावणरा ॥

१ अपने किसी दूसरे पुरुपपर उपकार किया हुवे तो अपणे मुखसे उसको कभी दरसाणो नहीं वदलेमें पीछी कोई प्रकारकी ईछा न रखनी।

२ किसी पुरुषमें कोई औगुण देखके निंदा त्याग (छोड़) जहां तक हो उसका गुण ही ग्रहण करना।

३ पर स्त्री एकली एकांतमें होय तो वहां न बैठना ।

४ अजाण वस्तु जिसका नाम व गुण नहीं जाणे ऐसी न खाना न खिलाना ।

५ कोई गुप्त वात अपनी या अपने ईष्ट मित्रकी या जिसको दुसरेने विश्वास जाण कर कही होवे सो कदापि जाहिर न करना ।

६ कोइ भी मनमे चिंतवी वात ओछा मनुष्यकुं मूर्खकुं स्त्रीकूं पागलकुं न कहणी ।

७ संकट आनेपर धर्म धैर्य तथा सत्य न छोडना ।

८ जिस स्थानपर क्लेश तथा पापका कारण होवे त्याग करना या वहांपर मौन रखना ।

९ जिस द्रव्य उपार्जनमें जीवकी जोखम धर्मकी हानि और इज्जतका भय होवे ऐसा कृत्य न करना ।

१० कृतघ्नी, कपटी, निर्दयी, अतिलोभी, निर्लज्ज, कुव्यसनी और मूर्ख इनके साथ प्रीति न करना ।

११ अपनी इन्द्रियां विषय रागसे हर समय वश रखणी ।

१२ अपनी शक्ति तथा लक्ष्मी बुद्धि बल विचारके कार्य करना जिससें दूसरोंकी सहायता न लेणी पड़े ।

१३ छतें (थकां) द्रव्य कर्जा नहीं करणा ।

१४ निर्धनता अर्थात् दरिद्रतामें भी अकार्य तथा अनर्थसे धनकी इच्छा नहीं करणी ।

१५ अपने सज्जन तथा मित्रपर संकट पड़े तो अवश्य सहायता करनी ।

१६ व्रत पच्चखान लेके निर्मला पालणा ।

१७ अग्नीका ऊंडे जलका शस्त्रका सींग तथा नखवाले जानवरका विषका जोगीका कुपात्र स्त्रीका विश्वास करना नहीं इणके

नजीक रहना नहीं प्रयोजन होवे तो मध्य भावे रहणा ।

१८ दान देनेमें गुणजनकी सेवा भक्ति करनेमें विद्या सीखनेमें धर्मकृत्य करनेमें परोपकार करनेमें आलस्य प्रमाद और कृपणता रखनी नहीं ।

१६ दुष्ट कलंकी निर्दयी लापर कुव्यसनी निर्लज्ज इत्यादिक मनुष्यके साथ मित्रता गुमास्तगीरी पांतिदारी तथा लेण देण वगेरहका व्यवहार करना नहीं ।

२० राजा, गुरु, माता, पिता, पंच, पडित, इनके सामने कपट झूठ गैर अदबी करना नहीं सरलपणे सच्ची बात करना ।

२१ वल्लभ सगा से मित्र से कुटुम्बी से लेण देणका व्यवहार करना नहीं सुख दुःखमे सिरीहोणा भोजन, वस्त्र, आभूषणका सन्मान करणा व धर्मका उपदेश देना व सुणना ।

२२ अपने कुटुम्बके साथ विरोध करना नही यथायोग्य सबको राजी रखना दुःखमें साथ रहणा मिठा वचन बोलणा ।

२३ कोई सत्पुरुष अपने घरपर चला कर आवे तो आदर करना ।

२४ खोटा तोला खोटा मापा व झूठी गवाही वर्जनीय है ।

२५ मैथुन, भय, हांसी, क्रोध, लज्जा दुगंछा भोजनके समय वर्जनीक है ।

२६ राजा, तपस्वी, कवीश्वर, बैद्य अपणे घरका छिद्रका जाण रसोइया, मंत्रवादी और बडा पुरुषांके साथ विरोध करना नहीं ।

२७ अपने पास छती लक्ष्मी असंतोष रखना नहीं जगम लक्ष्मीका तीन भाग करना प्रथम भाग व्यापार दूसरा भाग वच्छ वखरा (घर वखरा) तीसरा भाग भंडारमे इस तरह तीन भाग करके धनका सन्तोष करनेसे समाधि

रहती है और अति लोभ तृष्णासे दुःख होता है।

२८ अपना पराक्रम लक्ष्मी बुद्धि पक्ष सामग्री देखे विना कोइ भी काम में विवादसे अथवा मानसे दूसरोंकी वरावरी करना नहीं।

२९ अपने इष्टके अनुकूल धर्मकृत्यका नित्य नेम अंगीकार किया हो सो हमेसा कल्प वृक्षकी तरह सेवन करना आंतरो पाड़नो नहीं।

३० कोई भी पुरुष अपणे गुणकी तथा हितकीवात सीखावन रूप कहे तो आदरसे सुनकर धारण करणा और उनका जस मानना।

३१ जिस गांवके लोगोंसे विरोध होवे तथा राजवर्गीयोकी नाराजगी होवे तो उस गांवमे वास नहीं करना।

३२ अपनी आत्माको संसारके संयोग वियोग जन्म मरणके दुःखसे छुडानेके वास्ते मोक्ष मार्गकी खोजना करणेकी खप अवश्य करणी चाहिये ।

॥ नं० ७ ॥

॥ बोल शिखावणरा ॥

१ खोटी सलाहदे ऐसे वकीलके पास मत जावो ।

२ खोटी पक्ष मत खेंचो ।

३ मामले, मुकदमेके मार्ग मत पड़ो, जिद को छोड न्यायको पकड़ो जदी मोहके उदय कषाय वश काम पड़ जाय तो पंच डाल कर आपस करलो (मिटायलो) चिंता हैरानीसे बचो अटरनि (Attorney) के पास मत जावो, जावोगे तो खरचा देती वखत पछताना पड़ेगा।

४ जिस स्थानमें (ग्राममें) चिंता दुख उपजतो होवे तथा मोह जागतो होवे उस ग्रामको छोड देना चाहिये, ज्ञान वृद्धिके स्थान (धर्म स्थान) जाइजे।

५ न्याय मार्ग सुत्र सिद्धान्त अनुसार चले उसको मामला, मुकदमा कभी लग नही सकता यह बड़ोंका कहना है सो सत्य है।

६ पीठ पीछे कीणहीरी निन्दा न करणी जो सुणेतो वैर बंधे।

७ क्रोधीने छेड़नो नही।

८ आपरा घररा छिद्र तथा सुख दुख किणही सु न कहणो।

९ बडांसु तथा मित्रसु विद्वानसु हेत वधाणो।

१० पारका औगुण जाणतो हुवे तो भी किणही आगे कहना नही।

११ नीच पुरुषने छेड़नो नहीं छेड़तो रेकारा तुंकारा बोले ।

१२ अछांयां तथा उघाड़े डील (सरीर) नगन नागा न सूईजे ।

१३ तीनकाल अशुभ बात न कीजे ।

१४ संसारना कार्य उतावलसुं न कीजै अवसर देखीजे ।

१५ सूवतां सागारी अण सण कीजै ।

१६ विमारी रोगचालो चलतो होवै जठे न रहीजे ।

१७ टावरांरे वास्ते न लड़ीजे ।

१८ विन छांणया पाणी न पीजै ।

१६ सुल्या धान न खाईजे ।

२० रसका भाजन तथा चराक दीवा प्रमुख उघाडा न राखीजे ।

२१ घट्टी, उंखल चूल्हा देखकर जतनासे वापरीजै ।

२२ कर्जा देती वखत या कर्जादियां पेहला ईतनी वात जरूर विचारने योग है, हैसीयत संपदा-धन, पुंजी वेपार, नफा. टोटा, खेत्र, राजका. कानून, चाल चलण, संगत साख सोभा संपत, परवार काम करता, प्रकृति, पत्त नियत इत्यादिक।

२३ कुमार्ग धन खरचके न गमाईजे।

२४ मारगमें तरुण (जवान) लुगाई रो साथ न कीजै।

२५ बाहरे नीकलेलो गाफिल न रहीजै चोकी पेहरो दीजै।

२६ तृपा थका घणो पाणी न पीजै।

२७ उकड़ो घणो नही वैसीजै।

२८ दिनरी घणी निन्द्रा न लीजै।

२९ घरमे वावल रूंख न उगाईजे।

३० आंवलीरी छांया न वैसीजै।

३१ पाणीरो आसंगो न कीजै।

३२ रीस करके टावर रे माथेमें न दीजै ।
३३ पर द्रव्यकी अयोग इन्छा नही कीजै ।
३४ अनीतिसे धन भेला नहीं कीजै ।
३५ गुरु गमके विना सुत्रका उपदेश देनेको तत्पर नही रहीजै ।
३६ सुता उठ सामायिक कीजै ।
३७ निग्रंथ साधुरो दरसण कीजै ।
३८ धर्मरी दलाली चित्तसु कीजै ।
३६ माय वाप सासु ने दुख नही दीजै ।
४० वडोंसे विनय राखीजै ।
४१ पापरे काममें आगे मत धसीजै ।
४२ धर्मरे काममें आलस न कीजै ।
४३ उपगारी हुइजै, सभोंसे भलाइ कीजै ।
४४ अण परखीयाँरा विश्वास न कीजै ।
४५ परने पीड़ा उपजे ते न बोलीजै ।
४६ इर्या जोयां विना न चालीजै ।
४७ सुत्र सिद्धांतरो संग्रह कीजै ।

४८ निश्चय व्यवहार-दोनु मानीजै ।

४९ नवां नवां शास्त्र वांचणे पढणेरो अभ्यास उद्यम राखीजै ।

५० बालकने छोटे पणेसे भली विद्या धर्म तत्व शिखाईजे ।

५१ दुःखी होवे तिणरो उपगार कीजे, उप-गार करता ढील-न करीजे ।

५२ रूठा ने मनाईजे ।

५३ थलीरा गांवमे वसीजे तो अग्निरो जतन कीजै ।

५४ लेखो चोखो करता ज्ञानरी वात वांचता लिखणो करता वीचमें-कांइ चीज देनी नही कांइ वात बोलणी नही, यदी बोले ध्यान चुकावै तो काम करता होवे उसको अणगमती लागै भूल पड़े गलती-आवे-फेर जैसो अवसर देखे वैसो करे ।

५५ गुरु, वडाके वीचमें नही बोलणो ।

५६ क्रोधकी वात, चिंताकी वात, दुखकी वात, अपणे स्वार्थकी अणगमती वात, घरका झींखणा विगेरह भोजनकी वखत या भोजन करतेको न कहणा चाहिये ।

५७ ज्ञानके उद्यम करणे वासते थोडी भी टैम निकाल लेनी ।

५८ नित्य नेम मर्यादा विधि सहित शुद्ध उपयोगसे करना ।

५६ साधु, साधवीने निर्दोष आहार चढते भावसे वेहराना ।

६० किसीका दिल मत दुखावो ।

६१ क्रोधकी वखत चुपरहणा चमा करणी ।

६२ अपने उपर कोई अपराध करे तब च्मा करके अन्तः करणसे माफी देना ।

६३ जल्दी उठ कर नित्य नेम करे सो पुनवान जाणीजे, मोड़ो उठे तो भूंडो दीशे दारीद्र आवे ।

६४ चिंता से रोगऊपजे, विनाकाम ग[illegible]
सपो मारनो नहीं, फजूल टैम खोनी नहीं।

६५ सब जीवका कल्याण होवे ऐसी शु[illegible]
भावना भाणी।

॥ सवैया ॥

राजा चंचल होय भोम पराई तके।
पण्डित चंचल होय सभामें अमृत भखे॥
हाथी चंचल होय सूंड फौजा में सोहे।
घोड़ा चंचल होय मन असवारा मोहे॥

॥ दोहा ॥

एता तो चंचल भला राजा पंडित गज तूरि।
कवि गुष कंहे सुणो राव हर निश्चय चंचल
नारं बुरि॥

॥ सवैया ॥

फूल घणां पण सुगंद नहीं कोण जावै उस वाड़ी में ।

थोरकी लकड़ी जीव घणां कोण लेवै उस भारीको ॥

रंग घणां पण पोत नही कोण लेवै उस साड़ीको ।

भरतार के कहणमें नहीं चाले धरकार है उस नारिको ॥

॥ दोहा ॥

मीठा सबसे बोलिये सुख उपजे कछु और ।
वशी करण इक मंत्र है तजो बोल कठोर ॥

छपाता--गैनपाल सेठिया,
कलकत्ता ।
विक्रम संवत १९७१ बैशाख सुदी ३

॥ कुण्डलिया ॥

लीलोती छोड़ी परी लोभ छोड़ीयो नाय।
दूना तीना चौगुणा मांड्या वहियां मांय ॥
मांड्या वहियां मांय तोलता घटतो तोले।
पंसेरीमें पाव मेल दै अंगूठा रे ओले ॥
लेता देता दामकी सो सो सोगन खाय।
लीलोती छोड़ी परी लोभ छोड़ीयो नाय ॥
सुन साहाजी जीवण कहे है ऊको ऊसेर।
लेता देता पाव कों तें घाल्यो किस विध फेर ॥
घाल्यो किस विध फेर कसर राखी नहीं कोई।
तोबा वार हजार डसी तूं करे कमाई ॥
साहेव लेखो मांगसी देसी ऊंधो टेर।
सुण साहाजी संग्राम कहे है ऊको ऊसेर ॥

॥ कविता ॥



रती विन रिद्ध रती बिन सिद्ध रती विन जोग सधे न जती को ।
रती विन राज रती विन पाट रती विन मानुष लागे फीको ॥
रती विन भाई कह्यो नहीं माने रती विन नार गिणे ना पतीको ।
कवी गंग कहै सुण शाह अक्कबर एक रती विन पाव रतीको ॥
वातन से देवी और देवता प्रसन्न होत ।
वातन से सिद्ध और साध पति कहलात है ॥
वातन सें खान सुलतान नरेश माने ।
...न से सेण लोक लाखों ही कमाते हैं ॥
...और भुजंग सव वसि होत वातन से ।
...े पुराय और पाप वढ़ि जात हैं ॥
...र कीरती होती सव वातन से ।

सो मानुपके गात बीच बात करामात है ॥

गंग तरंग दरियाव वहे जिन कूप को नीर पीवो न पीवो।

जाके हृदय हर नाम वसे जिन और को नाम लियो न लियो ॥

कर्म संजोग सुपात्र मिले जिन कुपात्र को दान दियो न दियो।

कवी गंग कहे सुण शाह अक्कवर कपटि मित्र कियो न कियो ॥

एक को ध्यावे दूजे को रटे रस नान कटे अस लव्वर की।

अवकी दुनियां गुनियां को ध्यावत शिर बांधत गांठ अटव्वर की ॥

जाको हरकी प्रतीत नहीं सो करत है आस अकव्वर की।

श्रीपत एक गोपाल को ध्यावत नहीं मानत संक जुजव्वर की ॥

कल्पवृक्ष न पारस की परवा चिंतामणीको हम ना करिये ।

नहीं चाह हमें पट भूषणकी रस कूप मिले तो का करिये ॥

सुनि लीजिये सज्जन या जग में अपनी अपनी मत पाकर हैं ।

परवा नहीं पंख हमाउ की हम चाह की आंख के चाकर हैं ॥

तूं कुछ और विचारत है नर तेरो विचार धर्‌यो ही रहेगो ।

कोटि उपाय करे धन के हित भाग लिखो इतनो ही लहेगो ॥

भोरकी सांझ घरि पल मांझ सुं काल अचानक आन गहेगो ।

राम भज्यो न कीयो कुछ सुकृत पीछे नर प रहेगो ॥

जो दस बीस पचास भये सत होय हजार तो लाख मंगेगी।

कोटि अरब खरब असंख्य धरापति होनेकी चाह जगेगी।

स्वर्ग पतालको राज करो तृष्णा अधकी अति आग लगेगी।

सुन्दर एक सन्तोष विना सठ तेरी तो भूख कभीना भगेगी।

सुरज छीपे नही अदरी बदरीमें चंद छीपे नहीं बादल छाया।

रण चढ़ीयो रजपूत छिपे नहीं प्रीत छिपे नही पीठ दिखायां॥

चचल नारी का नैन छीपे नहीं दातार छिपे नहीं घर मंगन आया।

जोगी का भेष अनेक करो कर्म छिपे नही भभूत लगायां॥

चूक जात भवरी (जौहरी) जवहार के परखवेमें।

चूक जात चितारां कलम काम नहीं करती ॥
चूक जात बजाज नाप कपड़ेके फाड़बेमें ।
होनी बलवान अजा सिंह से न मरती है ॥
जोतिष पुरान वेद चूक जात उचारबेमें ।
मल्लाह हुसियार नाव जलहू से भरती है ॥
झूठि ना कहे उस्ताद मजा रोसके मारबेमें ।
सोच करे मूर्ख होनी हो तब टारि नाय टरती है ॥



कर्मविपाक कथाका कितनेक सामान्य कर्म बंध फलका बोल ।

संग्रह करके लिखतें हैं ।

प्रश्नोत्तर ।

१ कहो पूज्य इण जीवरे सरीरमें घणा जीवारी उत्पत्ति होवै सो कीसे पापरे उदे (उदय) सु ?

उत्तर—सुण सिष्य पूरवले भवमें घणा कच्च मच्छरो आहार कीनो तिण पापरे उदेसुं ।

२ कहो पूज्य इण जीवने भणनो गुणनो नहीं आवे सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्वले भव आप भणीयो नहीं पेलेने (दूसरेंने) भणतां अंतराय दीनो तिण पापरे उदेसं ।

३ कहो पूज्य जीव कालो कुदरसण अशुभ वर्ण पामे सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्वले भव रूपरो अहंकार मद कीनो तिण पापरे उदेसुं ।

४ कहो पूज्य इण जीवने कुडो कलंक (आल) आवै सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्व भवे वारंवार कलह करै अठारमो पाप स्थानक वारवार सेवै तिण पापरे उदेसुं ?

५ कहो पूज्य इण जीवरो बोलीयो चालीयो सुहावे नही सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्वले भव आपरो कियो थापीयो पेलेरो कियो उथापियो तिण पापरे उदेसुं ।

६ कहो पूज्य इण जीवने शावाशी जस मीले नही सो किण पापरे उदेसुं ?

उत्तर—पूर्व भव जातरो अहंकार किनो पापरे उदेसुं ।

७ कहो पूज्य इण जीवने घणो क्रोध आवे सो किण पापरे उदेसु ?

उत्तर—पूर्वले भव घणो लोभ कीनो तिण पापरे उदेसु ।

८ कहो पूज्य इण जीवरे संसार भ्रमण मिट्यो नही सो किण पापरे उदेसु ?

उत्तर—पूर्व भवे पोसा प्रतिकमणोमें विराधना कीनी तिण पापरे उदेसु ।

९ कहो पज्य इण जीवने देश परदेश जावे पिण लाभ हुवे नहीं सो किण पापरे उदेसु ?

उत्तर—पूर्वले भव पोते दान दियो नही पेलेने देता अतराय कीनी तिण पापरे उदेसु ।

१० कहो पूज्य इण जीव पांचे इंद्री हीण पाइ सो किसे पापरे उदेसु ?

उत्तर—पूर्वले भव गाजर मूला कांदा जमिकंदरो आहार कीनो तिण पापरे उदेसु ।

११ कहो पूज्य इण जीव पांच इंद्रिरो वियोग पायो सो किण पापरे उदैसुं ?

उत्तर—पूर्व भवे वनस्पतिनी छेदन भेदन घणी कीनी तिण पापरे उदैसुं ।

१२ कहो पुज्य इण जीवने घणी निद्रा आवे सो किण पापरे उदैसुं ?

उत्तर—पूर्व भवे दारु भांगरो नसो घणो कीनो तीव्र भावे अति मदिरा पान पीया तिण पापरे उदैसुं ।

१३ कहो पूज्य इण जीवरो शरीर निरोग नहीं रहे सो किण पापरे उदैसुं ?

उत्तर—पूर्व भवे घणा जीव मोसीया तिण पापरे उदैसुं ।

१४ कहो पूज्य आ जीव लूलो पांगलो होवै सो कीसे पापरे उदैसुं ?

उत्तर—पूर्वले भव जीवांने भागसीमें घालने कुटीया पीटीया तिण पापरे उदैसुं ।

१५ कहो पूज्य इण जीवने रोज घणो आवे सो किसे पापरे उदेसु ?

उत्तर—पूर्वले भव काची कुंपलां तोडी तिण पापरे उदेसुं।

१६ कहो पूज्य इण जीवसुं तपस्या होवै नही सो किण पापरे उदै सुं ?

उत्तर—पूर्वले भव आप तपस्या किधी नहीं अने पेलेने (दुसरेने) करताने अतराय दीनी तप जपरो मद कीनो तिण पापरे उदैसुं।

१७ कहो पूज्य इण जीवने लुगाइ बेटा घर सुहावे नही सो किण पापरे उदैसुं ?

उत्तर—पूर्वले भव दान शील तप भावना भावी नहीं तिण पापरे उदै सुं।

१८ कहो पूज्य इण जीवने सीख सीखावण वाहाली (अच्छी) लागे नही सो किण पापरे उदै सुं ?

उत्तर---पूर्व भवे आर्त्त ध्यान रुद्र ध्यान ध्यायो तिण पापरे उदै सुं ।

१९ कहो पूज्य इण जीवने भरजोवनमें दयापणो आवे नहीं सो किण पापरे उदै सुं ।

उत्तर---पूर्व भवे घणा मैला मंत्र कीना तिण पापरे उदै सुं ।

२० कहो पूज्य इण जीवने भरजोवनपणा (जवान अवस्था) में रंडापो आवे सो कोण पापरे उदय (उदै) सुं ?

उत्तर—पूर्व भवे जड़ासुं रुंख उपाड़ीया तिण पापरे उदयसुं ।

२१ कहो पूज्य इण जीवने कुटम्ब घरमें सुख देवे नहीं सो किण पापरे उदै सुं ?

उत्तर--पूर्व भवे टोगड़ा टोगड़ीने दुध छोडीयो नहीं अने अंतराय दीनी तिण पापरे उदै सुं ।

२२ कहो पूज्य आ जीव कांणो हुवो सो किसे पापरे उदै सुं ?

उत्तर—पूर्व भवे बोरकाचर फल फूल सूईसे विंधीया अने माला किनी तिण पापरे उदै सुं।

२३ कहो पूज्य, जीव आंधो हुवे सो किण पापरे उदै सुं?

उत्तर—पूर्वले भव दीसता जीव धानमें पैसे स्थावर चुद्र जीवोंको पाणीमें डबोयके मारें मच्छरको आग लगाय कर धूंवां देकर मारें तिण पापरे उदै सु।

२४ कहो पूज्य ओ जीव दुःखीयो हुयो सो किण पापरे उदै सु?

उत्तर—पूर्वले भव घणी बुराई कीनी अणदिट्ठी अणसुणी बातों कीनी तिण पापरे उदै सु।

॥ बोल कर्मविपाकरा ॥

सामान्य कर्मबंध फल कहते हैं ।

बोल प्रश्नोत्तर ।

१ प्रश्न—प्राणी निर्द्धन किस कर्मसें होवे ?

उत्तर—पराया धन हरणेसे ।

२ प्रश्न—प्राणी दरिद्री किस कर्मसें होवे ?

उत्तर—दान देतेको वर्जनेसे, दान सुपात्र ने न देणेसें दया न पालनेसे ।

३ प्रश्न—प्राणी धन तो पावे परन्तु भोग नहीं सके किस कर्मसे ?

उत्तर---दान देके पछतावनेसें ।

४ प्रश्न---प्राणी अकुली-निपूतियो (अर्थात् जिस पुरुषके पुत्र पुत्री न होय) किस कर्मसे ?

उत्तर---जो वृक्ष रस्तेके ऊपर हो जिनसें अनेक पशु और मनुष्य फल फूल खावे

और छाया करके सुख पावे ऐसे वृक्षोको कटावे तो।

५ प्रश्न—प्राणी वंध्या (स्त्री वांझडी) किस कर्मसे होवे?

उत्तर—गर्भ गलावे तथा गर्भ गलानेकी औषधि देवे तथा गर्भवती मुर्गीको (Hen) वध करे और फूलका अन्तर कढावे तो।

६ प्रश्न—प्राणी मृत वंध्या (वांझडी) किस कर्मसे होवे?

उत्तर—वेंगण आदिका भूरथो करे तथा होले करे तथा कदमूल खाय तथा मुर्गी आदिकके अडे वच्चे मार खाय और उगती वनस्पति कुंपला तोडे तो।

७ प्रश्न—प्राणी अधूरे गर्भ गल गल जावे सो किस कर्मसे?

उत्तर—पत्थर मार मारके वृक्षके कच्चे फल फूल पत्ते तोडे तथा पंखीयोके माले तोडे

तथा मकड़ीके जाले उतारे तो।

८ प्रश्न—प्राणी गर्भमेंही मर मर जाय तथा योनिद्वारमें आ के मरे किस कर्मसें ?

उत्तर—महा आरंभ जीव हिंसा करे मोटा झूठ बोले, साधुको असूझतो आहार, पानी देवे तो।

९ प्रश्न—प्राणी गूंगा किस कर्मसें होय ?

उत्तर—देवधर्मकी निंदा करे तथा निर्ग्रंथ गुरुकी निंदा करे तथा गुरुके पुठे मुंह मचकोड़ के छिद्र देखे तो।

१० प्रश्न—प्राणी बहरा किस कर्मसे होय ?

उत्तर—पराया भेद लेनेका लुक छिपके बात सुनने तथा निन्दा सुणनेका स्वभाव होय तो।

११ प्रश्न—प्राणी रोगी किस कर्मसें होय ?

उत्तर—गूलर आदि फल खाय तथा चूहे पकड़नेके पिंजरे बेचे तो।

१२ प्रश्न — प्राणी बहुत मोटी स्थूल देह पावे किस कर्मसें ?

उत्तर — शाह होके चोरी करे तथा शाहका धन चुरावे तो।

१३ प्रश्न — प्राणी कोढ़ी (कोढिया) किस कर्मसे होय ?

उत्तर — वनमें आग लगावे तथा सर्पको मारे तो।

१४ प्रश्न — प्राणीरे दाह ज्वर किस कर्मसें होय ?

उत्तर — ऊंट बैल गधे घोड़के ऊपर ज्यादा बोझ लादे तथा शीत वा गर्मीमें राखे तो।

१५ प्रश्न — प्राणी सिरसाम अर्थात् चित-भ्रम किस कर्मसे होय ?

उत्तर — ऊंची जाति व गोत्रका मान करे तथा छाने छाने अनाचार मद्यमांसादि भक्षण करके मुकरे (नटे) तो।

१६ प्रश्न – प्राणीरे स्त्री पुरुष और शिष्य कुपात्र वैरी समान किस कर्मसे होय ?

उत्तर – पिछले जन्ममे उनसे निष्कारण विरोध किया होय तो।

१७ प्रश्न – प्राणीरे पुत्र पाल्यापोसा मर जाय किस कर्मसें ?

उत्तर – धरोट मारी होय तो।

१८ प्रश्न – प्राणीके पेटमें कोइ न कोइ रोग चला रहे (होता ही रहे) किस कर्मसे ?

उत्तर – खाय पीयके बचा खुचा असार निसार भोजन साधूको देवे तो।

१९ प्रश्न – प्राणी बाल विधवा किस कर्मसे होय ?

उत्तर – अपने पतिका अपमान करके पर-पतिके साथ रमे तथा कुशीलनी होयके सती कहावे तो,

२० प्रश्न – प्राणी वेश्या किस कर्मसे होय ?

उत्तर—उत्तम कुलकी बहु बेटी विधवा हुए पीछे कुलकी लाजसे कोई अकर्त्तव्यतो न करने पावे परंतु सत्संगतके अभावसे भोगकी वांछा रखे तो।

२१ प्रश्न—प्राणीरे जो जो स्त्री व्याहे सो मरे जैसेकी पुरुषकी स्त्री न जीवे किस कर्मसे?

उत्तर—साधु कहाके स्त्री सेवे तथा त्यागी हुई वस्तुको फिर ग्रहे तथा खेतमें चरती हुइ गौ (Cow) त्रासें तो।

२२ प्रश्न—प्राणी नर्क गतिमें जाय किस कर्मसे।

उत्तर—सात कुव्यसन सेवें तो।

२३ प्रश्न-प्राणी धनाढ्य किस कर्मसे होय!

उत्तर—सुपात्रको दान देके आनंद पावे तो

२४ प्रश्न—प्राणीने मनोवांछित भोग मिले किस कर्मसें ?

उत्तर – परोपकार करे तथा बड़ेकी टहल करे तो ।

२५ प्रश्न-प्राणी रूपवान किस कर्मसे होय ?

उत्तर – तपस्या करे तो ।

२६ प्रश्न – प्राणी स्वर्गमें किस कर्मसे जाय ?

उत्तर – क्षमा दया तप संयम करे तो ।



॥ कर्म विपाक धर्म कथारा बोल ॥



शिष्य कहें--कोई जीव आंखे जलमलो देखे ते किण कारण थी होय ?

गुरू कहे---जे पूर्वे घणा कुभावथी रूप निरख्या तेना प्रतापे,

शिष्य कहे--कुबड़ो थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे एकेंद्री जीवनो चूर्ण (घात) कीधो तेना प्रतापे ॥

शिष्य कहे---खोज्यो (खोजो) होयते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्व भवे वेदगिरीका काम कीधा तेना प्रतापे,

शिष्य कहे---जसकरतां अपजस पायते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्वभवे सचीत द्रव्यादिकना ओखद् वेखद् घणा किना तेना प्रतापे,

शिष्य कहे—शरीरने विषे भगंदर रोग उपजे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे स्वहाते करी पचेंद्रि जीवोने हणीया तेना प्रतापे,

शिष्य कहे—कंठमाला रोग होय ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्वे घणा माछला मारिया तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—शरीरने विषे, पाथरी (पथरी)

रोग होय ते कीसा कर्मनें उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्व भवे मैथुन घणा सेवीया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे---हर्ष रोग होय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे धूणी घाली घणा जीवाने सताविया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—संजोगना बीजोग थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे माया कपटाई तथा मित्र कपटाई कृतघ्नता कीधी तेना प्रतापे ॥

शिष्य कहे--शरीरने विषे, खाज फटणी चाले ते कीसा करमने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्वे घणा जीव उपर क्रोध कीधो भूठ आल दीधा तेना प्रतापे ॥

शिष्य कहे--कोई जीव बोलीयो अनेराने सुहावे नही ते किसा कर्मने उदे,

गुरू कहे---जे पूर्व भव वचनकलानो अहकार कीधो तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे---आपणे अण कीधा अपजस अपकीरत वधे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्वे स्त्री हती तेवारे सासु नणंद भोजाई देराणी जेठाणीना इरषा कीधा तेना प्रतापे ॥

शिष्य कहे---पुरुषलींग छेदी स्त्रीलींग पामे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे--जे पूर्व भव सतरमो पाप स्थानक माया मोसो सेवीयो तेना प्रतापे ॥

शिष्य कहे--मन वंछित वस्तु जीव न पामे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्व भव पचेंद्री जीवना संयोगना वीयोग कीधा तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे---शरीर बलहीन पामे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव कुकड़ा ना आहार कीधा तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—कोई जीवने घणो हांसो आवे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे---जे पूर्वे भव असन्नी (असंज्ञी) पंचेंद्री जीव हणीया हणावीया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—कोई जीव साचो बोले अनेराने प्रतीत न ऊपजे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव कूड़ी साख भरी तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे – कोई जीवने माता भाई बहन भाणेज पुत्र कुटम्बनो वियोग थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव कुगरु, कुदेव सेवीयो हिंसामे धर्म परूपीयो तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे---मनुष्य अवतार पामे अने

हात पगनी आंगलीयां छेदन पांमे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव झाड रूँख आदि काटीया तेना प्रतापे।

शिष्य कहे – मीर्गी झोलो आवे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव लुहारनी धुँमण धुमाइ तेना प्रतापे।

शिष्य कहे – घणा मनुष्य सहित पाणी मांहे नाव जहाज डुबे घणा मनुष्य एकठा डुबी मरे ते किसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव पेसाव मांहे पेसाव कीधो तथा घणा दिन राखीने ढोलीयो तथा ताजखाना (पायखाना) मांहे उच्चारपासवन एकठा कीधा समुधानी कर्म कीधा तेना प्रतापे।

शिष्य कहे – मनुष्य मरी प्रथ्वीकाया मांहे

थोडे आउखे उपजे दु:खसहे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव झूठ घणा बोलिया तेना प्रतापे

शिष्य कहे – तरुणपणे दांत पड़े माथारा केस धोला थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव कवली वनस्पती हाते करी चुटी चुटावी कुटी कुटावी तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे – शरीरने विषे घणा गुमड़ा थाय भरीया नीगल होय ते कीसा करमने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे भव आखा फल चीरीने लुणसु भरीया तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे – दासपणो पांमे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे – जे पूर्वे माखण (लुणी) एकठो करी घणा दिनासु तपावीयो तेना प्रतापे ।

शिष्य कहे—नासुर रोग थाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव कसाईना कर्म कीधा तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—कोई जीव गर्भ मांहे ऊपजे पीछे जन्मतो वेला आडो आवे तेहने कापीने काढे ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव कसाईना हातसुं दान लीधा होय तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—कोई जीव गर्भ मांहे ऊपजे पछे गल तो जाय ते कीसा कर्मने उदे ?

गुरू कहे—जे पूर्वे भव साधुने कूड़ो आल दीधो, असूझतो आहार दीधो तेना प्रतापे।

शिष्य कहे—कोई स्त्रीने बारह बरसरो छेडो (छोड़) रहे ते कीसा कर्मने उदे।

गुरू कहे—जे पूर्वे भव घणा पेसाब एकठा

गुरू कहे – जे पूर्वे रोसकारी कर्कश कारी मर्मकारी भाषा बोली छानी बात प्रगट किनी घणाजीवाने दाना अंतराय दिनी तेना प्रतापे।

शिष्य कहे---कोई जीव भलीजात कुलमें जन्म पामें, पंचेन्द्रीयाना योग संयोग पुरा पडे अने अणकिधो अणजाणीयो माथे कुड़ो आल आवे पच्छी राजा पकड़ावीने चौरंगीयो करावे पछे राज सभा मांहे वाहालो लागे जे बोले ते मानीलेवे ते किसा कर्म उदे ?

गुरु कहे---जे पूर्वे घणी अनन्तीकाय, कंद, मुल कटावीया चुरण किधा तथा, गर्भ पाड़ी छानो राख्यो तथा नारकी तथा त्रियंच भव मांहे अकाम निर्जरा कीधी तेना प्रतापे ।

॥ इति कर्म कथाना बोल समाप्त ॥

रत्नावलि के दोहे।



जो जाको गुन जानही, सो तिहि आदर देत।
कोकिल अम्बहि लेत है, काग निबोली लेत ॥
विद्या धन उद्यम विना, कहो जु पावे कौन।
विना डुलाये ना मिलै, ज्यों पखे की पौन ॥
ओछे नर की प्रीति की, दीन्ही रीति वताय।
जैसे छीलर ताल जल, घटत घटत घटि जाय ॥
रहे समीप बडेन के, होत बड़ो हित मेल।
सब ही जानत वढत है, वृक्ष वराबर बेल ॥
मधुर वचन से मिटत है, उत्तम जनअभिमान।
तनक शीत जल से मिटै, जैसे दूध उफान ॥
समय समुझि जो कीजिये, काम वही अभिराम।
सिन्धव मांग्यो जीमते, घोडे को कह काम ॥
स्वारथ के सबही सगे, विन स्वारथ कोई नाहिँ।
सेवै पंछी सरस तरु, निरस भये उड़ि जाहिँ ॥
पर घर कबहु न जाइये, गये घटत है जोत।

अम्बर डम्बर सांझ के, ज्यों बालू की भीत ॥
आपहि कहा बखानिये, भली बुरी के जोग ।
बूंठे घन की बात को, कहें बटाऊ लोग ॥
जो कहिये सो कीजिये, पहिले करि निरधार ।
पानी पी घर पूछनो, नाहिन भलो विचार ॥
पीछे कारज कीजिये, पहिले यतन विचार ।
बड़े कहत है बांधिये, पानी पहिले वार ॥
भले वंश सन्तति भली, कबहूँ नीच न होय ।
ज्यों कञ्चन की खान में, कॉच न उपजै कोय ॥
शूर वीर के वंश में, शूर वीर सुत होय ।
ज्यों सिंहिनि के गर्भ में, हिरन न उपजै कोय ॥
हीन जानि न विरोधिये, वही होत दुखदाय ।
रज हू ठोकर मारिये, चढ़ै सीस पर आय ॥
दोष लगावत गुनिन को, जाको हृदय मलीन ।
धर्मी को दम्भी कहै, क्षमाशील बलहीन ॥
खाय न खरचै सूम धन, चोर सबै लै जाय ।
पीछे ज्यों मधुमक्षिका, हाथ घिसै पछिताय ॥

उत्तम विद्या लीजिये, जदपि नीच पै होय।
पड्यो अपावन ठौर में, कञ्चन तजत न कोय॥
धन अरु यौवन को गरव, कवहूँ करियै नांहि।
देखत ही मिट जात है, ज्यों वादर की छांहि॥
बड़े बड़े को विपति में, निश्चय लेत उवार।
ज्यों हाथी को कीच से, हाथी लेत निकार॥
सेवक सोई जानिये, रहें विपति में संग।
तन छाया ज्यों धूप में, रहे साथ इकरंग॥
वहुत द्रव्य संचय जहां, चोर राजभय होय।
कांसे ऊपर वीजुली, परत कहत सव कोय॥
ओछे नर के पेट में, रहै न मोटी वात।
आधसेर के पात्र में, कैसे सेर समात॥
काहू को हँसियै नहीं, हँसी कलह को मूल।
हांसि हँसे दोऊ भये, कौरव पाण्डु निमूल॥
प्रापति के दिन होत है, प्रापति वारंवार।
लाभ होत व्यापार में, आमन्त्रण अधिकार॥
अप्रापति के दिनन में, खर्च होत अविचार।

घर आवत हैं पाहुने, वणिज न लाभ लिगार ॥
कहैं वचन पलटैं नहीं, जे सतपुरुष सधीर ।
कहत सवै हरिचन्द्र नृप, भर्यो नीच घर नीर ॥
प्यारी अनप्यारी लगै, समय पाय सब बात ।
धूप सुहावत शीत में, ग्रीषम नाहिं सुहात ॥
जूवा खेले होत है, सुख सम्पति को नास ।
राजकाज नल तें छुट्यो, पाण्डव किय वनवास ॥
देखा देखी करत सब, नांहिन तत्वविचार ।
याको यह उनमान है, भेड़ चाल संसार ॥
एक एक अक्षर पढ़े, जानै ग्रन्थ विचार ।
पैंड पैंड हू चलत जो, पहुँचै कोस हजार ॥
वह सम्पति किहि काम की, जनि काहू के होय ।
जाहि कमावै कष्ट करि, विलसै औरहि कोय ॥
विन कपास कपड़ो नहीं, दया बिना नहिं धर्म ।
पाप नही हिंसा विना, बूझो एहिज मर्म ॥
धन वंछै इक अधम नर, उत्तम वंछै मान ।
ते थानक सहु छंडिये, जिँह लहिये अपमान ॥

मेरा मेरा क्या करै, तेरा है नहि कोय।
चिदानन्द परिवार का, मेला है दिन दोय॥
धर्म बधाये धन बधे, धन बध मन बधि जात।
मन बध सवही बधत है,बधत बधत बधि जात॥
धर्म घटाये धन घटे, धन घट मन घटि जात।
मन घट सब ही घटत है,
घटत घटत घटि जात॥
यह जोबन थिर ना रहै, दिन दिन छीजत जात।
चार दिन की चांदनी, फेर अँधेरी रात॥
क्रोधी लोभी कृपण नर, मानी अरु मदअन्ध।
चोर जुवारी चुगुल नर, आठो दोखत अन्ध॥
शील रतन सब से बडो, सब रतनन की खान
तीन लोक की सम्पदा, रही शील मे आन॥
ओछी संगति स्वान की, दोनूं बाते दुक्ख।
रूठो पकड़े पांव कूँ, तूठो चाटै मुक्ख॥
सतजन मन में ना धरें. दुरजन जन के बोल
पथरा मारत आम को, तउ फल देत अमोल॥

शुभतिय से संसार सुख,सुगति सुगुरु से जाण ।
शुचि मन्त्री से राज नित,सुधरै सदा सुजाण ॥
प्रायः पर की भूल को, देखे सब संसार ।
पण न विचारे निजतणी,होय जु भूल हजार ॥
गुण विन रूप न काम को, जिम रोईड़ा फूल ।
दीसंता रलियामणां, पण नहिं पामे मूल ॥
सुख पीछे दुख आत है, दुख पीछे सुख आत
आवत जावत अनुक्रमे, ज्यूं जग में दिनरात ॥
दुष्ट व्यसन दुखद सदा, कदी न करवो संग ।
धन जीवन यश धर्म नो, तुरत करे छे भंग ॥
जो मति पीछे ऊपजै, सो मति पहिले होय ।
काज न बिगड़े आपनो, जग में हॅसे न कोय ॥



॥ बोल ॥

प्रश्न—पापरो बाप कांई, उत्तर लाभ,
,, पापरी माता कांई, ,, हींसा,
,, पापरो भाई कांई, ,, क्रोध,
,, पापरी बहन कांई, ,, माया (कपटाई),
,, पापरो बेटो कांई, ,, मान,
,, पापरी स्त्री कांई, ,, कुमति

॥ दोहा ॥

राजा रानी छत्र पती,
हाथिनके असवार ।
मरना सबको एक दिन,
अपनी अपनी वार ॥
दल बल देई देवता,
मात पिता परिवार ।

मरती विरियां जीवको,
कोई न राखन हार ॥
दान विना निर्धन दुःखी,
तृष्णा वश धनवान ।
कहुं न सुख संसारमे,
सब जग देख्यो छान ॥
आलस नींद कृशाणने खोवे,
चोरने खोवे खासी ।
आनो व्याज वोरेने खोवे,
त्रियाने खोवे हांसी ॥

॥ कविता ॥

सङ्गसे पुष्प को चन्द्र मिले,
अरु संगसे लोहा स्वर्ण कहावे ।
सङ्गसे पण्डित मूर्ख बने,
अरु सङ्गसे शूद्र अमरपद पावे ॥

सङ्गसे काठके लोहतरे,
तनको सत सङ्ग ही पार लगावे।
सङ्गसे सन्तको स्वर्ग मिले,
अरु सङ्ग कुसङ्गसे नरकमें जावे॥



॥ अथ श्रावकजीरा २१ गुण ॥



१ पहले गुणे श्रावकजी धर्म करणीरे नव तत्व पचीस क्रियारा जाणकार हुवे।

२ दूजे गुणे श्रावकजी धर्म करणीरे बीपे कोईको भी साहाय्य वंछे नहीं।

३ तीजे गुणे श्रावकजी देवता मनुष्य तीर्यंचरा उपसर्ग आयासु धर्म थकी डीगे नहीं।

४ चौथे गुणे श्रावकजी अनतिर्थी मिथ्यात्वीरी सोबत करे नहीं और अनतीर्थीरो कष्ट

देखने उणरा गुणग्राम करे नहीं अनतीर्थीरी प्रशंसा करे नही ।

५ पांचमे गुणे श्रावकजी लधी अठा गरही अठा पुछीअठा वीनछी अठा भणीया गुणीया ज्ञानको वार वार नीरणो करे आलस प्रमाद करे नहीं ।

६ छठे गुणे श्रावकजीरो हृदय धर्ममें रंगायमान जीण तरह तीलमांहे तेल दुधमांहे घृत पाषाणमांहे धातु लोलीभूत हुवे जीणतरह श्रावकजीरी हाडने हाडरी मीजी धर्ममें रंगायमान हुवे

७ सातमें गुणे श्रावकजी कुटम्ब परिवार पंचायतीमे वैठे जठे यही वात कहे के श्री वीतराग केवली भगवानरो धर्म सार है, नित्य है, सुखकारी पदार्थ है, वाकी सर्व संसार देह भोग असार है अनित्य है, दुःख सहित है, आगामी भी दुःखरो कारण है ।

८ आठमेगुणे श्रावकजी रो हृदय

फटीक रतनजीसो निर्मल हुवे कूड कपट केलवे नहीं दगा ठगा करे नहीं।

९ नवमे गुणे घरराबारणा खुला राखे दान देवणमे कृपण मूंजी कंजूस नहीं हुवे चित्त उदार होवे।

१० दशमे गुणे महीनेमें ६ (छव) पोसा करे।

११ इगारहमे गुणे श्रावकजी अन्तेवरमें राजारे भंडारमें तथा सेठरी दुकानमें सेठरी हवेलीमें जावे जठे प्रतीत कारीया हुवे जठे अप्रतीत हुवे उठे पाउंडो भी देवे नही।

१२ बारमें गुणे श्रावकजी लीधा व्रत पंचखाण नीधानरी परे जापतासुं पाले (राखे) दोष अतिचार लगावे नहीं।

१३ तेरमे गुणे श्रावकजी मुनीराजने उलट (चढ़ते) भावसुं उदार चित्तसुं दान देवै मूंजी पणो राखे नही कंजूस पणो राखे नहीं उदार चित्त राखे।

१४ चौदहमे बोले श्रावकजी तीन मनोरथ नित्य प्रति चिंतवे ॥

॥ संक्षेपमे तीन मनोरथ ॥

॥ दोहा ॥

आरंभ परिग्रह तजी करी, पंच महाव्रत धार ।
अंतसमय आलोयणा, करू संथारो सार ॥१॥
तीन मनोर्थ ए कह्या, जो ध्यावे नीत्य मन्न ।
शक्ति सार वरते सही, पावे शिव सुख धन्न ॥२॥

१५ पनरमे गुणे श्रावकजी नित्य नित्य प्रत्ये नवो वीतराग केवली भगवानरो प्रकाशियो ज्ञान ध्यान सीखे आलस करे नहीं ।

१६ सोलहमे गुणे श्रावकजी आलस छोड़ने जो कोई पुरुष नवो धर्म पायो हुवे जीणने ज्ञान ध्यान नीर्जरा अर्थे सिखावे तन मन वचन आदि समस्त प्रकारे धर्मरो साहाय्य देवे ।

१७ सतरमें गुणे श्रावकजी धर्म रो उपदेश देवे, चार तीर्थ रा गुण ग्राम बोले।

१८ अठारमे गुणे श्रावकजी छती शक्ति तपस्या करे गोपवे नहीं।

१६ उगनीसमें गुणे श्रावकजी दो वखत कालो काल प्रतिक्रमण करे।

२० वीसमे गुणे श्रावकजी कोईसुं खारा बोले नही क्षणमात्र कोईसु भी वैर राखे नही।

२१ इकवीसमे गुणे श्रावकजी रे सम्यक्तमे गुणवरतामे कोई भी अतिक्रमादिक दोप लागे जीणरो तुरत तुरत आलोवणा करे अने शुद्ध होवे अन्त समय आया फेरु आलोवणा नीन्दणाकर ने पण्डित मरण करे आराधक हुवे।

इति श्रावकजीरा २१ गुणमे जो जिन
वचनासु अधिको ओछो वीपरीत
लिख्यो हुवे तीणरो मिच्छामी
दुकडं।

॥ अथ पुनः प्रकार अन्तरसु ॥

॥ श्रावकजीरा २१ गुणारा कवीत सवैया ॥



लज्जावन्त, दयावन्त, प्रशांत, प्रतीतवन्त, पर दोषके ढकैया परउपकारी है। सोम दृष्टि गुणग्राही गरीष्ठ सबीके इष्ट श्रेष्ठ पक्षी मिष्ट-वादी दीर्घ विचारी है॥ विशेषज्ञ रसज्ञ कृ-तज्ञ धर्मज्ञ न दीन नहीं अभिमानी मध्य व्यव-हारी है। ऐसे वीनित पाप क्रियासु अनित पुनीत ऐसे श्रावक इकवीस गुणधारी है॥१॥



॥ श्लोक ॥

धन्या भारतवर्ष सभव जनाः
येऽद्यापि काले कलौ,
निस्तीर्थेश निःकेवले निरवधौ
नश्यन्मनः पर्यवे ।
नोद्यत्सूत्र विशेष संपदि भव
दौर्गत्य दुःखापदि,
श्री जैनेंद्र वचोनुराग वशतः
कुर्वंति धर्मोद्यमं ॥

॥ स्वकुलप्रकाश ॥

धर्मचन्दजी तत्पुत्र प्रतापचन्द अगरचन्द भैरोदान हजारीमल चिरू जेठमल पानमल लहरचन्द उदेकरण जुगराज गैनपाल चिरञ्जीव कुनणमल सेठीया ॥ श्रीकल्याणमस्तु ॥

॥ श्री ॥

॥ दोहा ॥



बोल संग्रह नाम है, कीना भवि उपकार ।
गुरु मुखसे धारजो, द्वितीय भाग सुजाण ॥
गुरु समीपे जायके, लीजो अर्थ विचार ।
भणी गुणीने सिखजो, सूत्र सिद्धान्त अनुसार ॥
भैरोदान अर्ज करे, मत कीजो कोई तांण ।
सूत्र अर्थ जाणु नहीं, जिन आज्ञा परमाण ॥
बहु ग्रंथे संचै कीयो, अल्प बुद्धि अनुसार ।
भूल चूक दृष्टि पड़े, लीजो सज्जन सुधार ॥
निवासी बीकानेर का, जैन श्वेताम्बर जाण ।
ओस वंशमें सेठिया, श्रावक भैरोदान ॥
शत उनिस गुणआशि शुक्ल पक्ष बैशाख मास ।
कलकत्ते मांहे छपा, सबहुके हित काज ॥

॥ पथ्यापथ्यका विचार ॥



पथ्यापथ्यके विषयमे इस चौपाईको सदा ध्यान में रखना चाहिये—

चैते गुड़ वैशाखे तेल। जेठे पन्थ अषाढ़े वेल॥
सावन दूध न भादौं सही।
क्वार करेला न कातिक दही॥
अगहन जीरो पूसे धना।
माहे मिश्री फागुन चना॥
जो यह बारह देय बचाय।
ता घर वैद्य कब हुँ न जाये॥ १ ॥



महा भारत ग्रन्थमे लिखा है कि—

मद्यमांसाशनं रात्रौ, भोजनं कन्दभक्षणम्॥
ये कुर्वन्ति वृथा तेषां, तीर्थयात्रा जपस्तप. ॥ १ ॥

अर्थात् जो पुरुष मद्य पीते है, मांस खाते

हैं, रात्रिमें भोजन करते हैं और कंद को खाते हैं उन की तीर्थयात्रा, जप और तप सब वृथा है ॥ १ ॥

मार्कण्डेयपुराण का वचन है कि—

अस्तगते दिवानाथे, आपो रुधिरमुच्यते ॥
अन्नं मांससमं प्रोक्तं, मार्कण्डेयमहर्षिणा ॥१॥

अर्थात् दिवानाथ (सूर्य) के अस्त होने के पीछे जल रुधिर के सामान और अन्न मांस के समन कहा है, यह वचन मार्कण्डेय ऋषि का है ॥ १ ॥

इसी प्रकार महाभारत ग्रन्थमें पुनः कहा गया है कि—

चत्वारि नरकद्वार, प्रथमं रात्रिभोजनम् ॥
परस्त्री गमनं चैव, सन्धानानन्तकायकम् ॥ १ ॥
ये रात्रौ सर्वदाहार,वर्जयन्ति सुमेधसः ॥
तेषां पक्षोपवासस्य, फलं मासेन जायते ॥ २ ॥

नोदकमपि पातव्यं, रात्रावत्र युधिष्ठिर ॥
तपस्विनां विशेषेण, गृहिणां ज्ञानसम्पदाम् ॥३॥

अर्थात्—चार कार्य नरक के द्वार रूप हैं प्रथम-रात्रि में भोजन करना, दूसरा-पर-स्त्री में गमन करना, तीसरा संधाना (आचार) खाना और चौथा-अनन्त काय अर्थात् अनन्त जीव-वाले कन्द मूल आदि वस्तुओं को खाना ॥१॥

जो बुद्धिमान् पुरुष एक महीनेतक निरन्तर रात्रिभोजनका त्याग करते हैं उनको एक पक्ष के उपवासका फल प्राप्त होता है ॥२॥

इस लिये हे युधिष्ठिर ! ज्ञानी गृहस्थको और विशेष कर तपस्वी को रात्रि मे पानी भी नहीं पीना चाहिये ॥ ३ ॥

इसी प्रकारसे सब शास्त्रोंमे रात्रिभोजनका निषेध किया है परन्तु ग्रन्थके विस्तारके भयसे अब विशेष प्रमाणोको नहीं लिखते हैं, इस लिये बुद्धिमानोको उचित है कि—सब प्रकारके

खाने पीनेके पदार्थों का कभी भी रात्रिमें उपयोग न करें यदि कभी वैद्य कठिन रोगादि में भी कोई दवा या खुराकको रात्रिमें उपयोग के लिये बतलावे तो भी यथा शक्य उसे रात्रिमें नहीं लेना चाहिये किन्तु सूर्य्य अस्त होनेके पहले ही ले लेना चाहिये, क्योंकि धन्य पुरुष वे ही हैं जो कि सूर्यकी साक्षीसे ही खान पान करके अपने व्रत का निर्वाह करते हैं ।



॥ चेत्य, चेइ शब्दके १०८ नाम ॥



चेत्यप्रसाद विज्ञेय १ चेत्यहरिरुच्यते २ चेत्य चेतनानामस्यात् ३ चेइसुधास्मृता ४ चेतंज्ञानं समाख्यातं ५ चेइ मानस्यमानवं ६ चेत्य-यतिरुत्तमस्यात् ७ चेइभग्रउच्यते ८ चेत्यंजीव-मवाप्नोति ९ चेइ भोगस्य रंभन १० चेत्यभोग निर्वृतस्य ११ चेइ विनतनीचयो १२ चेत्य पूर्णिमाचन्द्र १३ चेइ गृहस्यारंभन १४ चेत्य गृहमवाछाई १५ चेइ गृहस्यछादनं १६ चेत्य गृहस्थभंचापि १७ चेइच वनस्पती १८ चेत्य पर्वतेवृक्ष १९ चेइ वृक्षस्थूलयो २० चेत्य वृक्ष-सारश्च २१ चेइ चतुःकोणस्तथा २२ चेत्य विज्ञान पुरुषो २३ चेइ देहस्यउच्यते २४ चेत्य गुणज्ञोज्ञेय २५ चेइच शिवशासनं २६ चेत्य मस्तकंपूर्णं २७ चेइ अंगहीनयो २८ चेत्य अश्वामवाप्नोति २९ चेइ खर उच्यते ३० चेत्य

हस्तीविज्ञेय ३१ चेइ दूमुखीविंदूं ३२ चेइच्च शिवापुनः ३४ चेत्यंरंभानामोक्तं ३५ चेइ मृदंगंपुनः ३६ चेत्य सादूंल नामस्यात् ३७ चेइच इंद्रवारणी ३८ चेत्य पुरंदर ३९ चेइ चेतनस्मृत ४० चेइ उग्रराज ४१ चेइ शास्त्र-धारणा ४२ चेत्य क्लेशहारीच ४३ चेइ गंधर्वाप्रिय ४४ चेत्य तपस्वीनारी ४५ चेइ पात्रस्यनिर्णय ४६ चेत्य शुकनादिवार्त्ता ४७ चेइ कुमारिकाविंदू ४८ चेत्य वक्तारागस्य ४९ चेइ धातुरकुठितं ५० चेइ शांतवाणीच ५१ चेइ वृद्धावरांगणा ५२ चेत्य ब्रह्मांडमाणं ५३ चेइ मयूरप्रोच्यते ५४ चेत्य मंगलवार्त्ता च ५५ चेइ काकणीपुनः ५६ चेत्य पुत्रवतीनारी ५७ चेइ च मीनमेवच्च ५८ चेत्य नरेन्द्र नारी च ५९ चेइ च मृगवांनरें ६० चेत्य गुणवंती नारी ६१ चेइ च स्मरमन्दिर ६२ चेत्य वर कन्या नारी ६३ चेइच्च तरुणीस्तनो ६४ चेत्य सुवर्णवर्णः नरः

६५ चेइच मुकुट सागर ६६ चेत्य सुवर्ण वर्णः जटि ६७ चेइच अन्य धातुपु ६८ चेत्य चक्रवर्ती राजा ६९ चेइच तस्यस्त्रिय ७० चेत्य व्याख्यात पुरुष ७१ चेइ पुष्पवती स्त्रिय ७२ चेइ राज-मन्दिर ७३ चेत्यवराह मृगश्च ७४ चेइचयति धूर्तयो ७५ चेत्य गरुड़पक्षी च ७६ चेइच पन्न-नागणी ७७ चेत्य रक्त नेत्रस्य ७८ चेइ हीन चक्षुषि ७९ चेत्य योवन पुरुषश्च ८० चेत्य वासुकी नागं ८१ चेइ पुष्प प्रोच्यते ८२ चेत्य भाव सुधस्यात् ८३ चेइ चन्द्र कंटिका ८४ चेत्य-द्रव्यमवाप्नोति ८५ चेइ प्रतिमास्तथा ८६ चेत्य सुभटयोर्श्च ८७ चेइ द्विविधा क्षुधा ८८ चेत्य पुरुषोत्तन्द्रश्च ८९ चेइच हारमेवच ९० चेत्य नरेन्द्राभर्ण ९१ चेइ जटाजूटधारक ९२ चेत्य धर्मवार्ताच ९३ चेइ त्रिकथापुनः ९४ चेइ चक्रवर्ती सूर्य्य ९५ चेइच श्रद्धाभ्रष्टा ९६ चेत्य राज्ञी सजनस्थानं ९७ चेइ रामस्य गर्भता ९८

चेत्य शुभवार्ताच ९९ चेइ इन्द्रजालकं १०
चेत्यत्यासनं प्रोक्तं १०१ चेइ पापमेवच १०
चेइ रविरूदयकालं १०३ चेत्यंच रजनीपुन १०
चेत्यंचन्द्र द्वितीयास्यात् १०५ चेइ लोकपालवं
१०६ चेत्यं रत्न अमोलक्यं १०७ चेइच अनौष
धिपुनः १०८ एवं सर्व चेतनानाम १०८ छे।

इति श्री अलंकरणोंदीर्घः ब्रह्माण्डे चेत्य
चेइ शब्द सूरेश्वर वार्तिक वेदान्त प्रोक्तः ।



ॐ

शान्तिः ! शान्तिः !! शान्ति. !!!

सेवंभंते सेवंभंते गौतम बोले सही, श्री महावीरके वचनमे कुछ सन्देह नही। जैसा लिखा हुआ देख्या, वांच्या या सुण्या वैसा ही अल्प बुद्धिके अनुसार लिखा है, तत्व केवली गम्य अक्षर, पद, ह्रस्व, दीर्घ, कानो, मात, मिंडी, ओछो अधिको, आगो पाछो, अशुद्ध पणे लिख्यो होय अथवा कोई तरहकी छपानेमें ज्ञानादिक की विराधना कीनी होय, जाणते अजाणते कोई दोष लाग्यो होय तो सकल श्री संघके साखसें मन वचन काया करी मिच्छामि दुक्कडं।

❀ इति छतीसबोल समह द्वितीय भाग समाप्तम् ❀



पत्र व्यवहार नीचे लिखे हुये पतेसे करें और पता नागरी व अंग्रेजीमें साफ हरफोंमें पूरा लिखें।

पुस्तक मिलनेका पता—

बीकानेर

श्री जैन भाइयोंकी विद्यालय,

मोहल्ला—मरोटियोका

पाठशाला अगरचन्द भैरोंदान सेठियाकी कोटड़ीमें

बीकानेर राजपुताना।

(जोधपुर-बीकानेर रेलवे)



The Jain National Seminary

SCHOOL

SETHIA BUILDINGS

MOHALLA MAROTIAN

Bikaner Rajputana (J. B. Ry)